रचनात्मक आन्दोलन पर बतकही

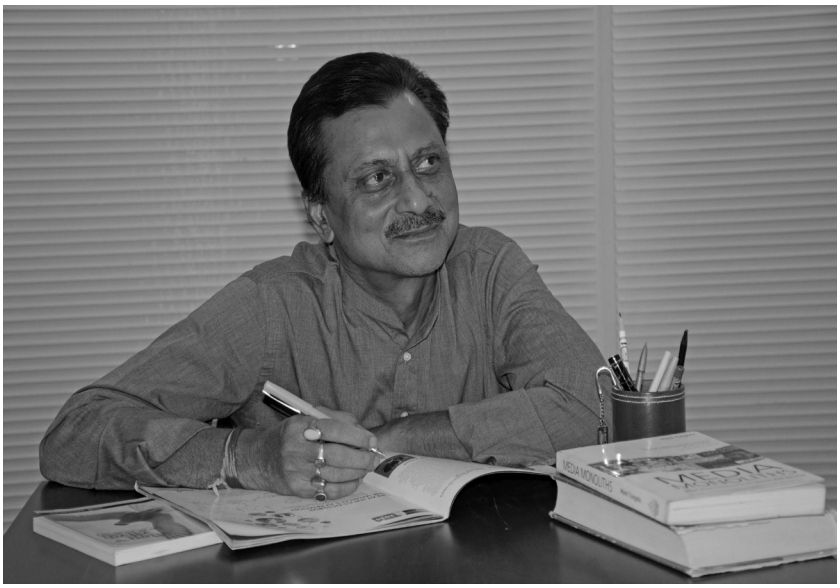

सोशल मीडिया का एह जमाना में वाट्स ऐप,फेसबुक पर, नोकरी-पेशा आ स्वरोजगार में लागल, पढ़ल - लिखल लोग अभिव्यक्ति के माध्यम का रूप में मातृभाषा के अपनवले बा। ऊ झिझक, ऊ संकोच हट गइल बा जवन भाषाई -इन्फिरियरिटी का कारन बनल लागत रहे। मध्यवर्गी, निम्न मध्यवर्गी परिवार से आइल इन्जीनियर, डाक्टर,वकील, अध्यापक लोग का सँगे नवही पढ़निहार ग्रुप का एह मातृभाषा प्रेम में बहुत कुछ रचनात्मक आन्दोलन के भाव छिपल बा। धड़ल्ले से विचार राखत, पसन्द - नापसन्दगी प्रकट करत एह नवहा ग्रुप में मातृभाषाई आत्मीयता आ स्वाभिमान झलक रहल बा। हालाँकि फेसबुक पर रखात अधिकांश बात- विचार से हमा- सुमा क सहमति जरूरी नइखे, महत्व बस एतने के बा कि लोग संवाद का लिखन्त - पढ़न्त माध्यम का रूप में कहत- सुनत - सीखत लउकत बा। एह अस्मिताधर्मी उद् गार, उछाह वाला लिखन्त में, भाषा-वर्तनी के गल्तियन के नजरन्दाज कइल एसे जरूरी बा,काहेंकि ईहो एक तरह के भाषाइये आन्दोलन बा!

भोजपुरी के आपन विशाल शब्द -भण्डार बा। जीवन -जगत का सार्थक क्रियात्मक अभिव्यक्ति खातिर ओकर आपन भाषाई खासियत, भोजपुरी के खास बनावेले। एह लोकभाषा के आपन वाचिक लोकसाहित्य बा, लोककला आ लोकरंग बा। आज सोशल मीडिया का भाषाई आन्दोलन के,भोजपुरी का रचनात्मक आन्दोलन से जोड़ला क जरूरत बा। आजादी का आन्दोलन में राष्ट्रीय एका खातिर, एक भाषा का रूप में हिन्दियो के रचनात्मक आन्दोलन चलल रहे, जवन आगा चल के हिन्दी साहित्य खातिर बहुत उपयोगी साबित भइल। तब खड़ीबोली से उपजल हिन्दी के बनाव -बिनाव आ विकास में, देश के हर भाषा के सहजोग मिलल। हिन्दी पट्टी कहाये वाला प्रदेश-प्रान्तन में आपन आपन भाषा-क्षेत्र आ समाज रहे। अवधी, ब्रजी, भोजपुरी, बुन्देलखण्डी, राजस्थानी, मैथिली,मगही, छत्तीसगढ़ी जइसन कतने बोली भाषा रहली सन। सबका समावेश आ पानी से हिन्दी सजल - धजल। उर्दू होखे भा बंगाली, मराठी, गुजराती सब अपना ढंग आ अपना भाषाई संस्कार से हिन्दी के सँवारल। देश आ ओकरा आन बान शान खातिर सबकुछ समर्पित करे में भोजपुरिया हमेशा से आगा रहल बाड़न। एही से राष्ट्रभाषा आन्दोलन का समय ओ लोगन के अपना मातृभाषा के सुधि ना रहल। बाकिर अतना सब कुछ कइला आ आजादी मिलला का बादो, हिन्दी राष्ट्रभाषा ना बन सकल, अंगरेजी ओकर पोंछ मड़ोरत रहे। तब्बो ले-देके राजभाषा बन गइल । सब जानत बा कि राजसत्ता आ नौकरशाही का सँगे देश के इलीट वर्ग के अंगरेजियत केतना कस के चँपले रहे। ई अंग्रेजी, हिन्दी का आगा खड़ा होके, लोकसत्ता आ ओकरा भाषा सब के चँपलस तवन चँपबे कइलस अउर बहुत कुछ नोकसान कइलस। देश के कवनो साँस्कृतिक भाषा के, अभिव्यक्ति का स्वतंत्रता का लिहाज से, बढ़े आ पनपे के

मौलिक अधिकार रहे, जवना पर अंग्रेजी-हिन्दी का पक्षधरन के ध्यान ना गइल। लिखन्त-पढ़न्त वाला रचनात्मक रूप में भोजपुरी कबीर आ गोरखनाथ क भाषा भलहीं कहल सुनल गइल, हिन्दी का इतिहास में तेग अली आ हीरा डोम जइसन रचनिहारो ढुँढ़ाइल, रघुबीर बाबू आ मनोरंजन प्रसाद जी के नाँवों धराइल बाकिर भोजपुरी में, भोजपुरी के रचनात्मकता, आन्दोलन के रूप, आजादी का कुछ समय बादे पकड़लस। लेखन में गति पकड़लस ऊ पछिला पाँच दशकन में। शुरू शुरू में छिटफुट पत्रिको निकललीं सन, भोजपुरी खातिर संस्थो बनली सऽ। लोग ओसे जुड़ के भाषाई रचनात्मक आन्दोलन के स्पीड बढ़ावल। दरअसल मंच आ अभिव्यक्ति के अवसर जुटावल आ लोगन के अपना भाषा में साहित्य रचना के प्रोत्साहनो दिहल माने राखेला।

कुछ प्रतिनिधि पत्र पत्रिका-जइसे भोजपुरी,भोजपुरी कहानियाँ(बनारस), अँजोर, उरेह, साहित्य सम्मेलन पत्रिका, भोजपुरी अकादमी पत्रिका (पटना), पाती (बलिया), भोजपुरी लोक (लखनऊ),समकालीन भोजपुरी साहित्य (देवरिया), भोजपुरी माटी (कोलकाता) आदि अपना बल बेंवत भर भोजपुरी लेखन के ललक जगवली सन आ स्तरीय लेखन खातिर प्रोत्साहित कइली सन।

भोजपुरी का नियति के सबले बड़का विडंबना रहे जनगणना में भोजपुरियन के मातृभाषा ''हिन्दी'' लिखवावल। याने लोगन का मातृभाषा वाला कालम में, भोजपुरी का बजाय हिन्दी लिखल आ लिखवावल। आज जबकि भोजपुरी भाषा के एगो सुगढ़, सुघ्घर साहित्य-भंडार तइयार हो चुकल बा आ ऊ आठवीं अनुसूची में शामिल भइला खातिर छटपटातो बिया, त कुछ लोगन क एगो छटंकी ग्रुप एगो नये वाद-विवाद के जनम दे दिहले बा। कुछ महान आत्मा अइसनो लोग बा, जे बिना पढ़ले जनले, भोजपुरी साहित्य में कविता का बढ़ियइला से चिन्तित बा। ओ लोगन के किसिम किसिम के अन्तर्विरोध आ चिन्ता भोजपुरिहन के माथा गरम करे में कवनो कसर नइखे छोड़त। एह लोगन के ई लागत बा कि भोजपुरी भाषा साहित्य पछोरल पइया हवे! ई कि अगर एके मान्यता दिहल जाई, त हिन्दी के नइया डूबि जाई! जइसे हमनी अस भोजपुरियन का भीतर हिन्दी से प्रेम हइये नइखे ...मय ठीका उहे लोग लेले बा हिन्दी के। अइसनका लोग के हिन्दी प्रेम पर हम सवाल नइखीं उठावत, बाकि ओहू लोग के हमनी का हिन्दी प्रेम पर अँगुरी ना नु उठावे के चाहीं। हमनी का मातृभाषा का स्वीकार्यता पर, बेमतलबे कुराग अलापि के ऊ लोग कवनो भाषा भाषी के मिले वाला नैसर्गिक न्याय के गला घोंटत बा। स्वतंत्र भारत में, जवना भाषा के बोले वालन क संख्या बीसन करोड़ होखे, ओह भाषा के मान्यता के विरोध के मतलब साइत ओह लोगन के नइखे बुझात। एही क्रिया का प्रतिक्रिया में भोजपुरिहन में आक्रोश बढ़ल जाता ।

होखे के त ई चाहीं कि देश के हर संपन्न भाषा के, जवना के आपन समृद्ध रचनात्मक साहित्य बा आ ओकरा बोलवइयन क संख्या करोड़ो में बा, ओकरा लोकतांत्रिक अधिकार के सम्मानपूर्वक स्वीकार कइल जाव । ओके प्रोत्साहन आ मान्यता से वंचित कइला क मतलब असन्तोष बढ़ावल!

भोजपुरी के रचनात्मक आन्दोलन विषय पर चर्चा परिचर्चा, बात-बतकही का दौरान हमरा ई समझ में आइल कि कवनो भाषा के रचनात्मक आन्दोलन अन्ततः ओह भाषा के समृद्धि आ महत्व के दरसावेला, ओकरा सृजनात्मता के गति देला। भोजपुरी के, दोसरा कवनो भाषा से कवनो तरह के विरोध नइखे। होखहूँ के ना चाहीं। देश आ देश का बाहर के जतना भाषा सीखे जाने के अवसर मिले, सीखे आ ओकरा साहित्य के सरधा सम्मान से पढ़े के चाहीं, बाकि भुलाइयो के अपना मातृभाषा के व्यवहार छोड़े के ना चाहीं। अगर हमनी अपना भाषा के कुछ देहल चाहत बानी जा, त दोसरा भाषा से लेहल सीखे के परी। सब समझत बूझत बा कि ''विविधता में एकता'' माने जाने आ ओकरा के स्थापित करे वाला ई देश, 'भाषाई - वर्चस्व' वाला अँगरेजी फार्मूला के कबो स्वीकार ना करी। भोजपुरी अपना बोले वाला आ लिखे पढ़े वाला का कारन आगा बढ़त रही। केहू जानो भा मत जानो, मानो भा मत मानो बाकिर साँच आखिर साँच होला आ ओकर आँच तनी तिक्खर होला ! ••

अशोक द्विवेदी

भोजपुरी रचनात्मक आन्दोलन के माने–मतलब

(विश्व भोजपुरी सम्मेलन के बलिया इकाई के नौवाँ अधिवेशन आ 'पाती' पत्रिका के 'अक्षर-सम्मान' समारोह के अवसर पर आयोजित विचार-गोष्ठी 'भोजपुरी रचनात्मक आन्दोलन के वर्तमान स्थिति' में व्यक्त विचार पर आधारित)

डा0 प्रकाश उदय

केहू दिवंगत हो जाला त आमतौर पर कहल जाला कि भगवान उनुका आत्मा के शांति देसु। हमार एगो कवि–मित्र कहेले कि बाकी लोग के त पता ना, बाकिर कवनो रचनाकार खातिर अइसन बात ना कहे के चाहीं। शान्त आत्मा से कवनो रचना त हो ना पाई आ ना हो पाई त बेचारा दुबारा मर जाई। कहे के अतने बा कि रचना अपना आपे में एगो उदबेग ह, आन्दोलन ह, कुछ उदबेगेला त ऊ आवेला आ आवेला त उदबेगेला। रचनात्मकता, चाहीं त कह लीं, कि आन्दोलित भइले–कइला के एगो आउर नाँव ह। चाहीं त रउरा गोरखनाथ से ले के गोरख पाण्डे तक आ आजतक भोजपुरी इलाका में रचनात्मक आन्दोलनन के जवन अनवरत सिलसिला रहल बा, तवनो प एह बहाने बतिया सकेलीं।

बाकिर, इहाँ भोजपुरी के रचनात्मक आन्दोलन के जवन जिकिर बा तवन ओकरा से कुछ हट–बढ़ के बा। साहित्य के दुनिया में प्रवृत्तियन के लेके क्लासीसिज्म, रोमैण्टीसिज्म, नियो क्लासीसिज्म भा छायावादी, प्रगति–प्रयोगवादी जइसन जवन आन्दोलन चलल करेला ओहू से कुछ हट–बढ़ के बा। भोजपुरी के रचनात्मक आन्दोलन से ईहो माने–मतलब मत लगावल जाय कि एह भोजपुरी भाषा–भूगोल में रचनात्मकता के कवनो कमी बा, जवना के पुरावे खातिर भा भरपुरावे खातिर भा एह भाषा–भूगोल के रचनात्मकता कहीं ओठँघल–अंउघाइल बा जवना के झोर–झकझोर के जगावे खातिर भोजपुरी के रचनात्मक आन्दोलन बा, भा ओकर जरूरत बा। ईहे रहित त गोरख, कबीर, धरमदास, धरनीदास से लेके भारतेन्दु, प्रेमचंद, प्रसाद से होत आजतक, साहित्य के एह इलाका में बरहो मास वाला बाढ़ के नजारा ना लउकित।

तब, भोजपुरी के रचनात्मक आन्दोलन तवन जवन रउरा से खलिसा 'रचे' के ना, 'भोजपुरी में रचे' के आ ओहू से बढ़ के, भोजपुरी में रचवावे के आ रचलका के सँचे से ले के सभत्तर पहुँचावे तक के निहोरा करेला आ मोका–मोनासिब निहोरा से बढ़ के जवन होला, कुछ–कुछ दरेरा देला लेखा, तवनो करेला।

ढेर दिन ना भइल, भारतेन्दु से ले के महावीर प्रसाद द्विवेदी तक आ बाद तक हिन्दी खातिर अइसन एगो रचनात्मक आन्दोलन के जरूरत महसूस कइला, कई माने में ऊ जरूरत आजतक बनल बा। ओह आन्दोलन के साथे तब्बो एगो गौरव के भाव जुड़ल रहे, अब्बो जुड़ल बा। ओह में भारतेन्दु लागल रहन त कवनो अपना सवारथ से ना, महावीर प्रसाद द्विवेदी लागल रहन त अपना सवारथ से ना, ना भारतेन्दु जी के लड़ाई अपना भोजपुरी खातिर रहे, ना द्विवेदी जी के लड़ाई अपना बैसवाड़ी खातिर रहे। अउरियो जे–जे लागल रहे एह आन्दोलन में, भा लगल बा, केहू प केहू ई तोहमत ना लगा सके कि ऊ अपना भाषा खातिर लागल रहे भा लागल बा। एकर एगो गौरव हिन्दी के रचनात्मक आन्दोलन के साथे रहलो रहे, बड़लो बा, रहहूँ के चाहीं।

भोजपुरी के रचनात्मक आन्दोलन के ई गौरव नइखे हासिल। हमन के बेधड़क स्वारथी कहल जा सकेला। अपने भाषा में रचे–रचवावे के बात एह आन्दोलन में कहल जाता। एकरा चलते तनी–मनी दयनीय मतिन भइल एह आन्दोलन के किस्मते में बा बुला। मुश्किल ई बा कि एह आन्दोलन के मकसद खलिसा ईहे नइखे कि भोजपुरी वाला लोग भोजपुरी में लिखो, ईहो बा कि अवधी वाला लोग अवधी में लिखो, मगही वाला लोग मगही में लिखो। स्वार्थी भइले के साथे स्वार्थी कइले के ई प्रयास हो सकेला कि हमन के कुछ आउर दयनीय बना देत होखे। कुछ भोजपुरिए लोग के, एह, हमन के दयनीय भइला के बात पर अतना भरोसा, आ अपना, भोजपुरी के छूट गइला आ छोड़ दिहला प अतना गुमान, एह छूट गइला आ छोड़ दिहला के 'हिन्दी–हित' में मान के अपना के परमार्थी पवला के अइसन अकड़ कि मोका मिलते ऊ लोग भोजपुरी ओजपुरी खातिर छिंकलो–खँखरला के हींक भ हँकड़ के हिन्दी–हित आ हिन्द–हित के खिलाफ, सी.आई.ए–ओ.आइ.ए के, के.जी.बी–ओ.जी.बी. के साजिश तक करार देत देर नइखे लगावत।

हमरा, साँच पूछीं त अइसन लोगन में से अधिकांश लोग के भोजपुरिया भइला प घमण्डे घनघनात रहे के मन करेला। एह लोग में से कुछ लोग त सचहूँ एह सोच से सप्तिसान रहेला कि सभे अपने–अपने भाषा के बतियाई त हिन्दी के का होई? हिन्दुस्तान के का होई! उन्हन लोग के सचहूँ ई डर सतावेला कि एसे हिन्दुस्तान बँटा जाई, सभे अपना–अपना मातृभाषा के आपन–आपन मातृभाषा कहे लागी, अपना–अपना निजभाषा के आपन–आपन निजभाषा कहे लागी त हिन्दी के, के रह जाई, हिन्दी कहाँ के रह जाई! ओह लोग के लागेला कि अंग्रेजी के मोर्चा प त हिन्दी लड़ते बा, ओकरा भोजपुरियो के मोर्चा प लड़े के परी, कन्नौजियो के मोर्चा प लड़े पड़ी त बडा भारी भितरघात हो जाई!

हम ना कहब कि ऊ लोग अइसन कवनो भोजपुरी–विरोधी साजिश के तहत कहेला, कन्नौजी–मेवाड़ी–मैथिली विरोधी कवनो साजिश के तहत कहेला। बात खाली अतने बा कि ऊ लोग समय के साथे नइखे रह गइल। एगो समय रहे जब अंग्रेजन के खिलाफ लड़ाई में सँउसे भारत के एगो आपन भाषाशस्त्र से लैस करे के रहे आ तवना खातिर सभे हिन्दी के एकरा लायक आ काबिल पा के ओकरा के साजे–सजावे में लागल रहे। एह काम में गुजराती के जवन गांधी जी रहन सेहू लागल रहन, बंगला के जवन सुभाष बाबू रहन सेहू लागल रहन। असहीं एह काज के कर्ता लोग में केहू भोजपुरी वाला रहे, केहू बघेली के रहे, केहू तमिल के रहे, केहू मलयालम के रहे। अइसना में आजादी मिलला के बाद अगर चाहल गइल कि हिन्दी एह राष्ट्र के राष्ट्रभाषा बने त ई वाजिब रहे, एह से जे हिन्दी में आ हिन्दिए में एह सँउसे देश के एके में बान्ह के राखे के बल रहलो रहे आ बड़लो बा। अपना एही कबिलाँव के बल प हिन्दी एह सँउसे देश के अंग्रेजन के खिलाफ खड़ा क देले रहे। बाकिर हिन्दी एह देश के राजभाषा बन के रह गइल, ऊ हो आधे–अधूरा आ राष्ट्रभाषा त तब ना बनल, अब ले ना बनल। काहे? काहे कि हिन्दी के जवन कबिलाँव रहे, सँउसे देश के एक में बान्हे के, तवना के भुला के लोग ई तर्क देबे लागल कि हिन्दी हिन्दुस्तान के सबसे जादे जन आ जमीन के भाषा ह, एह से एकरा के राष्ट्रभाषा बना हेल जाय। उत्तर प्रदेश, बिहार, मघ्यप्रदेश, राजस्थान वगैरह के मिला के हिन्दी के एगो बड़हन जमीन बतावल गइल आ एह इलाका के लोग अदबदा–अदबदा के हिन्दी के आपन मातृभाषा बतावे लागल। एकर फल मिलल। मान लेल गइल कि हिन्दी के आपन एगो बड़हन इलाका बा आ एगो बडा भारी जनसंख्या के ई आपन भाषा ह। त का भइल? बाकी भारत एह बड़ इलाका आ बडा भारी जनसंख्या के रोब में आ गइल? ना आइल, ना आई। कम–से–कम अब त ई समझ लेबे के चाहीं कि जवना हिन्दी में सँउसे राष्ट्र के भाषा बने के कबिलाँव बा तवना के रउरा प्रदेश के साथे बान्ह के – भले राउर प्रदेश उत्तर प्रदेश–बिहार–मध्यप्रदेश–राजस्थान के मिला के हतहत गो प्रदेश होखे – एह भाषा के साथे बड़ा भारी अत्याचार कइले बानी। अपना एह अत्याचार से हिन्दी के बचाईं। एह तरीका से रउरा हिन्दी के त भठइबे कइनी, हिन्दी प्रदेश के नाम पर एह प्रदेशन के कतने–कतने आपन भाषासब के माटी में मिला देनी। अब बाज आईं सभे। एह बात के बूझीं कि हिन्दी एह देश के राष्ट्रभाषा बनी त अपना एक मात्र एह योग्यता से कि ऊ देश के दोसर कवनो भाषा लेखा कवनो एगो, एगो–दूगो प्रदेश के भाषा ना ह, एगो–दूगो जनपद के भाषा ना ह, सँउसे देश के भाषा ह। रउरा बाकी भारत के बतावे के परी कि हमनी के हिन्दी के राष्ट्रभाषा बनावल चाहत बानीं त एह से ना कि ऊ हमार भाषा ह। हमार भाषा त भोजपुरी ह, मैथिली ह, अवधी ह, छतीसगढ़ी ह– ओसहीं जइसे राउर भाषा गुजराती ह, पंजाबी ह, तमिल ह, तेलुगु ह। हमनी के अपना भाषा के ना एगो दोसर भाषा के, हिन्दी के, राष्ट्रभाषा बनावल चाहत बानी, रउरो अपना भाषा के ना एगो दोसर भाषा के, हिन्दी के, राष्ट्रभाषा बनावे के राह में मत आईं। अंग्रेजन के बाद के जवन ओकरो से बड़ल–बढ़ल भितरी गुलामी बा, अंग्रेजी के गुलामी, तवना से तबे लड़ल जा सकेला जब राष्ट्रीय स्तर पर हमनी के अपना–अपना भाषा के बजाय एगो दोसर भाषा के, आगे ले आइब जा। ऊ कवन भाषा होई? हिन्दी के छोड़ के एह देश के दोसर कवन भाषा बा, जवन एह देश के भाषा त ह बाकिर कवनो प्रदेश के भाषा ना ह? कवनो ना, बस हिन्दी आ हिन्दी आ हिन्दी। एकमात्र ऊहे एगो अइसन भाषा जवन एह देश में कहीं के पहिलकी भाषा ना हऽ आ एसे दुसरकी भाषा हर कहीं के हइलो हऽ आ होखँहूँ लायक हऽ।

बाकिर एकरा खातिर पहिले ई बतावे के परी कि हमनी के अपना प्रदेश के भाषा 'हिन्दी' ना, कुछ आउर बा। हमनी के अपना कपार प लागल एह तोहमत के, एह दाग के, एह धब्बा के धोए के बा कि हमनी के अपना भाषा के राष्ट्रभाषा के रूप में देश पर थोपल चाहत बानी जा। एकरा खातिर हमनी के आपन–आपन भाषा के लउकावे के परी। आपन भाषा, 'निजभाषा'

लउकी तब, जब बोलल–व्यवहारल जाई, ओकरा में लिखल–पढ़ल जाई – अतना जादे से अधिका से बहुतो–बहूत कि तह–पर–तह बइठल ई तोहमत जरी से छूट जाए। निज भाषा उन्नति खातिर भारतेन्दु बाबू के चेतवला के सैकड़न साल बादे सही, चेतल त जाय! एही चेतला के प्रमाण आ परिणाम के रूप में बा भोजपुरी के ई रचनात्मक आन्दोलन। रचीं, भोजपुरी में रचीं, रचवाईं, पढ़ीं आ पढ़वाई, रउरा हिन्दयो में रचीं, भगवान करस कि रउरा दुनिया भर के दोसरो–दोसरो भाषा सब में रचे पाईं, बाकिर भुला के ना कि रउरा हईं भोजपुरी के आ रउरा भले भोजपुरी 'में' नइखीं रचत, रचत बानी अपना भोजपुरिए 'से'।

भगवान करस, ऊ होखस चाहे मत होखस, हो सकेला कि ऊ होखबो करस आ नाहिंयो होखस, बाकिर अतना जरूर करस कि भोजपुरी के ई रचनात्मक आन्दोलन, कहीं मगही के रचनात्मक आन्दोलन के, कहीं मेवाड़ी के रचनात्मक आन्दोलन के अलख जगा देबे।

केहू के कहियो–ना–कहियो त ई बुझइबे करी कि कवनो 'अशोक द्विवेदी' जइसन भोजपुरिया अपने रचला से जादे, अवरू–अवरू लोगन से रचवावे खातिर जवन जीव–जान–जाँगर जरावल करेला तवनो के कवनो माने–मतलब होला...। ••

श्री बलदेव पी.जी. कॉलेज, बड़ागाँव, वाराणसी

भोजपुरी के रचनात्मक आन्दोलन के वर्तमान स्थिति आखिर कइसे बदली उदासीनता आ दुराव के माहौल?

भगवती प्रसाद द्विवेदी

मौजूदा फेसबुकिया दौर में 'फेस–टू–फेस' मिलि–बइठि के कवनो रचनात्मक मसला पर गम्हीर बतकही के ना त केहू का लगे फुरसत बा, ना दियानते बा। फुरसत में ना होखे के ए एगो बहाना बा, असलियत ई बा कि सभ सोशल साइट आ फेसबुक का पाछा हाँफत भागि रहल बा– अन्हरा भइँसा नियर। नवही लोग त अभिव्यक्ति के तीसमार खाँ बनल, अहं के निसा में फूलि के कुप्पा हो रहल बा। आधा – अधूरा जानकारी (उहो एने–ओने से चोरा–लपकि के), नकारात्मक सोच आ बड़बोलापन के बाजार गरम बा। बेगर किछु कइले–सधले खुद के शिखर–पुरुष घोषित कके खुदे आपन पीठ ठोकल जा रहल बा। साधना के त कवनो मोले नइखे रहि गइल आ सउँसे जिनिगी साधना आउर रचनात्मक आन्दोलन में खपा देबे वाला साधक या त भकुआ के तमासा देखि रहल बाड़न भा चुप्पी सधले एकोरा गुमनामी के अन्हरिया में लुकाइल बाड़न। राई के पहाड़ बनाके देखावे वाला आ परबत के अस्तित्व जबानी मटियामेट करेवाला एह गरदन काट काल में अइसन जनात बा, जइसे रचनात्मकता के चरचे बेमानी हो गइल होखे। किछु लोग आ संस्थान दक्खिन–वाम, बैकवर्ड–फारवर्ड, दलित–बहुजन के सियासी चाल चलत आपन छवि चमका के भोजपुरिया समाज के बाँटे–भरमावे में अझुराइल बा।

हालाँकि भोजपुरिया आन्दोलन शुरूए से रचनात्मक रहल बा आ ई कबो सियासी रंग नइखे लेबे पवले। अपना महतारी भासा का हक के लड़ाई में एकर जुझारू आ आक्रामक तेवर कबो देखे के नइखे मिलल। इहे वोजह बा कि आजुओ एह सर्वांगीण सम्पन्न भासा के आठवीं अनुसूची में शामिल होखे के बाट जोहे के परि रहल बा। एह दिसाईं फेसबुकिया भाई लोग के पहल में कवनो दम–खम नजर नइखे आवत, जबकि हिन्दी आ दोसरा भासा के किछु बेचैन आत्मा हाथ धोके एह अभियान में एड़ी–चोटी के पसेना एक कइले बा कि कवनो सूरत में भोजपुरी, संविधान के आठवीं अनुसूची में शामिल मत होखे पावो। अइसना हाल में सवाल उठत बा कि आखिर हमनीं के कब ले घोड़ा बेचिके सूतल रहब जा?

अब ले भोजपुरी के रचनात्मक आन्दोलन किछुए गिनल–चुनल लोगन के सिरजनशील जिद–जुनून के बदउलत आगा बढ़त आ रहल बा। ओह में से अधिकतर लोग या त अब एह दुनिया में नइखे आ

जिनिगी के आखिरी पड़ाव पर थाकि–हारिके चुपा गइल बा। कबो स्वामीनाथ सिंह, ईश्वरचंद सिनहा बनारस में भोजपुरी संसद बनवले रहलन, जहवाँ से ना खाली कईगो यादगार किताबे छपली स, बलुक भोजपुरी का इतिहास में सोहरत पावेवाली मासिक पत्रिको 'भोजपुरी कहानियाँ' रेलवे बुक स्टॉलन के मार्फत सउँसे देश में चरचा में रहल। आगा चलिके रामबली पाण्डेय आ गिरिजाशंकर राय गिरिजेश के संपादन तक ऊ कथा प्रधान पत्रिका इतिहास रचलस। एकरा पहिले आचार्य महेन्द्र शास्त्री के संपादन में छपल 'भोजपुरी' आ बाद में पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय के भोजपुरी परिवार, पटना के पत्रिका 'अँजोर' भोजपुरी के रचनात्मक आन्दोलन के दिशा दिहलस। पटना के चंद साहित्यकारन के जुझारू आन्दोलन के नतीजा रहे कि अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के स्थापना भइल आ बिहार सरकार के भोजपुरी अकादमी के गठन करेके पड़ल। आचार्य विश्वनाथ सिंह के संपादन काल के 'अकादमी पत्रिका' भोजपुरी रचनाशीलता के एगो यादगार मानक गढ़ले रहे। ओही समय 1979 में शुरू भइल 'पाती' के संपादन–प्रकाशन वनमैन आर्मी डॉ0 अशोक द्विवेदी के सम्पूर्ण समरपन के परिणाम रहे, जवन आजु एकलउत मुकम्मल पत्रिका का रूप में मूक–आंदोलन के नायाब इतिहास रचले बिया। अइसहीं, आचार्य पाण्डेय कपिल के भोजपुरी संस्थान, प्रो0 ब्रजकिशोर के भोजपुरी साहित्य संस्थान आ जगन्नाथ के भोजपुरी साहित्य प्रतिष्ठान के अवदान बस एक–एके रचनाकार के दीढ़ इच्छाशक्ति के नतीजा रहे। जमशेदपुर भोजपुरी परिषद् आ पश्चिम बंग भोजपुरी परिषद् के रचनात्मकता कबो ना भुलाइल जा सकेला? सतीश त्रिपाठी जी के अगुवाई में देवरिया से विश्व भोजपुरी सम्मेलन आ डॉ0 अरुणेश नीरन के संपादन में 'समकालीन भोजपुरी साहित्य' के प्रकाशन एह रचनात्मक आन्दोलन के दिशा–बोध करावत रहल बा। सीवान से अक्षयवरो दीक्षित के कमोबेश कुछ अइसने भूमिका रहल बा।

एगो समय रहे, जब डॉ0 विवेकी राय अंतरजनपदीय सहृदय गोष्ठी के जरिए गाजीपुर–बलिया के तमाम गाँवन में जाके युवा रचनिहारन के जोड़े आ प्रेरित करे में अगहर भूमिका निबाहत रहलन। छपरा के रामनाथ पाण्डेय आ बच्चू पाण्डेय सारन, सीवान, गोपालगंज के भोजपुरियन के जगावे आ रचे खातिर उद्बेग पैदा करत रहलन– गाँवा–गाँई जा–जाके। अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के मासिक पारिवारिक गोष्ठियन का जरिए नया–नया रचनाकारन के जोड़े खातिर लगातार उतजोग होत रहे। बाँसडीह के नरेन्द्र शास्त्री के शख्सियतो अइसने रहे।

ई इतिहास ना ह, ई त किछु बानगी दियाइल हा भोजपुरी के रचनात्मक आन्दोलन के आगा बढ़ावे आ बढ़ंती खातिर कइल कइल किछु कोशिशन के। बाकिर फिकिर एह बात के बा कि आजु भोजपुरी के रचनात्मक आन्दोलन में आइल ई ठंढापन काहें? वरिष्ठ रचनाकार लोग के रचनाशीलता के आँच में पहिले वाली गरमाहट के एहसास काहें नइखे होत? कवनो भासा के उज्ज्वल भविष्य के द्योतक होला– नवकी पीढ़ी के अनवरत गम्हीर जुड़ाव। बाकिर भोजपुरी के रचनात्मक आन्दोलन में उदासीनता के कुहासा छवले बा। आजु एह विषय पर गहन चिंतन–विवेचन करेके समय आ गइल बा। हमनीं के ई जिम्मेवारी बनत बा कि नवही पीढ़ी के भोजपुरी के साहित्य–संस्कृति से जोड़े खातिर सार्वजनिक मंच, स्कूल–कालेज–विश्वविद्यालययन में रचनात्मक अभियान चलावल जाउ। गाँवा–गाँईं जा–जाके भोजपुरी किताबन के प्रदर्शनी, कवि–गोष्ठियन, संगोष्ठियन आ सामाजिक नाटकन के मार्फत नवोदित में रुचि जगावे आ ओह लोगन के रचनाशीलता में परिष्कार ले आवे खातिर सकारात्मक पहल जरूरी बा। नवही लोगन के ई दायित्व बनत बा कि ऊ लोग अपना महतारी भासा के महतारिए अस नेह–छोह देउ, काहें कि महतारी आ महतारी भासा से कटल मनई, कवनो घाटे ना लागे। भारतेन्दु हरिश्चंद्र के ई पाँती सर्वाधिक प्रासंगिक बा–

निज भासा उन्नति अहै सब उन्नति के मूल,
बिनु निज भासा ज्ञान के मिटत न हिय को शूल।
अँगरेजी पढ़िके जदपि सब गुन होत प्रवीन,
पर निज भासा ज्ञान बिनु रहत हीन के हीन। ●●

**शकुंतला भवन, सीताशरण लेन, मीणापुर,
पोस्ट बॉक्स ११५, पटना'**

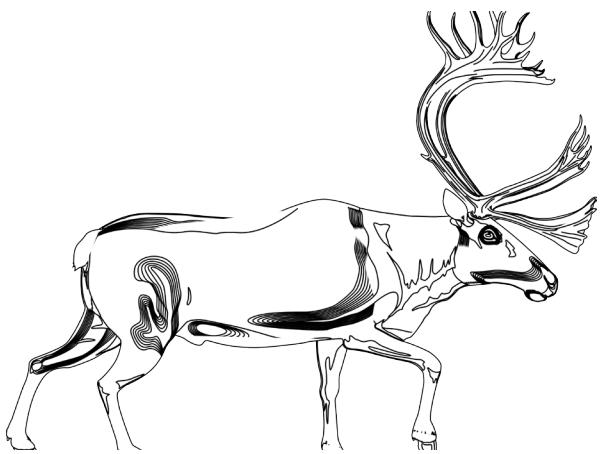

निबन्ध

पश्चिमी वैश्वीकरण बनाम भारतीय विश्व कुटुम्बवाद

✍ डॉ0 जयकान्त सिंह 'जय'

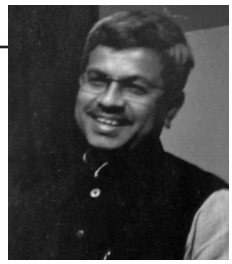

पश्चिम के दूगो शब्द 'वैश्वीकरण' आ 'भूमंडलीकरण' बहुते मनभावन आ लोक लुभावन बा। एकरा बाहरी रूप–रंग आ सम्मोहक ढंग पर के नइखे रीझल? एकरा साम, दाम, काम, चाम आ भेद–विच्छेद के कायल के नइखे? निपट अनाड़ी से अगड़धत पंडित पुजारी ले सभे एकरे पीछे मताइल–बउराइल आ धवाहिल जान पड़ता। सभे एकरे में व्यस्त, मस्त आ पस्त बा। बुद्धि भोगी लोग त एकरा विचार के प्रचारक ना बल्कि उद्धारक के अंदाज आ खास लिबास में एकरा अचूक औजार–मंत्र, माला, माइक, मनी, मीडिया, मसल्स पावर आ मैनेजमेंट के जरिये दिन–रात धँस रहल बाड़े कि पश्चिमी वैश्वीकरण भा भूमंडलीकरण भारत के अतिप्राचीन 'वसुधैव कुटुम्बकम्' आ 'विश्व कुटुम्बवाद' के आधुनिक रूप हऽ। एह विज्ञापनी विचार–प्रचार खातिर ओह सभे के पश्चिम का देशन से तरह–तरह के उपहार आ पुरस्कार मिलत रहेला। अतने ना भारतीय जन समुदायो ओही सभे के आधुनिक चिन्तक, विचारक, बुद्धिजीवी, एक्टीविस्ट आ समाज के तारक–सुधारक कह कह के ऊँच आसन देला।

भारतीय जनता एह वैश्वीकरण का संजाल, जंजाल आ मायाजाल में ओइसहीं लपटाइल, लोभाइल आ मोहाइल बिआ, जइसे राजा राम के धर्मपत्नी जनकनंदनी जानकी मायावी रावण के भेजल सोना के मिरगा बनल राक्षस मारीच पर मोहाइल रही। मायापति रामो ओकरा पर मोहाइ के बने–बने छिछिअइले आ आगे उनका सँगे–सँगे उनका वनवासी हीत–मीत लोग का का–का भुगते के पड़ल, से सभका मामूल बा।

'भूमंडलीकरण' शब्द बेवहारिक रूप में 'भूमंडीकरण' के वाचक बा। ई बाजारीकरण के वैश्विक छद्म सम्बोधन भर ह। ई अपना संगे उदारीकरण के मोहक शब्द जाल बीन के विाापनी बाजारू हर हथकंडा अपनाके अमेरिका आ यूरोप जइसन पूँजीवादी रेशन के ऊ साँधातिक जघन्य रूपपाश बुनेला कि एकरा में फँस के कवनो देश, समाज, भाषा, संस्कृति वगैरह सब कुछ अपने आप के ओकरा हजुरा ओछ, तुच्छ आ हीन मान के अपने आप से घिनाये–दूराये लागेलें। एकर उद्देश्य बा अपना सुख, सुविधा, समृद्धि आ सुरक्षा खातिर दुनिया के नक्शा से आर्थिक रूप से गरीब छोट–बड़ देशन के पहचान कइल। जैविक, रासायनिक आ परमाणुओ बम से ज्यादे विनाशकारी हथियारन से लैस कवनो आतंकवादी संगठन आ मायावी राक्षसियनों से खतरनाक मोहनी रूपवाली उदारीकण चाहे भूमंडलीकरण के सबसे मजबूत माध्यम बा– इलेक्ट्रानिकी संजाल आ सूचना–संसार तंग। जवना के सावधानी आ सतर्कता से कइल बारीक उपयोग जहाँ रक्षक बन सकेला उहँवें एकरा नशा में मताइल दुरूपयोग से ओकरा ला भक्षक बन सकेला।

एह पश्चिमी उदारीकरण चाहे भूमंडलीकरण भा वैश्वीकरण के मूल में बा 'पूँजीवाद बेवस्था'। पूँजीवादी बेवस्था के आधार बा 'बाजार'। एही बाजार के ध्यान में राख के तथाकथित उदारवादी वैश्विक स्तर पर यूरोप–अमेरिकी नीति बनावेला। जवना के मूल उद्देश्य होला अपना असीमित सुख–सुविधा–साधन–समृद्धि, रक्षा–सुरक्षा खातिर कवनो ना कवनो तरीका से कमजोर गरीब आ गरजू देश का संसाधन के दोहन–शोषण कइल।

भारतीय विश्व कुटुम्ब चाहे वसुधैव कुटुम्बकम् का आर्यजीवन दर्शन के मूलाधार आ मेरुदण्ड इ 'परिवार'। एकर अवधारणा सउँसे दुनिया में आत्मीयता के भाव भरल मानवीय चिंतन से जनमल पारिवारिक संस्कारन से ओतप्रोत बा। एकरा में सचमुच के उदार चरित्र के बेवहारिक लक्षण नजर आवेला। भारतीय विश्व कुटुम्बवाद के अवधारणा जहाँ सउँसे दुनिया के एक परिवार मान के परस्पर संवेदनात्मक सम्पर्क, सम्वाद, सहमति, सहकार आ समन्वय आधारित वैश्विक परिवार–संस्कार का मानवीय–मूल्यन के स्थापित करेला, उहँवे पश्चिमी उदारीकरण के अवधारणा दुनिया के बाजार बना के सहयोग–सहकार के बदले, असंवेदनशील प्रतिस्पर्धात्मक बाजार–व्यापार में हर एक चीज के दाम, कीमत (प्राइस) तय करेला।

भोजपुरी के एगो लोककथा में प्रसंग आवेला कि 'अमुक राक्षस के प्रान सात समुन्दर पर पिंजड़ा में बंद सुग्गा में बसेला।' ओइसहीं एह पश्चिमी वैश्वीकरण भा उदारीकरण के प्रान ताकतवर देशन के बनावल बाजार में बसेला। बाजार का संरचना में प्रमुख रूप से पाँच तत्व मौजूद होले– उत्पादक, उत्पादन, उपभोक्ता, विज्ञापन आ दलाल (बिचौलिया)। बाजार के पाँचों तत्व जेतने सुव्यवस्थित, समन्वित आ सक्रिय रहिहें, वैश्वीकरण ओतने पुख्ता आ प्रभावी होई।

भारतीय सुसंस्कृत परिवार में जहवाँ राम, कृष्ण, महावीर, बुद्ध, विवेकानन्द, अरविन्द, गाँधी, विनोबा वगैरह जनम लेवेलें, उहँवे आज का एह वैश्विक बाजारवाद का पेट से बिलगेट्स, अम्बानी, मितल आ जिंदल जइसन केतना स्वपोशी स्वार्थी कारपोरेट पैदा होलें। एही

बाजारवाद के असर बा कि आज व्यक्ति, समाज, देश आ दुनिया के बीच आपसी स्नेह–सम्मान–सरधा–समन्वय के जगह स्पर्धा–प्रतिस्पर्धा, सहकार के जगह दरार आ भरपाई के जगह खाई पैदा हो रहल बा। एकरा अपनन के ना खाली आपन चिन्ता होला। एह बेवस्था में जे जेतने लोभी, महत्त्वाकांक्षी, धूर्त, डाही, मक्कार आ बेमेल करनी–कथनी वाला होला, ऊ ओतने ऊँच ओहदा आ मान–सम्मान वाला व्यक्ति होला।

बाजारवादी बेवस्था नवका साम्राज्यवादियन के अचूक अस्त्र बा। एकरा हिसाब से दुनिये ना दुनिया से परे के हर चीजो बिकाऊ का आ जदि बिकाऊ नइखे त ओकरो के बिकाऊ बनावल जा सकऽता। ओकर जिद्द बा कि हम सउँसे दुनिया के बाजारू आ जोगारू बना के दम लेहब। आज कुछ निसोख गाँवन में प्राकृतिक स्वच्छ बेमोल पर्यावरण के गोद में जीवन यापन करे वाला जन समुदाय के छोड़ के बाकी दुनिया एकरा 'मोनोकल्चर' मतलब एकल अपसंस्कृति के प्रभाव में आ गइल बा। जवना में बहुराष्ट्रीय कम्पनियन के दुरात्मा बसेले। लोग जगाके लाभ कमाये वाली ई जीवनशैली जरूरत के अनुरूप माल पैदा ना करे, बल्कि अपना विज्ञापनी बाजारू बेवस्था के जरिये जनता के जरूरत तय करत माल कीने–बेंचे खातिर मजबूर करेले। ई पसा के बदौलत ईमान–धरम खरीद के घटिया के बढ़िया, गैर जरूरी के जरूरी, साधारण के असाधारण आ आम के खास बता के सज्जनता, सुन्दरता, नग्नता, सफलता वगैरह सबके बेंच रहल बा। समय रहते ना चेत से सबकुछ नष्ट–भ्रष्ट हो जाई। एह से एह पश्चिमी वैश्वीकरण भा उदारीकरण के आँवक में राख के जरूरत के हिसाब से उपयोग में ले आवे खातिर जरूरी बा अपना भारतीय विश्व बन्धुत्ववाद चाहे 'वसुधैव कुटुम्बकम्' वाला जीवन दर्शन पर गहराई से सार्थक संवावद करेके। आ एकरा प्रचार–विस्तार खातिर खुद के संस्कार–बेवहार के अनुकरणीय बनावे के। वाक् विलास से ना, आचरण आ चरित्र के जरिये एह 'कठिन लक्ष्य' के हासिल कइल जा सकेला। दोसरा ढंग से कहीं त हमहन में ओह विवेक के जगावल ढेर जरूरी बा, जवना में आदमी निर्णय लेव कि केतना लेबे के बा आ केतना छोड़े लायक बा। ••

एसो० प्रो०, भोजपुरी विभाग,
लंगट सिंह महाविद्यालय मुजफ्फरपुर

थाती

स्व0 रामजियावन दास ''बावला''

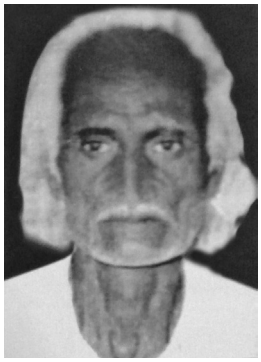

राम – केवट प्रसंग

केवट बोलल रामचन्द्र से, हाथ जोरि अस बानी
ए बाबू , राउर मरम हम जानी !
पाथर से नारी तूँ कइला
हमरे घरे दया करि अइला
एके बिनती बाटइ हमरी, नइया बहुत पुरानी ।
ए बाबू राउर मरम हम जानी !
पहिले राउर चरन पखरबै
फिर नदिया के पार उतरबै
मन में आवै तौ बतलावा भरि कठवत जल आनी।
ए बाबू राउर मरम हम जानी!
कुटुम भरे क नाव सहारा
कइसों कइसों करीं गुजारा
रत्ती भर ना झूठ कहीं, जानैं गंगा महरानी।
ए बाबू, राउर मरम हम जानी!

सत्कार

हम बनवासी कोल- भील क बेटउआ
रउवा राजाबाबू हउवा !
करीं सेवा का खियाईं/कहाँ आसनी बिछाईं
इहाँ बनवा में बाय कन्दमूल, फल-पतउवा
रउवा राजाबाबू हउवा !
कहाँ माई बाबू हउवैं/घरे अउर भाई हउवैं
बाबू भेस तपसी कऽ समझात बा बनउवा
रउवा राजाबाबू हउवा !
आजु मोरे घर रहा/रहबा कि ना कुछू कहा
बोला मरजी तोहार, नाहीं कवनो दबउवा
रउवा राजाबाबू हउवा !
बनबासी हमलोग/नाहीं सेवा करै जोग
लोग बावला भइल बा, देखि देखि के सुभउवा
रउवा राजाबाबू हउवा !

शशि प्रेमदेव के दू गो गजल

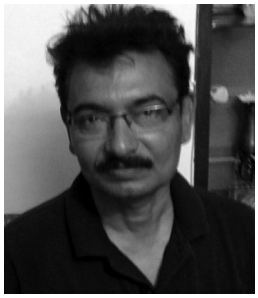

(एक)

नाम भइल बदनाम अनासो, बघवा सारे कऽ।
पता चलल जे काम रहे ऊ चतुर सियारे कऽ !

धोबी के लादी ना, हम तऽ शीशा हईं हजूर
कोशिश जिन करिहऽ तूँ फींचे अउर कचारे कऽ !

देखि देख के लोग चिहाई असहीं तहरो के
तुहूँ सीखि लऽ कला ,आँख से नीबू गारे कऽ !

सात समुन्दर पार क कवनो चोर- लुटेरा ना
हक तहार छीनी केहू तऽ घरे - दुआरे कऽ !

जुग बीतल बाकिर सूरुज के साध पुराइल ना
कबो तरइयन का टोला में रात गुजारे कऽ !

महँगी, जइसे इस्कुलिहा लरिकन क झुण्ड 'शशि'
हमा -सुमा जइसे कठुआइल साँप इनारे कऽ !

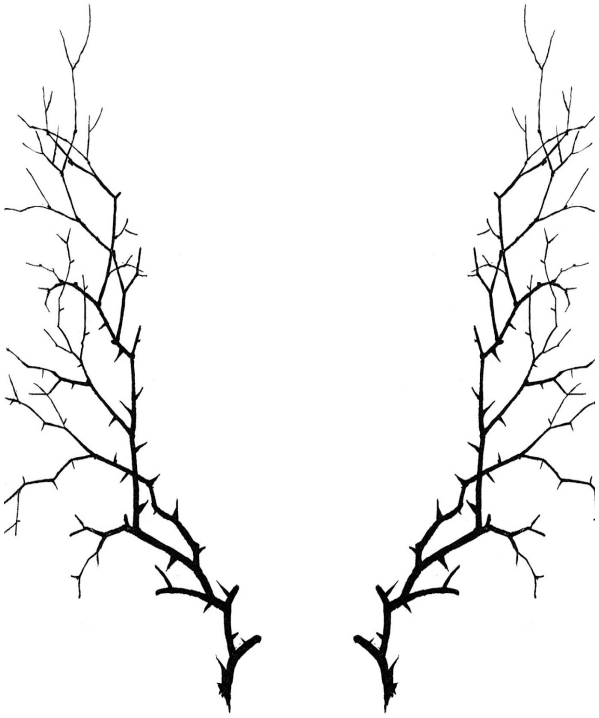

(दू)

हुनर अइसन कहाँ हासिल भइल हमके इलाही से
लिखीं कइसे चकाचक गीत हम ,करिया सियाही से ।

कहे खातिर त आजादी के सत्तर साल नियराइल
मिलल ना मुक्ति बाकिर ए फलाने , लाटशाही से ।

बकरिया के त चोरवा से बचा पवलऽ ना ए महतो
खँसिउआ के त कम से कम बचा लऽ तूँ सिपाही से ।

जरूरी बा बँचावल ओइसहीं कवितो के मरजादा
बचावल बा जरूरी जेह तरे सरसों के लाही से !

कि हमहूँ के मिलल मोका केहू के लोर पोछे कऽ
भइल फैदा इहे हमके --पड़ोसी का तबाही से !

अगर डर बा कि लुक्कड़ में ,पघिल के देह बहि जाई
त जा, सूतऽ तुहूँ लपिटाइ के घर में सुराही से !

••

प्रवक्ता (अंगेजी), कुँ० सिं० इन्टर कालेज, बलिया (उ०प्र०)

आसिफ रोहतासवी के सात गो गजल

(एक)

चाहे कतनो बुरबक बानी ।
खिलकट राउर बूझत बानी ।

साँचे लिखिबा झूठ न कहिबा
बन्द भले हो हुँक्का - पानी ।

राउर कुँडल कवच गरभ के
हमके गरभे से हलकानी ।

जंगल आजो भूख - उपासे
मन्दिर में दानी - महदानी ।

हमनी के बा खून- पसेना
रउरा लउकेला बस पानी ।

पकलीं रउरा फरमानी से
देखीं हमरो नाफरमानी ।

जीयत जिनिगी कइसे बिसरी
गँवई माटी, बोली - बानी ।

'आसिफ' जंगल - गाँव जे लहकी
जरि जाई कहियो रजधानी ।

(दू)

कइसन रहलू फलकल सँवरो ।
फागुन अइसन मधकल सँवरो ।

साँसन में आजो राजेला --
महुआ अस ऊ महकल सँवरो !

केवन टोनहिन कइलस टोना
रहलू केतना चंचल सँवरो ।

तोहरे से सब गाल गुलाबी
तहरे चेहरा पचकल सँवरो ।

सब देखे हँसते अँखियन के
के देखेला छलकल सँवरो !

फाटल साटत बीति रहल बा
मुट्ठी कहवाँ फरकल सँवरो !

यादन के मखमल - मन दउरल
रेंगनी अइसन करकल सँवरो ।

बदरे 'आसिफ' सोखि लियाता
परती - धरती दरकल सँवरो ।

(तीन)

वक्त कतना उघार कर जाला ।
पाँव तोपीं त सिर उघर जाला ।

घाम बा, रेत बा, बवंडर बा
दूर, जहवाँ तलक नजर जाला ।

देखि बादर उड़त, भरम गइलीं
चान कहवाँ इ रात - भर जाला ।

एतना जिन्दगी के मत चाहीं ,
ना ते जीये के चाह मर जाला !

काश 'आसिफ' उ सब बिसरि जइतें
याद उनकर बहुत अखर जाला ।

(चार)

अब उनकर अहसान भइल बा ।
माटी कुल अरमान भइल बा ।

सूली साँच चढ़ावल जाई
लीं, जारी फरमान भइल बा ।

कइसे बाँची बखरी, बाबू
जब चोरे दरबान भइल बा ।

आजो आदित पुरुबे ऊगसु
कहवाँ उलुटा चान भइल बा ।

कइसन- कइसन चेहरा पहिरीं
गुम आपन पहिचान भइल बा ।

दिल 'आसिफ' के, का दे दिहलीं
साँसत में अब जान भइल बा ।

(पाँच)

हौसला जब उड़ान पर होला ।
तीर तानल कमान पर होला ।

पाँव हरदम रहल जमीने पर
आँख जब आसमान पर होला ।

आब माने कहाँ किनारन के
जब कि दरिया उफान पर होला ।

गाँव सिहरल घरे समा जाला
दिन जबे, मुँहलुकान पर होला ।

खेत हरियर भइल पसेना ले
आँख बइठल मचान पर होला ।

बात निकले गजल के जब 'आसिफ'
नाँव तहरो जबान पर होला ।

(छह)

रउदा के औकाते का !
फेंड़न से परछाहीं तक ।

लमही पसरल हमरा में
जी, हिंगना - औराहीं तक ।

मंजर केतना अँखियन में
सिरजन अउर तबाही तक ।

हम पर, का ना गुजरल बा
पेशी अउर गवाही तक !

काहें ठहरीं ए साहेब --
कागद अउर सियाही तक !

खुद, 'आसिफ' कब आइल बा
मंजिल चल के राही तक !

(सात)

आन्ही-पानी, ओला पाला, आइल आफत चिरइन के।
देखत बानी जान सुखाइल, थर-थर काँपत चिरइन के।

गीध नजर लागल बा, बोटी -बोटी नोची, खा जाई
बा केकरा परवाह नरेटी, के बा चाँपत चिरई के।

देखले बानी भोरे ले तलफत- दुपहरिया साँझी तक
पाँखिन पर आकास उठवले, पँवरत-हाँफत चिरइन के।

नदिया-नार पियासल, आहर-पोखर के दरकल छाती
पवलीं घरिला लेले, घामे कोसन नापत चिरइन के ।

उजरल जंगल -खेत छिटाइल खोंतन के तिनका-तिनका
सरकारी किरपा से एतने भइल परापत चिरइन के ।

जय टीवी, जय पइसा के, अखबार-पतिरकन के जय हो
लाज न तनिको 'आसिफ' लँगटे फोटो छापत चिरइन के।

••

द्वारा- इन्द्र कुमार सिंह, अध्यक्ष,
हिन्दी-विभाग, पटना साइन्स कालेज, पटना-5

रास्ता बन्द बा... मेहरारुन खातिर

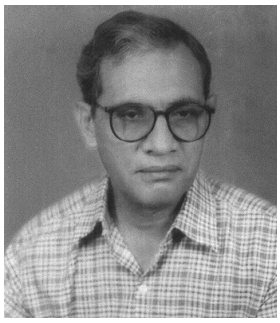

कृष्ण कुमार

घर से लेले दुआर तक
संसद से लेले सुप्रीम कोर्ट तक
तरक्की के अधिका पैमाना प/आजुओ
दुआरी बंद बा मेहरारून खातिर।

कानून के दफा में दर्ज होखले
सिर्फ अत्याचार ना होला
साजिश इहो बा कि
इज्जत, रुतबा आ मौका
मेहरारून के कबो मत मिलो
तरक्की के हरेक अहम् पैमाना पऽ
आजुओ दुआरी बन्द बा मेहरारून खातिर!
संसद में एगारह फीसद
आइ.ए.एस. आ आई.पी.एस. में
उनकर भागीदारी पनरह फीसद प
अँटकल बा।

गर्भ में आवे के साथे
उनका से अत्याचार शुरू हो जाता
नतीजा सोझा बा
हजार पुरुष पऽ
महज नौ सौ चालीस
मेहरारू रहि गइली।
ऐहू में पचपन फीसद
एनीमिया के शिकार हो गइली
कारण गरीबी नइखे
हमनी के 'सोच' दोषी बा
नारा में बदलली नारी
बाकिर जमीन प' फटेहाल बाड़ी आजुओ
जेंडर स्कोर कार्ड-२०१३'
एलान करऽता कि-
विकास के हरेक मोर्चा पऽ
मेहरारून के रास्ता बन्द बा। ●●

महावीर स्थान के निकट, करमन टोला, आरा (बिहार)

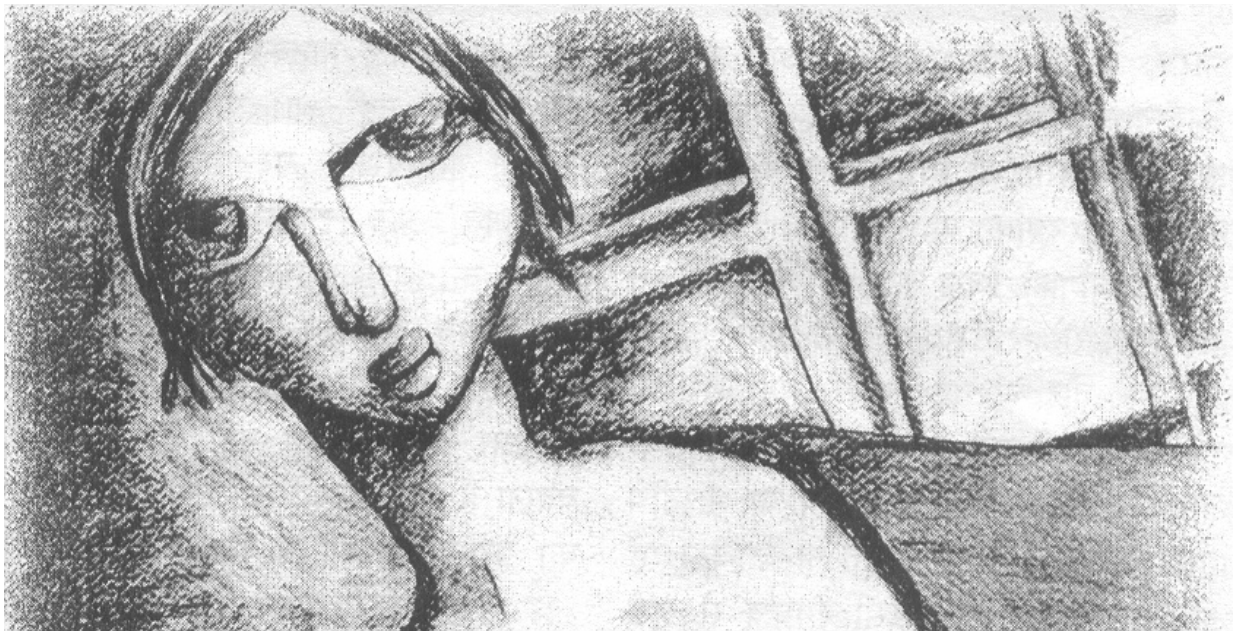

आपन देश आ देश के नयकी पीढ़ी

डॉ0 रिपुसूदन श्रीवास्तव

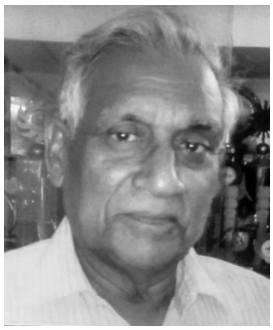

हमनी अइसन लोग जे देश का आजाद होखे के आसपास, कुछ पहिले, कुछ पाछे, धरती पर आइल, ऊ अपना देश के कई दिशा में अगुआइल देखि के बड़ा खुशिहाली मनावेला। आजु पढ़ल–लिखल लोगन के प्रतिशत, देश का माथ उठा के चले लायक हो गइल बा। आर्थिक दशो सुधरल बा। हमनी ऊ लरिकाईंयों देखले रहीं, जे गाँव–घर में दूनू बेरा के खर्ची चलावे वाला लोग के बड़ कमी रहे। आज एह हालत में पूरा सुधार भइल बा। आजु दुनियाँ का देशन में, एक दोसरा से आगे भागे में बड़ा होड़ बा– आपन मुलुको एइमें लागल बा। एइमें बढ़–चढ़ के जे काम करी, ऊ बिया नइकी पीढ़ी। हमनी अस लोग तऽ वर्ण–व्यवस्था का हिसाब से चउथा आश्रम में बा, बाकिर देखे–सुने आ बूझे के लिआकत अबहीं ले बाँचल बा। भजन कीर्तन करे वाला लोगों दुनियाँ के दंगा फसाद से फिकिर करेला– कुछ करे के चाहेला, भले ओकरा ओतना सामर्थ ना होखे। ई सामर्थ त नवजवाने का होला, ई हमनी के नइकी पीढ़ी हऽ।

पिछलकी सदी का शुरूआत में एगो अर्थशास्त्री का नाँव के बड़ा चर्चा रहे दुनियाँ भर में। ए यूरोपीय अर्थशास्त्री के नाँव हवे– थॉमस माल्थस। इनकर बड़ा चर्चित सिद्धान्त रहे जे दुनियाँ में खाद्यान्न के बढ़ोत्तरी जवना रूप में होला ओकरा से कई गुना ज्यादा आदमी के यानी खाए वाला के बढ़ोत्तरी होला। उनकर घोषणा रहे जे, जल्दिए आदमी खइला बिना मरे लागी। आजु उनका सिद्धान्त का बीतले लगभग सौ बरिस हो गइल। आदमी के आबादी त जरूरे बेहिसाब बढ़ल बा– बढ़ियो रहल बा, बाकिर उनका सोचला का मोताबिक खाद्यान्न भा खाए–पीए के सामान के कवनो कमी दुनियाँ में कतहीं नइखे भइल। अकाल, भुखमरी अब पहिले अस, कहीं नइखे सुनात। माल्थस के सिद्धान्त बेकार हो गइल– अब चिन्ता ए बात के बा जे, आबादी का हिसाब से आपन देश जेतना आगे गइल बा, ओतने अउरियो क्षेत्र में बा कि ना? एकरा के देखे खातिर तनी देश हमनी अपना देश के आबादी के लगभग आधा का बराबर नइकी–पीढ़ी पर सोचे के मजबूर कर रहल बा।

आजु हमरा देश में, नवजवान– लगभग 15 बीस से 35 बरिस के– के प्रतिशत लगभग 48–49 प्रतिशत बा, जवन कवनो दोसरा देश में नइखे। एह मानी में हमनी दुनियाँ में सबसे आगे बानी। साफे लउकऽता जे देश के बागडोर अब एही लोग का हाथ में होई। अइसे, दुनियॉ भर में जब कवनो बदलाव आइल बा, कवनो क्रान्ति भइल बा त ऊ नवजवाने का बलबूता पर भइल बा। हमनी के भविष्य जवना नवजवानन का हाथ में बा, ओकनी के भविष्य केकरा हाथ में बा?

आजु बेरोजगारी, बेरोजगारी से उपजल चिड़चिड़ापन (असहिष्णुता), दायित्वहीनता, हिंसक प्रवृत्ति, शिक्षा से बेगानापन आ व्यग्रता नवजवान के स्वाभाविक लक्षण हो गइल बा। आजु से कई दशक पहिले चीन में कम्युनिस्ट पार्टी के वार्षिकोत्सव में माओ–त्से–दुंग के एगो भाषण इयाद आ रहल बा। ऊ कहले रहले जे युवाशक्ति ऊ भूत हऽ, जेकरा पास अथाह शक्ति बा; ओकरा सही मार्गदर्शन चाहीं; ना त ऊ कवन तमाशा खड़ा करी ओकर कवनो ठेकाना नइखे। आजादी का बाद हमरा देश में एह अथाह शक्ति खातिर कवनो कार्य–योजना आजुओ ले नइखे निर्धारित। दुनियाँ में प्रगतिशीलता का होड़ में कड़ा अनुशासन से चीन भारत से बहुत आगे निकल गइल बा। पिछला बीस साल में भारत में आन्तरिक प्रसाधन पर ध्यान त बा– रेल, पथ परिवहन, पथ, तकनीकी सुविधा वगैरह पर सरकार के नजर बा, बाकिर एह सब पर जवना अनुपात में खर्चा हो रहल बा, ऊ जनसंख्या वृद्धि का तुलना में बहुते पीछे बा। मोटा मोटी लउकेला जे कुछ होते नइखे। यूपीए सरकार के योजना आयोग के उपाध्यक्ष मौंटेक सिंह आहलूवालिया के बात सुनीं– "We take our plans and announce our schemes lout the potential of our plans and their real successes have been very different." यानी, हमनी योजना बनाईले आ ओकरा खातिर रस्तो तइयार करीले, बाकिर योजना में जेतना ताकत होला, सफलता ओकरा मोताबिक ना होखे।

आज दुनियाँ में भूमंडलीकरण के माहौल बा। एकरे मोताबिक सामाजिक–राजनैतिक– आर्थिक परिवेश में बदलाव आइल बा। एह परिवेश में भारत के नवजवान खातिर जवन माहौल चाहीं, ऊ अभी ले नइखे बनल। देश के नवजवान कुछुओ करे के तैयार बा– ओकरा काम चाहीं। आधारकार्ड के जन्मदाता नन्दन न मीलेकनि के कहनाम बा– "These people

are hungry for opportunity. They will live in any circumstance and move anywhere for a change at job." यानी, ई लोग अवसर के भुखाइल बा। कवनो हाल में रहे के तैयार बा आ ए लोगन के नौकरी खातिर कहीं जाए में कवनो उजुर नइखे। एह हालत में स्पष्ट दिशा–निर्देश चाहीं। दिशा–निर्देश में सबसे लमहर कमजोरी आ रहल बा शिक्षा का क्षेत्र में। का जाने काहें, चाहे केन्द्र सरकार होखे या राज्य सरकार शिक्षा पर जेतना ध्यान चाहीं, ऊ नइखे दिआत। आजु ई दुनियाँ भर में स्वीकृत तथ्य बा जे– '– "Knowledge is power', 'ज्ञान शक्ति हऽ' – सत्ता तक पहुँचावे वाला हऽ। एकर कमजोरी पूरा पीढ़ी के कमजोर कर रहल बा। आजु नवजवान बड़ा उमेद से 'कौशल केन्द्र' (Skill Centre) के स्थापना का ओर देख रहल बा। का जाने कब पूरा होई ई सपना? कब ई चरितार्थ होई? कब स्किल डेवलपमेन्ट से लोग अवसरन क लाभ उठाई?

ई मनोवैज्ञानिक सत्य हऽ कि जब मन में बइठावल लक्ष्य तक पहुँचे के कवनो रास्ता, कवनो साधन ना लउकी त भटकाव के संभावना बनेला। ई भटकाव धीरे धीरे आ गइल बा। सहे के ताकत घटल जाता– तनी तनी बात पर उठा पटक, खून–खराबा, मामूली बात हो गइल बा। अहिंसा का मुलुक में हर गली चौराहा पर ना रोज, त हफ्ता में एकाध हत्या त होइए रहल बा। एह में आग में घीव के काम करेला राजनीति के निम्नस्तरीयता। भ्रष्टाचार त शिष्टाचारे हो गइल बा। एगो भगीरथ रहले जे गंगोत्री से गंगा के धरती तक पहुँचावे में जूझत विष्णु के कमंडल आ शिव के जटा से निकालत सफल भइले। सरकारी योजनन के धरती तक पहुँचावे में ओइसने भगीरथन के जरूरत बा। ई काम समर्पित नवजवानने से होई। हमनी का मन में ई आस आ विश्वास दूनू बा, जे देश के भविष्य खातिर देर–सबेर भगीरथ बनिहें आ एगो सुन्दर भविष्य के सपना आजु ना त बिहने जरूर पूरा होई। ••

पड़ाव-पोखर, लेन-२, आमगोला,
मुजफ्फरपुर, ८४२००१

(''पाती'' अंक/ जून' २००० से)

समय - सन्दर्भ क एगो सामयिक रचना

स्व0 शम्भूनाथ उपाध्याय

ईजति देस क कइसे बाँची/
ना बुझाला भाईजी
बायन फेरे में दुश्मन के ई सकुचाला भाईजी !

पहरेदार खड़ा बा ,बैरी सीमा में घुस जाता
हमरा अइसन लागेला कि ,इहवें कहीं पोसाता
कतई कहीं ना कहीं बाटे, दाल में काला भाईजी !

रोजे बम बिस्फोट करेला ,कतने लोग मराता
दुनियाँ चाहे जे कुछ बोले,ऊ कहवाँ घबड़ाता
निरलज के जिनगी -जीयल ,ना सोहाला भाईजी !

आर पार के लड़े लड़ाई, लागी कवनो घाटे
स्वाभिमान से जीयेवाला थूकि-थूक ना चाटे
करनी देखि के आपन, पुरुखा लोग लजाला भाई जी !

धइल - बन्हल छोड़ऽ अब जिन फेरू करऽ चिरउरी
घुचुर- घुचुर मति बतियावऽ आ जनि सहकावऽ अउरी
बोले पाक प धावा, मचा-मचा के हाला भाईजी !
निरलज के जिनिगी जीयल ना, सोहाला भाईजी !! ••

आलेख

प्रयोजनमूलक भोजपुरी

डा0 ब्रजभूषण मिश्र

'प्रयोजन' अंग्रेजी के 'Function' आ 'प्रयोजनमूलक' 'Functional' के पर्याय के रूप में हिन्दी में प्रयुक्त हो रहल बा। भोजपुरियो में हिन्दी के ई दूनो शब्द जइसे के तइसे प्रयोग में आ रहल बा। भाषा जब सामान्य व्यवहार में ना, कवनो खास उद्देश्य आ जरूरत के पूरा करे वास्ते व्यवहार में आवेला त ओकरा के प्रयोजनमूलक कहल जाला। प्रयोजन बदलला से भाषा के सरूपों में बदलाव आ जाला।

भोजपुरी लोकभाषा हऽ। ई खाली बोलचाल खातिर ना बलुक पेशागत रूपो में प्रयुक्त होत आ रहल बा। भोजपुरी क्षेत्र में हर जाति, हर आदमी अलग–अलग पेशा अउर व्यवसाय से जुड़ल बा। ओह सब पेशा आ व्यवसाय के जाने–समुझे–करे खातिर अलग–अलग शब्दावली के प्रचलन बा। एक व्यवसाय के भाषा आ शब्दावली दोसरा व्यवसाय से भोजपुरिये में अलग–अलग बा। भोजपुरी क्षेत्र में जातिगत पेशा जइसे– लोहारी, बढ़ई के काम, धुलाई के काम, तेल–पेराई वगैरह के अलावे खेती–किसानी–पशुपालन, शिल्पकला, बुनाई–कढ़ाई, कसीदाकारी, रसोई आ पाक कला, गायन–वादन नाच जइसन मनोरंजन के व्यवसाय पेशा कइल जात रहल बा। ई सब काम–खातिर भोजपुरी के भाषा प्रयोजनमूलक रहल बा। वैश्वीकरण, बाजारीकरण आ विज्ञान अउर तकनीकिओ के युग में भोजपुरी भाषा के प्रयोजनमूलकता बरकरार बा आ कवनो–कवनो क्षेत्र में एकर प्रयोजन बढ़ियो रहल बा।

हो सकत बा कि हमार बात बहुत लोग का अटपटाह लागे। काहे कि जवन प्रयोजन हम ऊपर गिनवले बानी ऊ आम प्रयोजन हऽ, परम्परित हऽ। मान्यता मिलला पर संविधान के संरक्षण पा के कवनो भाषा के प्रयोजनमूलक बनावे के राह खुल जा सकत बा, जइसे कि हिन्दी। मान्यता के पहिले लोक से जुड़ल ना रहला के चलते एकर कवनो प्रयोजन ना रहल ह। भोजपुरी चाहे भोजपुरी अइसन अनेक लोकभाषा सब के आपन–आपन लोक संस्कृति बा, आपन–आपन निर्धारित क्षेत्र बा। सबके आपन जातीय पहिचान बा। भोजपुरी जइसन लोकभाषा सब के प्रयोजनमूलक बनावल एही से आसान बा। कवनो योजना के प्रचार–प्रसार बढ़ावे में अइसन भाषा के प्रयोजन प्रमाति बा। भोजपुरी जइसन भाषा के उपयोग सरकारी योजना के प्रचार–प्रसार में अनुकूल बा। अंग्रेजी–हिन्दी के पहुँच आम आदमी तक नइखे। ओकर शब्दावली से आम आदमी ओइसन परिचित नइखे। एही से ऊ आम आदमी तक कवनो बात ना पहुँचा सके। धीरे–धीरे सरकारी तंत्र के आ व्यापारिक प्रतिष्ठान अपना–अपना उत्पाद के विज्ञापन भोजपुरी जइसन भाषा में करे लागल बा आ लाभ उठा रहल बा। जन–शिक्षा आ प्रचार–प्रसार में भोजपुरी भाषा के प्रयोजन सिद्ध बा। मनोरंजन के क्षेत्र में भोजपुरी के प्रयोजन के विस्तार मिलल बा।

ना खाली पेशागत, बलुक दोसरो क्षेत्र में खासकर के दुभाषिया के रूप में आ भाषा–शिक्षण के रूप में एकरा प्रयोजन के जरूरत रहल बा। भोजपुरिया क्षेत्र से गिरमिटिया मजदूर लोग मॉरिशस, फिजी, सूरीनाम, त्रिनिदाद, गुयाना में गइल। ऊ लोग ना अंग्रेजी जानत रहे आ ना ओह देस भा स्थान के भाषा जहँवा गइल रहे। ऊ लोग खेत–मजदूर रहे जेकरा से खास करके गन्ना के खेती में काम लिहल जात रहे। ओह लोग से काम लेवे खातिर एगो अइसन बेकती के जरूरत पड़ल होई, जे भोजपुरी में बतिया सके। ठिकदारन का चाहे मालिक का भोजपुरी जाने–सीखे के पड़ल होई। भोजपुरी क्षेत्र के खेती–किसानी के शब्दावली सीखे के पड़ल होई। वेस्टइंडिज के देसन में भोजपुरी भाषी लोग साग–सब्जी के रोजगार करत रहल बा। ओह लोग के साथ व्यापार करेवालन का भोजपुरी जाने–सीखे के पड़ेला।

पिछला सदी के मध्य में नेपाल में कुछ कृषि वैज्ञानिक आ विशेषज्ञ लोग बोलावल गइलें। ऊ लोग कुछ आधुनिक तरीका से खेती के गुर सिखावे वाला रहे। नेपाल के मधेसी क्षेत्र में कृषि के काम होला। मधेसी लोग मैथिली ना त भोजपुरी भाषा बोले–समझेला। सवाल रहे कि अमेरिकी लोग भोजपुरी–भाषी लोग से कइसे संवाद स्थापित करी? एह खातिर बिहार का चम्पारन के प्रसिद्ध हिन्दी–भोजपुरी कवि रामदेव द्विवेदी 'अलमस्त' के नियोजित कइल कइल, जे अमेरिकन लोग के भोजपुरी सिखवले। एहू से भोजपुरी के प्रयोजन प्रमाणित भइल।

मनोरंजन के क्षेत्र में खास करके लोकगायकी, लोकनाट्य आ नाच के जरिये भोजपुरी के प्रयोजन सिद्ध होत आवत रहल बा। महेन्द्र मिश्र के लोक गायकी प्रसिद्ध रहल बा। गीत, पूरबी गीत के एह पुरोधा के बड़ा प्रसिद्धि रहे। उहाँ का लिखवइया के साथो–साथ गवइया आ गीत–नाच के सिखवइयो रहीं। इहाँ के चेलवाही में नाच–गान के गुर सीखे वालन के लमहर जमात रहे। इहाँ के लिखल गीत आ धुन जे सीख लेव, ऊ ढेर नाम आ दाम दूनो कमात रहे। भिखारियों ठाकुर के नाच मंडली के साटा करेला, लाइन लागत रहे। पूरबी यू–पी से आसाम–बंगाल तक उनका मंडली के नाम रहे आ मोटगर दामो मिलत रहे। इलेक्ट्रानिक आ सोशल मिडिया के युग में भोजपुरी के बाजार का

विस्तार मिलल बा। एह विस्तार के कारण, ना खाली भोजपुरी क्षेत्र के लोग, दोसरो क्षेत्र के लोग आकर्षित भइल बा। एह में लिखे, गावे, नाचे, बजावे वाला के काम बढ़ल बा, एह लोग के शिक्षणों–प्रशिक्षण के जरूरत बा, भाषा के तमीज जाने के जरूरत बा। रोजी–रोजगार मिलला से एह भाषा के प्रयोजन बढ़ल बा।

हिन्दी पट्टी में हिन्दी के बाद भोजपुरिये अइसन भाषा बा जवना में फिल्म उद्योग विकसित भइल बा। ई बहुत लोग के रोजी–रोजगार दे रहल बा। फिल्मन खातिर कथा, पटकथा, संवाद, दृश्य, गीत–संगीत खातिर भोजपुरी भाषा के प्रयोजन बढ़ल बा। एकरा सब के शिक्षण–प्रशिक्षण में भोजपुरी के प्रयोजनमूलकता बढ़ल बा। दक्षिण भारतीय फिल्मन के डबिंग भोजपुरी में हो रहल बा। एह खातिर अनुवाद आ संवाद प्रेषक के काम भोजपुरी में हो रहल बा। एह क्षेत्र में रोजी रोजगार के खातिर भोजपुरी भाषा के प्रयोजन प्रमाणित हो रहल बा।

भोजपुरिया क्षेत्र के लोकनाटकन से प्रभावित होके हिन्दी में ओही तर्ज पर नाटक खेले के प्रचलन बढ़ल बा। एह नाटकन के आपन शब्दावली बाटे, एही तरे नाच के शब्दावली बाटे। एह सबके मंचित करके भाषा के प्रयोजन बढ़ावल जा सकत बा।

भोजपुरिया क्षेत्र के दु गो खाद्य–पदार्थ बाजार पकड़ लेले बा। भोजपुरिया के मजाक सातूखोर कह के उड़ावल जात रहल। उहे सत्तू आजकाल औषधि रूप में इस्तेमाल हो रहल बा। लिट्टी–चोखा अब बड़–बड़ समारोहन के मेनू में सामिल भइल बा। एकर रेसिपी त भोजपुरिये भाषी लोग बता सकत बा। अइसहीं मकुनी, दहली पूरी, जाउर, पीठा–पीठी, ठेकुआ, कसार, ढकनेसर जइसन ढेर पकवान बा जेकर रेसिपी बतावल जा सकत बा, बनावे के प्रशिक्षण दिहल जा सकत बा।

अइसहीं शिल्पकला, दस्तकारी, बुनाई–कढ़ाई, कसीदाकारी, चित्रकारी, कोहबर लिखाई, चउकपुराई, पूजा–पाठ, व्रत–त्योहार, लोकाचार आदि खातिर एह भाषा के प्रयोजन बा।

संवैधानिक मान्यता मिलला के बाद कार्यालयी भोजपुरी के प्रयोजन टिप्पण, प्रारूपण, अधिसूचना, सूचना, पल्लवन, अनुवाद, स्मर प्रतिवेदन आदि के क्षेत्र में बढ़ी। ई कहल जा सकत बा कि भोजपुरी प्रयोजनमूलक भाषा हऽ, एकर प्रयोजन के क्षेत्र में विस्तार होत जा रहल बा। ••

मुजफ्फरपुर (बिहार)

लोकराग के गीत

अब तऽ नाहीं रहल, रहे लायक गउँवाँ
चलऽ नया ठाँव जोहीं जा !
पार करे के बा घटओ मझउँवाँ
चलऽ कवनो नाव जोहीं जा !

खेती दे न साथ, भइल अस दुसवारी
जियलो कठिन, बियहइहें का कुँवारी?
जेने तार्की ओने लउकेला भकउवाँ ,
चलऽ नया ठाँव जोहीं जा !

शिवजी पाण्डेय

नाहीं कवनो राह बने, रोजी-रोजिगार के
उद्दमो सफल होला कवनो अधार से
इहवाँ खेले के बा घुमरी-परउँवाँ,
चलऽ नया ठाँव जोहीं जा !

अब त नाहीं रहल, रहे लायेक गउँवाँ
चलऽ नया ठाँव जोहीं जा !! ••

ग्रा० पो०-मैरीटार, बलिया (उ०प्र०)

स्मरण

लोकाश्रयी काव्य-परम्परा के अन्यतम कवि आचार्य महेन्द्र शास्त्री

✍ पाण्डेय कपिल

बीसवीं सदी के लोकाश्रयी काव्य–परम्परा आ भोजपुरी–भाषा–सहित्य के रचनात्मक सक्रियता के सन्दर्भ में विचार कइला पर सहसा आचार्य महेन्द्र शास्त्री के पुण्य स्मरण हो आवेला। बीसवीं सदी के पहिलका साल में जनमल शासत्री जी के साहित्यिक सक्रियता जे उनका बीस बरिस का उमिर में शुरू भइल, उनका जिनिगी के अन्त–31 दिसम्बर, 1974 ई0 ले अनवरत चलत रहल।

भोजपुरी, हिन्दी, संस्कृत आ संस्कृति, भाषा आ साहित्य, प्रचार आ संगठन, लेखन आ पत्रकारिता, कविता आ गद्य, हास्य आ व्यंग्य, सम्मेलन आ संगोष्ठी, पुस्तकालय आ विद्यालय, पढ़ल आ पढ़ावल, शिक्षा–प्रसार आ दलित लोगन के उद्धार, समाज–सेवा आ राष्ट्र–सेवा एह विविध क्षेत्रन में बिखरल शास्त्रीजी के समूचे सक्रियता लोक–चिन्तन के धागा में गुँथाइल रहे।

उनका ऐकान्तिक लोक–निष्ठा का चलते, उनका व्यक्तित्व के, उनका कृतित्व से अलग ना कइल जा सके। उनका जिनगी के कवनो एक पहलू के दोसरा से छटका के ना देखल जा सके। नगर–जीवन के सुख–सुविधा का बीचे बइठ के साहित्यिक अखाड़ाबाजी करेके बनिस्वत, दूर देहात में साहित्य, संस्कृति, शिक्षा आ समाज–सुधार के अलख जगावल आ लोक–जीवन के दुख–दर्द के अपना कविता के विषय बनावल आचार्य महेन्द्र शास्त्री के जादे प्रिय रहे।

पुरान परम्परा आ परिवेश में पलल–बढ़ल रहलो पर आ पुरनका टोल–पद्धति से संस्कृत पढ़लो पर, शास्त्रीजी के व्यक्तित्व पुरान रूढ़ियन आ व्यवस्था का प्रति हमेशे उग्र आ क्रांतिकारी बनल रहल। हिन्दी के अनन्य सेवक आ संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान होइयो के ऊ अपना जिनिगी के साठ–पैंसठ बरिस भोजपुरी के अकथनीय सेवा के समर्पित कइले रहले। भोजपुरी के भाषा–संरचना के मर्म उनका कविता में आत्मसात हो गइल रहे। हिन्दीओं में ऊ काफी कुछ लिखले, बाकिर जे लिखले ओकरा में भोजपुरी लोक–जीवन का साथे–साथे भोजपुरी भाषा के तेवर सगरो छवले रहल। अपना काव्य में ऊ ऊत्तर–पूर्वी भारत के औसत लोक–जीवन के महान आ प्रामाणिक गाथा लिखले बाड़े।

जिनिगी के भाग–दौड़ उनका के हरिद्वार से कलकत्ता तक के कई जगहन में नचवले चलल, बाकिर उनकर मुख्य कार्य–क्षेत्र रहे उनकर आपन सारन जिला–पुरनका सारन जिला, जे अब सारन, सीवान आ गोपालगंज में बँटा गइल बा। ओह सारन जिला जे लगभग छव दशक तक अपना साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक आ शैक्षिक सेवा से संजीवित करेवाला आचार्य महेन्द्र शास्त्री सारन जिला के समग्र साहित्यिक–सांस्कृतिक चेतना के अन्यतम प्रतीक हो गइल रहले।

तत्कालीन सारन (अब सीवान) जिला में महाराजगंज का लगे रतनपुरा गांव में विक्रमी संवत् 1958 के बैशाख अन्हारी तिरोदशी के जनमल महेन्द्र शास्त्री महाराजगंज आ गोदान के संस्कृत विद्यालयन में पढ़ला का बाद, वाराणसी के विभिन्न विद्यालय आ महाविद्यालय में पढ़ले। फेर, महामहोपाध्याय पं0 अत्रदाचरण तर्कचूडामणि, महापण्डित शिवदत्त न्यायाचार्य, कविचक्रवर्ती पं0 देवी प्रसाद शुक्ल, महापण्डित अच्युतानन्द वेदान्ती, आ महामहोपाध्याय पं. रामावतार शर्मा के शिष्य का रूप में 1921 ई0 तक पढ़ले आ 1922 में काशी विद्यापीठ का परीक्षा में प्रथम भइले। उनका सहपाठी लोग में पं0 केदारनाथ शर्मा सारस्वत, दर्शनकेसरी गोपाल शास्त्री आ स्व0 अलगू राय शास्त्री के नाम खास तौर पर उल्लेखनीय बा।

पढ़ाई पूरा भइला पर शास्त्री जी पढ़ावे के काम में लगले आ भारत धर्म महामण्डल के महाध्यापक, ज्वालापुर महाविद्यालय (ज्वालापुर, हरिद्वार) के दर्शनाध्यापक, गुरूकुल महाविद्यालय (देवघर) के प्राचार्य, बिहार सांस्कृतिक विद्यापीठ (पटना) के प्राचार्य, आउर दोसर–दोसर कइएक विद्यालयन में संस्कृताध्यापक का रूप में समय–समय पर काम करत रहले। अध्यापन का क्षेत्र में उनका सहकर्मी लोगन में पं0 पद्यसिंह शर्मा के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय बा। साम्यवादी नेता श्री इन्द्रदीप सिंह, बिहार के भूतपूर्व मंत्री स्वर्गीय चन्द्रिका राम, 'योगी'–सम्पादक स्वर्गीय ब्रजशंकर वर्मा, बिहार के भूतपूर्व शिक्षा राज्यमंत्री श्री कृष्णकांत सिंह, पटना वीमेन्स ट्रेनिंग के पूर्व प्राचार्य श्रीमती शकुन्तला सिन्हा, सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री रामनगीना सिंह 'विकल' ई कुछ शास्त्री जी के शिष्य–मण्डली के विशेष नाम बा। अध्यापन का साथे–साथे ऊ देश आ समाज का सेवा में लागल रहले। आजादी के लड़ाई, समाज–सेवा, साहित्यिक सक्रियता आ पत्रकारिता के उनका काम से उनका अध्यापन के काम में अक्सरे बाधा पड़त रहल, बाकिर उनका लोक चिंतन में कबो बाधा ना आइल।

1921 के असहयोग आन्दोलन में सरकारी परीक्षा दिहल छोड़के ऊ राजनीति में उतरले आ राष्ट्रीय आन्दोलन से जुड़ले। सन् 1930 के सत्याग्रह आन्दोलन में ऊ नोकरी छोड़के, आन्दोलन में खुल के भाग लिहले आ महिनवन सारन जिला के डिक्टेटर बनल रहले। आठ महीना के सश्रम कारावास के सजाय भोग के निकलले त महापंडित राहुल सांकृत्यायन का नेतृत्व में

संचालित किसान आन्दोलन में कूद पड़ले। 1942 के राष्ट्रीय आन्दोलन में ऊ सक्रिय भूमिका निभवले। बाकिर, 1947 में, भारत के आजादी मिलला का बाद, सक्रिय राजनीति से अलग हो गइले, आ आपन सक्रियता पूरा–पूरी लोक–चिन्तन के अर्पित कर देले।

आचार्य महेन्द्र शास्त्री के समाज–सेवा के शुरूआत 1923 में भइल, जब कि ऊ 'हलान्दोलन' के सूत्रपात कइले। परम्परा से, 'ब्राम्हण लोग हर चलाओ' के नारा देत ई आन्दोलन चलवले रहले। 1924–25 से छुआछूत–उन्मूलन, अछतोद्धार, सफाई, नशाबन्दी बगैरह का काम में ऊ सक्रिय रूप से लागल रहले। 1926 से स्त्री–शिक्षा के प्रचार–प्रसारी के काम ऊ गहन रूप से कइले। पर्दा–प्रथा के हइावे खातिर ऊ 1928 से प्रचार–कार्य शुरू कइले आ उनका एह काम के सामाजिक स्वीकृतियो मिलल। तिलक–दहेज के सक्रिय विरोध त ऊ बराबरे करत रहले। वियाह–शादी का मोका पर नाच–गान आ बाजा–गाजा वगैरह के ऊ सार्वजनिक अपव्यय मानत रहले आ अइसन अवसर के बराबर बहिष्कार करत रहले। समाज–सुधार के अइसन कुल्ह काम का सिलसिला में शास्त्री जी कोई दू–अढ़ाई सौ सभा–सम्मेलन के आयोजन त जरूरे कइले होई हैं। शिक्षा के प्रसार खातिर ऊ अदभुत् काम कइले। अपना जिनिगी में ऊ चउदह गो हाई स्कूल आ एगो बेसिक स्कूल के स्थापना करवले रहले आ महाराजगंज में डिग्री कालेज के स्थापना के ऊहे सूत्रधार रहले। सन् 1952 से मरे का साल ले, ऊ पुस्तकालय–आन्दोलन से जुडल रहले। अपना जिनिगी में ऊ सारन जिला में कैकडत्रन पुस्तकालयन के स्थापना करवले रहले।

कुछ समय ले शास्त्री जी पत्रकारितो से जुड़ल रहले। 'विशाल भारत' आ 'योगी' से ऊ कुछ समय तक सम्बद्ध रहले। पं0 बनारसीदास चतुर्वेदी से अनकर मैत्री–भाव एही अवधि में विकसित भइल, ले अन्तरजनपदीय आन्दोलन में चतुर्वेदी जी के रूचि का वजह से, दिनोदिन घनिष्ठ होत गइल। सन् 1929–30 में 'तरूण तरंग' नामक मासिक के ऊ सम्पादन कइले रहले। सन् 1948 में ऊ 'भोजपुरी' नाम से एगो भोजपुरी पत्रिको के शुरूआत कइले बाकिर आर्थिक कठिनाई का चलने ऊ एकर दोसर अंक ना निकाल सकले। बारह बरिस बाद, आरा से एही नाम के दोसर पत्रिका बाबू रघुवंश नारायण सिंह के सम्पादन में प्रकाशित भइल।

आचार्य महेन्द्र शास्त्री साहित्यिक सक्रियता के संगठनात्मक काम में सन् 1921 से लाग गइले। अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन आ बिहार संस्कृत सजीवन समाज के काम में सक्रिय योगदान करेके अलावा, बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन के काम में ऊ सक्रिय होके हाथ बँटावत रहले। सम्मेलन के अधिवेशनन का समय में उनकर व्यस्तता आ संलग्नता देखते बनत रहे। सारन जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन के त ऊ प्राण रहले, आ सारन जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के उद्भावक, संरक्षक, संचालक, आयोजक का ना रहले? अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के उद्भावना में उनकर महत्वपूर्ण योगदान भइल रहे, हालांकि 1975 में ओकरा पहिलका अधिवेशन के आयोजन के कुछए महीना पहिले 1974 के 31 दिसम्बर के ऊ दिवंगत हो गईले।

अन्तरजनपदीय आन्दोलन का सिलसिला में, शास्त्रीजी 1944 में एगो विशेष आयोजन सारन जिला में करवले रहले, जे अपना विशिष्ट उद्भावना आ सफल कार्यान्विति खातिर बहुत दिन ले इयाद कइल जात रही। ऊ पु0 बनारसीदास चतुर्वेदी के एक महीना के साहित्यिक भ्रमण सारन जिला के दूर देहातन में करवले, आ एह अवधि में तीस गो साहित्यिक सभा के आयोजन भइल रहे।

शास्त्री जी के लेखकीय जिनिगी के शुरूआत 1921 से भइल, जे उनका जिनिगी के अन्त ले चलत रहल। अइसे त ऊ संस्कृतो में काफी कुछ लिखले, बाकिर जादे हिन्दी में लिखले, आ ओहू से जादे भोजपुरी में लिखले। कविता शास्त्री जी के प्रमुख लेखन–विद्या रहे। अइसे, समय–समय पर निबन्ध आ कहानियों ऊ कुछ लिखले रहले। उनकर लिखल प्रमुख किताब बा – 'भकोलवा' (भोजपुरी), 'हिलोर' (भोजपुरी आ हिन्दी), 'चोखा' (भोजपुरी), 'सूक्ति–सरिता' (संस्कृत), 'प्रदीप' (हिन्दी), 'धोखा' (भोजपुरी)। सारन जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन से प्रकाशित 'सारण्यक' आ 'आचार्य महेन्द्र शास्त्रीः व्यक्तित्व और कृतित्व' नामक किताबन में उनकर चुनिन्दा हिन्दी आ भोजपुरी कवितन के सुन्दर संकलन भइल बा।

शास्त्रीजी के कविता के भाषात्मक सरचना के विश्लेषण से स्पष्ट होई कि ऊ खाँटी भोजपुरी के कवि रहले। अइसे, ऊ जादेतर त भोजपुरी में लिखलहीं बाड़े, बाकिर हिन्दीयो में जे कुछ लिखले बाड़े ओकरो भाषा–संरचना पर भोजपुरिए के तेवर सगरो हाबी रहल बा। उनका भोजपुरी के सटीक आ 'टिपिकल' शब्दन के प्रयोग कइलन, बलुक भोजपुरी के भावात्मक संरचना के अच्छी तरे बरकरार रखले।

भाषा आ कविता का बीचे कवनो दीवार शास्त्रीजी का कविता में ना मिले। कविता का साथ भाषा के अभिन्नता शास्त्रीजी के काव्य के विशेषता बाटे। उनका भाषा में जे संगीत बा ऊ भोजपुरी के बा। उनकर कविता तथा कथित अभिजात भाषा के सांगीतिक रीति पर नइखे रचाइल। उनकर काव्य–चेतना असल में भोजपुरी के लोक–रस में सराबीर बा। भाषा के ई संगीत हिन्दी

में 'उच्चारण संगीत' का नाम से चच्रित रहल बा। एह उच्चारण–संगीत के सही अवधारणा शास्त्रीजी जइसन लोकश्रयी कवि के रचना के पारायणे से हो सकत बा।

भाषा–संगीत के, आम तौर पर, भोजपुरी के कवि लोग गलती बुझले बा, आ ऊ लोग लोकगीत के संगीत आ लय के अनुकरण करे लागल बा। शास्त्रीजी लोकगीतन के लय पर कविता लिखले बानी, बाकिर उनकर असली ध्यान लोकभाषा भोजपुरी के संगीत पर रहल बा। एह भाषा–संगीत के उनका गहिर पकड़ बा। जे तरे उनका कविता में कविता आ भाषा के अलग ना कइल जा सके, ओही तरे उनका भाषा के ओकरा संगीत से अलग ना कइल जा सके। शास्त्रीजी के कवितों में लोकगीतन के लय मिलेला, बाकिर अनुकृत रूप में ना।

शास्त्रीजी के उनकर कविता लोक–जीवन तक ले गइल बा। एह बात के, एह रूप में कहल साइत जादे सही आ उपयुक्त होई कि लोक–जीवन का साथे गहिर लगाव शास्त्रीजी के कविता तक ले गइल बा। जीवन के कवि–व्यक्तित्व निर्मित भइल बा। एही से, उनका व्यक्तित्व के उनका कृतित्व से अलग ना कइल जा सके। लौकिक उपादान से शास्त्रीजी अपना खातिर जे कविता रचले बाड़े ओकरा में भोजपुरी लोक–जीवन के महान प्रामाणिक गाथा अभिव्यक्त भइल बा।

अपना कविता में शास्त्रीजी लोक–जीवन के विभिन्न पहलुअन के मार्मिक चित्रण कइले बाड़े। तिलक–दहेज, बाल–विवाह, जनसंख्या वृद्धि, फूहड औरत, सुलछनी मेहरारू, महरारून के गहना–प्रेम, कटनी, मेंड़, खैनी–तमाकू, आर्थिक विषमता, भ्रष्टाचार, नेतागिरी, हड़ताल, अछूत, गन्दगी, किसान, बुढ़ापा, लाउडस्पीकर, गाड़ीवान, चूहा, मच्छर, भूख परीक्षा, सतुआ, सुथनी वगैरह शास्त्रीजी के कविता के विषय ह। लोक–जीवन के एह विभिन्न पहलुअन पर बहुत दर्द का साथे लिखत, शास्त्रीजी उत्तर भारत के ग्राम्य जीवन के परत उधेड़ के रख देले बाड़न। गाँव के अन्ध–विश्वास, कुरीति, अशिक्षा, गन्दगी आदि बातन पर शास्त्री जी के टिप्पणी बड़ा चोटाह घाव कइले बा। उनका कवितन में औसत जन–जीवन के सुख के चित्रण अपेक्षाकृत बहुते कम बा। उनका दुखे के चित्रण जादे बा। ग्राम्य जीवन के नरक बनानेवाला चीजन पर शास्त्रीजी के ध्यान जादे गइल बा। चारो ओर फइलल गन्दगी आ पिछड़ापन से क्षुब्ध होके ऊ अजीब मुद्रा में बात करत बाड़े। इहे मुद्रा शास्त्रीजी के विशेषता ह, जवना के पकड़ला बिना उनका व्यक्तित्व से साक्षात्कार नइखे कइल जा सकत।

'कुसल कि सगरे आपन लोग, सबसे नीमन ई संजोग' 'लोगन का घरे कुछ ना बाँचल, ई झूठे बा गावल–नाचल,' 'हर बा खुरपी–कुदार बा,' 'तिलके में लेला लोग भरसक गार हे,' हमनी का आजो बहार बा,' 'कुल्ही गुजुर–गुजुर लरिका,' 'दुख से कटी जिनिगिया हो, सुख से एगो रात,' 'सीवान से सोनपुर,' 'सुथनी,' 'कलकत्ता से सँइयाँ आ गइले,' 'मंगल होई,' 'दंगल होई,' 'केकरा सहारे बिताई हम दिनवाँ' आदि कविता सम्मिलित रूप से औसत भारतीय जीवन के अइसन चित्र खड़ा करत बा, जे यथार्थ के सामना करेवाला कवि के बेचैन कइले रहत बा। ई बेचैनी शास्त्रीजी के कविता के पाँती–पाँती में ध्वनित होता। शास्त्रीजी शासन के अधोगतियो से व्यथित रहत बाड़े। 'खेत कोड़े खातिर लोगवा कुदारी चाहता। फूल लोढ़े खातिर नेता फुलवारी चाहता!' जइसन पंक्तियन में उहे व्यथा व्यंजित बा। 'सारन जिला घर बा, जियलो जहर बा' –ई पाँती टूटल ग्राम्य जीवन के असहनीय स्थिति खोल के सामने राख देता। शास्त्री जी गन्दगी, भ्रष्टाचार, अशिक्षा, कुरीति आ अनीति से घिरल टूटल लोक–जीवन के संघर्षरत कवि हवे। एह ग्रामीण परिवेश में ऊ अइसन रचल–बसल बाड़े कि ओह से उनका के अलग क के नइखे देखल जा सकत। ग्राम्य जीवन से अइसन लगाव भोजपुरी भा हिन्दी के कमें कवियन में मिली। सामाजिक जिनिगी के एतना संलग्नता से झेले के सामाजिक चेतना, आ ओकरा के बारीकी से उकेरे के उनका जइसन क्षमता भोजपुरी, हिन्दी या कवनो दोसरा भाषा के केतना कवि के बा? उनकर कृतित्व एह शताब्दी के उत्तर भारत के लोक–जीवन के एतना गहनता, विशालता, सूक्ष्मता आ जीवन्तता से मार्मिक रूप में शब्दायित करेवाला प्रामाणिक कृतित्व बा।

बाकिर उनका लोक–चिन्तन आ लोकाश्रयी अभिव्यक्ति–शैली से ई भरम ना होखे के चाहीं कि उनका पास बैचारिक क्षमता के अभाव बा। शास्त्रीजी के काव्य–सृजन एगो व्यापक बौद्धिक पृष्ठभूमि में भइल बा। उनकर कविता इतिहास के अतीत, वर्तमान आ भविष्य के पता देत बा। शास्त्रीजी सामाजिक वास्तविकता के इतिहास के गतिशीलता में समझले बाड़े। एही से ऊ सामाजिक पुनर्निर्माणो के बात कइले बाड़े। अइसन पुनर्निर्माण समाजवाद से प्रभावित जरूर बा, बाकिर ऊ प्रतिबद्ध रूप में ओकर आख्यान नइखन कइले। ग्राम्य जीवन के विविध पहलुअन के चित्रण में विषय या पात्र के नाटकीयता के पकड़ शास्त्रीजी के काव्य के विशेषता मानल जाई। ••

इन्द्रपुरी, पटना-800024

व्यंग्य–कथा

छेनी–हथौड़ी

डॉ0 रमाशंकर श्रीवास्तव

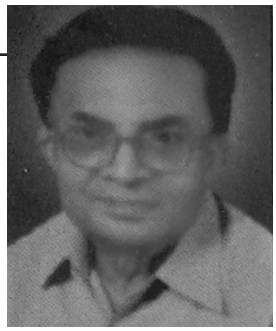

हे ठुकुर–ठुकुर से काम चली? हुमच के मारीं। हथौड़ी से काम ना चले त हथौड़ा ले लीं। देखत त बानी, केतना दिन से अपने ठक–ठुक कइले बानी। झूठ नइखे कहल गइल, दस गो सोनार के आ एगो लोहार के।

धेयान दीं, केतना साल बीत गइल। इ कलकल–खजुहट जात नइखे। दिन पर दिन बढ़ले जात बा। बड़ा सुनत रहनी देहात के तारीफ। मर तोरी रे, तारीफो के कवनों अंत होला?

उनका घरे माँगे गइलीं चिनगारी। ''ए इया, अपना अगिया में से एगो अंगारी दे दीं। ओतने से हमार चूल्हा जर जाई।''

जरते आँख से इया देखली कमलवतिया का ओर। होंठ से हरफ ना निकलल मगर नज़र से सवाल के बवंडर उठल।

''भगबू कि ना एहिजा से। अबे अबे चुहानी में आग लहकल हऽ तले इनकरा के उठा के अँगारी दे दीं। जो जो, अपना बाप–पितिया के सिखाव, तोहरा सिखवला में हम ना आइब। एही लेन देन में इ गाँव जर गइल। केतना दिन से सुनत रहनी कि अब गाँव–देहात से दुख–दलिदर बिला जाई। हर घर में गैस के सिलेंडर आ जाई। तनकिये–सा में फांय दे लापफ उठी। बीस मिनट में रसोई तइयार।

अब बुझात बा कि जेतना बात हवा में उड़ेला उ सब सांचे ना होला। बड़का गाछ पर के पत्ता फडफड़ाला, मगर हवा कहाँ ठहर पावेला?''

एतने में आ गइली नगीना के भउजी। अइसन किल्ली उहे खड़कावेली।

आके आगे खड़ा हो गइली ''सुननी हँ, बाबू बो?''

''कहबू तब नू सुनेब! हमरा कवनो बाइ धइले बा, जे एने ओने के बात खातिर कान पतले रहीं।

साफ–साफ बतावऽ।''

उ बोलली। ''रउआ दुअरवे पर त तीन आदमी खटिया पर बइठल बा लोग।'' एक जना अखबार पढ़के सुनावत रहले ह। राम सागर के घर के उत्तर से लगले जमीन सरकार ले ली। बड़का सड़क बनी। जमीन के बदला में खूब रुपया मिली। केतना परिवार में त रुपए रुपए हो जाई।

''नगीना के भउजी तू हमार बात के अपना लुगा में गेंठी बाँध लऽ रुपया से सुख ना मिलेला।''

''लोग के बाजार उड़स के चल जाई बैंक के काउंटर पर। धक्के खात में तीन घंटा बीत जाई। सभे रुपये गिने में लाग जाई। तनी हउ हथौड़िया देबू। जाँत के लगे पड़ल बा।

नगीना के भउजी हथौड़ी उठा के दे देहली। बाबू बो छेनी लेके ओही हथौड़ी से जाँत के दाँत टूंगे लगली। फेर कहली ''जानतारू जांत के दाँत जब खिया जाव, त हथौड़ी चला के छेनी से ठीक कर देबे के चाहीं।''

कल्हकी रात महेश के बाबूजी आके कहत रहनी ''अब फेर जात बा विधायक के चुनाव होखे। चुनाव में हल्ला होला। आ सड़की पर के धूरा–माटी उड़ के सभे के चेहरा–मोहरा बिगाड़ देला। जीत–हार के बाद सभे आपन मुँह हाथ पोंछ के अपना धंध में लाग जाला। इ चुनाव–सुनाव त आँधी ह। गते से भोट देके टकस जाए के चाहीं। आगे जानस नेता लोग। ओही लोग के जान संसरी में लटकल रहेला। जीत–हार पर बहस चले लगेला।'' तले महेश के बाबू शिवदयाल जी आँगना में आ गइले। आँगना में ऊ चुपचाप ना आबेले। कुछ ना कुछ बोलिए के आबेले। पता ना आज कवना छेनी–हथौड़ी के नाम लेके बड़बड़ात अइले। हमरा त बुझइबे ना कइल कि ये दादा इहां का ई छेनी–हथौड़ी के कवन कथा लेके आ गइनी।

नगीना के भउजी हँसे लगली। ''आ दूरो, रउओ बाबू बो, कबो–कबो लइका नियर नादान बन जाइले। अबे नू रउआ छेनी हथौड़ी से जाँत टूंगे के बात करत रहनी हं।

शिवदयाल जी मुंह के कुल्ला आँगना में फेंक के आ गइले। रउआ लोगिन ठीक से समझीं। ''इ देश बिना छिलले–ठोकले सुधरी ना। अइसन अइसन बेकार चीज सिर उठवले बा कि ना गरीब चैन से जीअत बा ना धनदौलत वाला शांति से घूमत–फिरत बा। फेर अइसन तरक्की के का कहल जाव। लोग बदहवास पता ना कहंवाँ दउड़त जा रहल बा। हमनी के देस के बीसों साल से खजुहट परेशान कइले बा। जरूरत बा मरहम लगावला के।

धरती पर अपराध बढ़ल जात बा। औरत जात आपन प्रान बचा के घरे में दुबकल बाड़ी।

बिडम्बने नू कहल जाई कि रउआ हर जगहे चिलइनी कि भ्रूण हत्या मत करो। कन्या को मत मारो। कन्या के पैदा क के ओकरा देह से खेलवाड़ होत बा। चोरी–चमारी, बलात्कार, अपहरण इ सब त औरते जाति के साथे होत बा। महिला–सशक्तिकरण पर अलगे बिगुल बाजत बा। पहिले जब इ सब कुछ ना रहे त नारी समाज ज्यादा सुरक्षित रहे।'' कह के शिवदयाल जी हँसते दुआर पर चल गइले।

बाहर पंचायत बटोराइल रहे। जतना अपना मेहरारू के मार के कपार फोर देहले रहे। खून से रंगाइल साड़ी लेके औरत आपन पफरियाद करे आइल रहे। ताड़ी के नशा में जतना अपना मेहरारू पर जुलुम करत

बा। मुखिया–सरपंच हाथ पर हाथ धऽ के गंभीर बनल बइठल रहले। सुने में आवत बा कि सरपंच जी के घरे तीन पसेरी साग–सब्जी पहुँचवले बा। उहे तीन पसेरी उनकरा मुँह पर ताला लटका देले बा।

उ का बोलस आ केकरा ओर से बोलस। मुखिया जी तनी मुँहफट रहले। उनकरे बात के साथ सरपंच दिल बहादुर सिंह के मुँह से हुं–हां निकल जाव।

अइसने लेन–देन में आज के साँच मुंह तोप के बइठल बा।

डॉ. हमीद के मोटर साइकिल के आवाज सुनाई पड़ल।

साइकिल रोक के बतवले। ''थाना के सिपाही गइल रहले हऽ। कौनो मेहरारू के कपार फाट गइल बा। मरहम पट्टी करे जा रहल बानी।''

तबहीं शिवदयाल के ट्रक ड्राइवर तलहत्थी पर सुरती लठत खड़ा रहले। डाक्टर हमीर के लगे आ के उनकरा मोटर साइकिल के हैंडिल पर हाथ धके बोलले। ''अपने हमार एगो बात मानब डाक्टर साहब?''

''सही बात होई त काहे ना मानेब। डाक्टर के मुँह से निकलल।

''त एही घरी मोटर साइकिल के पहिया मोड़ के अपना घरे लौट जाईं। एहीजा के रगड़ा में पड़ेब त धंसते जाइब, आ भेंटाइ कुछू ना।

डॉ. हमीद गंभीर हो गइले। ''ए भाई तू कइसन बात करता है। एक डाक्टर की ट्यूटी है मर्ज का इलाज करना।''

हैंडिल छोड़के ड्राइवर सुखदेव गुर्रा के तकले। ''तबे न अपने मर्ज के इलाज करे चलल बानी? केकर–केकर इलाज करेब डाक्टर साहब? बीमारी ढेर बा। दवा कम पड़ जाई। एह देश के जवान खजुहट ध्इले बा, उ अब घठ्ठा नियर बन गइल बा। बइठ के छीलत रहीं। तबो ना खजुहट भागी आ ना घठ्ठा आपन दर छोड़ी। हमार बात सुन लीं। जांत के चक्की हमेशा टुंगाला–छिलाला तबो चक्की खिया जाला। अब एह खियाइल देश के चक्की के फेर से टूँगे के पड़ी। लोग आपन आपन छेनी हथौड़ी लेके छीले आ ठोके में लागल बा। देखीं का होला? हमनी के किस्मत में त इन्तजार कइल लिखल बा।''

डॉ. हमीद सुखदेव ड्राइवर के मुँह का ओर ताके लगले ''तू कहत त बाड़ऽ ठीके। मगर हमरा समझ में आवत बा कि भोथराइल छेनी से छीलल अकारथ जाई। कहत बाड़ऽ त हम लवट जात बानी मगर पुलिस वाला अगर आके टोकी त जबाब के दी!''

''जबाब के फिकिर मत करीं डाक्टर साहेब? अब पब्लिको जबाब देबे के सीख गइल बा। एगो खून के केस में उ दौड़त बिया। एने हजारों खून रोजे होता। बिछौना पर उठंग के सोचे में आ लाठी बन्दूक लेके दौड़े में फरक होला। लीला देखत रहीं। हमरो उमिर पचपन साल से ऊपर भइल आपन–आपन डफली, आपन–आपन राग सुनत कान पाक गइल। देखीं ये देश के किस्मत कब फिरेला।''

डाक्टर साहेब चल गइले। ओने पंचायत में फइसला भइल कि जतना बड़ा बेरहमी से व्यवहार कहले बा। बिना कुछ भइले अइसन खून–खराबा ना होइत। पति के चाहीं कि अपना औरत के इज्जत करो। प्रेम–मोहब्बत करो। प्रेम–मोहब्बत से का ना सुधर जाला। पचास गो रुपया जुर्माना लेके जतना के मांफी दिहल जाता। भविष्य में अगर देबारा अपराध होई त पंचायत सख्ती से पेश आई।

पंचायत उड़स गइल। सरपंच आ मुखिया के साथे दूतीन आदमी अउर लोग रहे। हलवाई के दोकान में बइठ के चाय–मिठाई चले लागल।

सरपंच जी एगो से पूछले ''तब हो दीनानाथ। आज पंचायत के फैसला कइसन रहल?

दीनानाथ हाथ में कप थाम लेले रहले। अभी थोड़ही सुरुकले रहले कि सरक गइल। गला साफ क के बोललेे। ''अरे सरपंच जी, एकरा से बेस्ट फैसला हो नइखे सकत। अइसने फइसला पर त इ देश टिकल बा।''

हँसत–हँसत सभके कप हिले लागल। ••

टावर-1/601 बेवर्ली पार्क अपार्टमेंट
सेक्टर 22/2 द्वारका, नई दिल्ली-77

ऊ सँवरकी लइकी

तुषारकान्त उपाध्याय

कस्बाई शहरन के वर्ग चरित्र अजबे होला। नया पर तेज खिंचाव आ परंपरा से मोह दूनों क रस्साकस्सी सँग–सँग चलेला। ई जिला के मुख्यालय हवे। दिन भर दूर–दराज गांवन से आइल लोग, कोरट–कचहरी आ बजार का कारन, एकरा में भीड़ आ जिनिगी दूनों भरेला। पढ़वइयन क भीड़ साँझ ले अपना अपना ठेकान पर लवट जाला बाकिर दूर क लइका कवनो लाज में डेरा डालेलन सऽ। कई गो लाज बाड़न स, एही लड़िकन से आबाद। हास्टल कहाँ, जवन बटलो बा त ओम्मे कुछ लड़िका बरिसन से कब्जा जमवले बाड़न सऽ।

रउवा, इहाँ खाली मुहल्ला का नाँव से रहे वालन के इतिहास–भूगोल जान सकीला। जइसे मकानमालिक, ओइसहीं किरायेदार। प्रोफेसर कालोनी, हरीजी का हाता, महराजा हाता जइसन कुछ नया बसल इलाकन के छोड़ के, कुल पुरनके बाड़न सऽ। बाबू–बजार, नवादा, मौला बाग बस नाँव लीं आ रहे वालन क अंदाज लाग जाई। बी0ए0 में दाखिला भइल रहे हमार, ओही समय एगो रिश्ता क चाचाजी के तबादला एही शहर में हो गइल। नया नया शादी आ बैंक के नोकरी। चाची क अकेलपन कटै, एहू बहाने ओह लोगन किहाँ हमरो रहे क ठेकान मिलल त लाज में रहला आ कामचल्ता होटलन में खइला से जान बाँचल।

ओह समय शहर में फ्लैट जइसन कुछ ना रहे। न अजनबियत ना तटस्थता कि बगल में कवन परिवार आ कवन लोग बा, पता ना। ओघरी देवालिये घरन के अलग करत रही सऽ। लोग अपना घरन में, किराया पर देबे खातिर, अलग घेर के स्वतंत्र इकाई बना देत रहे। चाचा का मकान में तीन–चार गो कमरा वाला सात–आठ गो फ्लैट रहे। सबका इहाँ सबकर बात ब्यौहार, आवल–गइल। चाची जतने सुन्दर रहली ओतने मिलनसार। कुछे दिन में उनका हम उमिर लइकिन–मेहरारुन के एगो क्लबे बन गइल रहे घर। हम दुपहर बाद कालेज से लवटीं त खाइ–पी के सूति जाईं। चाची हमरा के बड़का वाला हवादार कमरा दे देले रहली। खिड़की के सामने, पढ़े खातिर एगो बड़ टेबुलो रहे।

टेबुल पर राखल, टेबुल लैंप जराइ के अपना किताब–कापियन में नजर गड़वले रहनी। पते ना चलल कि कब ऊ, धीरे से आइके बगल वाली कुरुसी पर बइठ गइल रहे। टेबुल के ठक् ठक् आ गला खँखरला का आवाज से ओने तकनी। आँखिन में उदंड मुस्कराहट

लेले बोलल, "नाम हमार माधुरी... माधुरी गुप्ता!"

– 'जी....' हम अभी जबाब सोचत रहनी।

– "'बाबी' देखले बाड़ऽ? प्रेम चोपड़ा इयाद बाड़न नू। हमार नाँव प्रेम... प्रेम चोपड़ा ... हा हा हा...!"

'अजीब लइकी बिया।' हम सोचनी, वइसे एके चाची सँगे कई बेर देखले रहनी, कबो कबो बगल का बालकनी में कपड़ा पसारत खा भा घूम–घूम के किताब पढ़त। कहनी, 'हँ हँ जानत बानी। बगल वाला घर में रहेलू नऽ!'

– 'अरे, मुहल्ला का कूल्हि लड़कियन पर नजर राखेलऽ का? देखे में तऽ सिधवा लागत बाड़ऽ तूँ!'

– 'माधुरी!' तब्बे चाची के आवाज सुनाइल।

हम कमरा के बत्ती जरा दिहनी। सलवार कुर्त्ता पहिरले ऊ सोझिया शान्त अस बइठल रहे।

– 'ओह, त, तूँ इनका कमरा में आ गइलू?' चाची का हाथ में चाय बिस्कुट क ट्रे रहे। ऊ टेबुल पर चाय धरत बिस्तर पर बइठ गइली। "ई विभू हउवन, हमरा चचेरा जेठ जी के लइका।"

ऊ हमरा ओर अइसे तकलस जइसे पहिले–पहिल देखत होखे। साँवर सलोनी, सुघराई क मूरत लेखा।

अक्सरे ऊ हमरा घरे आ जात रहे। छत त हमन क एक्के रहे। एक सिरा के सीढ़ी हमरा फ्लैट में उतरे, दुसरा ओर क सीढ़ी ओकरा घर का तरफ उतरे। चाची का उमिर से पाँच साल के खाई के पाटत उनकर हमजोली बन गइल रहे। हमरा घर के अपना जागीर लेखा बूझ के कवनो अलमारी खोल देव, हमरा बिस्तर पर पालथी मार के बइठे आ कवनो किताब के पन्ना पलटे लागे। हमरो अब बुरा ना लागे। तैजुब तब होखे, जब सबका सामने ऊ सोझिया आ अनजान बनि जाव। गजब क ऐक्टिंग रहे ओकर, हम अक्सर सोचे लागीं!

XXXX XXXX XXXX

बी0ए0 आनर्स के दुसरा साल हमरा पर कोर्स का पढ़ाई के दबाव कुछ ढेरे बढ़ गइल रहे। दुपहरिया बाद सुति के उठनी त देखनी कि ऊ अलमारी खोलले, हमरा ओरी अजीबे ढंग से ताकत रहे, "एम्मे त खलिसा साहित्यिक किताब आ पत्रिका भरल बाड़ी सऽ। तूँ मैथमेटिक्स आनर्स में ई कुल पढ़े खातिर टाइम कइसे निकाल लेलऽ?" ऊ टेबुल का लगे धइल कुर्सी पर

बइठत सवाल दगलस।

हम उनीने तकनी, ओकरा हाथ में, टालस्टाय के किताब 'कज्जाक' रहे। 'ई कइसन सवाल भइल? अरे हमके साहित्य पढ़ल अच्छा लागेला अउर का?' हमरा मुँह से निठोठे निकलि गइल।

– 'तब साहित्य में एडमिशन काहे ना लिहलऽ?'

– 'बस बाबूजी आ माई के लागल कि साइन्स पढ़ले में ओ लोगन क इज्जत बढ़ी। हमार त एकदमे मन ना रहे!'

– 'हूँऽऽ.... ऊ लमहर साँस छोड़लस, "हमार मन तऽ साइन्स पढ़े में लागेला। कमेस्ट्री त हमरा लउकेले। पता बा, इन्टर का परीक्षा में केमेस्ट्री में हम टाप कइले रहनी।'

– 'अच्छा?' हम अविश्वास से भरल रहनी।

– 'अच्छा मतलब? विश्वास नइखे होत। रुकऽ....' ऊ तेजी से दउरत निकल गइल। फेरु तनिके देर बाद अपना मार्कशीट के कापी लेके लवटल।

– 'अरे, हम सपनो में ना सोचले रहनी कि केमेस्ट्री में एतना ढेर नंबर आइल होई।' अचरज भरल हम कहनी।

– 'तब्बो हम 'आर्ट्स' पढ़ेनी!'

– 'काहें?'

– 'लइकी हईं नू! पापा के लागेला कि कवन नोकरी करे के बा? बस कइसहूँ बी0ए0 पास होखे चाहीं! हमार मन रहे कि कालेज में लेक्चरर बन के केमिस्ट्री पढ़इतीं।' फेर एगो अजीब अवसाद भरल आवाज डूबत चल गइल माधुरी के।

– 'ई समझौता हमन के जीवन के अध्याय हऽ। हमरा के देखऽ। बी0एच0यू0 में इंग्लिश से एम0ए0 कइनी फर्स्ट क्लास में। पी–एच0डी0 करे का पहिले बियाह हो गइल। बाबूजी क चलल रहित त हम एम0ए0 ले ना कर पवले रहितीं। पापा के छोड़ऽ, इनहूँ के हमार नोकरी कइल पसन्द ना रहे... बस।' पता ना चाची कबसे हमहन क बात सुनत रहली, फिर कहली, 'माधुरी के महतारी त एकरे बियाहे के चिन्ता में घुलल जात बाड़ी!'

– 'अब्बे से? बड़ शहरन से साइत अइसन ना होला। लइका लइकी में फर्क त नाहियें होला।' माधुरी जइसे वर्तमान से भविष्य में जात बोलल, 'हम तऽ अपना बेटी का साथे अइसन ना होखे देब!'

– 'शादी भइल ना, आ बेटी क चिन्ता अब्बे से..., चाची मुस्कियात माहौल बदले के कोसिस कइली।' फिरु आगा कहली, 'माधुरी के त शेरो–शायरी के बहुत सवख बा।'

– 'करे कहाँ?' 'ऊ त कालेज जात खा ट्रक का पाछा लिखल शेर पढ़ के कापी में नोट कर लेनी।'

– 'तबे नऽ शेरो–शायरी से माधुरी के कापी भरल पड़ल बा।' चाची बतवली तऽ तनी मनी झेंपत माधुरी मुस्कियाये लागल रहे।

XXXX XXXX XXXX

एने कई दिनन से माधुरी लउकल ना रहे। हम चोर–नजर से सामने का बालकनी का ओर देखनी त बाहर से भितरी ले एकदम सून लागल।

– 'ऊ गाँवें गइल बिया अपना माई का सँगे!' चाची के आवाज पाछा से आइल– 'अगिलो हफ्ता में ना लवटी!'

– 'हम त अइसहीं ओने देख लिहनी हाँ।' हम पकड़ाइल चोर लेखा बहाना बनवनी।

– 'हमके लागल हा कि तूँ माधुरी के खोजत रहलऽ हा!' चाची का मुस्कराहट में हास्य–व्यंग दूनों क मिलल जुलल भाव रहे।

XXXX XXXX XXXX

सबेरहीं तेज घाम फइल गइल रहे। फगुवा में अभी हफ्ता–दस दिन का देरी रहे तब्बो एतना गर्मी कि धाह लागे। चाची गाँव चल गइल रहली आ चाचा बैंक। हम जल्दी–जल्दी सब कमरा बन्द कइ के बहरी के दरवाजा पर ताला बन करे जात रहनी कि छपाक् पूरा देहिं पानी से नहा गइल।

देखनी कि खाली पानी ना, रंगो रहे। पूरा कपड़ा रँगा गइल रहे। ऊपर तकनी त हाथ में बाल्टी लेले माधुरी खिलखिलात लउकल। हमरा के खीसि में देख के माधुरी सहम गइल रहे। हम गुस्सा में दउरत छत पर पहुँचलीं त हमार तेवर देख के ओकरा चेहरा क रंग उड़ि गइल।

– 'हमार कालेज गइल केतना जरूरी रहल हा, आ दोसर कवनो प्रेस कइल कपड़ो नइखे हमरा लगे ए बेरा!' खीसि में हमार आवाज ऊँच हो गइल रहल। ऊ दूनों हाथ जोर के फेरु अपना ओठे अंगुरी धइले, चुप रहे के इशारा कइलस आ याचना–भाव में धीरहीं से बोलल– 'माई बिया नीचे...!'

हम पता ना का–का भुनभुनात नीचे घर में चलि अइनी। ओघरी साइत ज्यादा खीस में हमरा समय के नजाकत समझ में ना आइल।

जून क महीना खतम होत रहे। फाइनल क परीक्षा लगभग खतम होत रहे। ओघरी आनर्स दुइये बरिस क होत रहे! हमरा खातिर ई अनचाहल–जतरा खतम भइला लेखा रहे काहें कि नदी आ नाव दूनों बेमन के रहलो पर यात्रा बस अतने खातिर करे के रहे, जवना से अपनन के खुसी मिले। हम हलुक हो गइल रहनी। गाँव

में शादी–बियाह के मौसम उफान पर रहे ओघरी, हमहूँ गाँवें जाये खातिर आपन सब समान समेटे बटोरे लगनी।

छुट्टी बाद गाँव से लवट लइनी। बहुत दिनन से माधुरी ना मिलल रहे। लउकबो करे त नजर फेर के निकल जात रहे। कभी कभार बालकनी में उदास खड़ा लउके, बाकिर हमसे अनजान लेखा। एकाध बेर हम बोले के कोसिसो कइनी त ऊ अनसुना क दिहलस।

– 'ओह, त तूँ काहें एतना बुरा तरीका से बोल दिहलऽ ओकरा से? आखिर रंगे त डलले रहे! होली में रंगे नू परेला।' हम चाची के डाँट सुनिके अपना के कोसनी।

प्रैक्टिकल–परीक्षा खतम भइला पर दिमाग हलुक हो चुकल रहे। समयाभाव में ना पढ़ल गइल उपन्यास 'राग दरबारी' आलमारी में खोजे लगनी त पता लागल कि ऊ कुछ दिन पहिले माधुरी ले गइल रहे। चाची बतवली– 'ऊ पूछत रहल हिया कि तहरा कब गाँवें जाये के बा, ऊ काल्ह ले लवटा दीही।'

– 'तऽ ऊ घरे आवेले का?'

– 'हँ, बाकिर तहरा से कतराले। जानत बाड़ऽ काहें?'

हम होली का समय वाली घटना बतवनी।

– 'हमके मालुम बा, माधुरी बतवली, ऊ हँसतो रहली। "जानत नइखऽ तूँ। ओकर शादी तय क दिहल गइल बा। होली का हफ्ता भर बाद, ओकर छेको हो गइल" चाची कहली।

– 'हूँऽऽ!' हमरा समझ में ना आइल कि का कहीं? तबो पुछलीं, 'ऊ लड़िकवा का करेला?'

– 'एगो बड़ किराना के दुकान बा शहर में ओकर, जवना से बियहवा तय बा!' मधुरी के माई बहुत खुश रहे।

– 'कहाँ ई पढ़ल–लिखल समझदार लड़की, एकरा से ना पूछल गइल?'

– 'के पूछेला, शहरन में रहे वाला संभ्रान्त परिवार का लइकियन के साइत इहे नसीब हऽ।'

फिर हमरा आ चाची का बीच एगो चुप्पी में घुलत उदासी देरी ले घुलत रहे।

साँझ गहिरइला पर हमहूँ घरे लवटि के अइनी। गाँव जाये से पहिले दोस्त आ परिचितन से भेंट करे चल गइल रहनी। अब पता ना कब वापिस लवटे के होई। घर में ढुकते चाची बतवली कि माधुरी हमार किताब वापस टेबुल पर धऽ गइल बिया। किताब देत खा कहुवे कि उनके बता देइब।

अबके बिछड़े तो शायद कभी ख्वाबों में मिलें
जैसे सूखे हुए फूल किताबों में मिलें!

किताब में, एको पूरा पन्ना पर सिर्फ इहे दू लाइन लिखल रहे। कागज पूरा तह कइ के किताब का बीच में राखल रहे।

– 'हमहूँ देखीं, का लिखल बा?' चाची हमरा हाथ से झपट लेहली कागज।

– 'अरे ऊ ट्रक का पाछा लिखल उतार लेले होई। डाल देले बिया किताब में!' हम झेंप मेटावत कहनी।

चाची के चेहरा गहिर उदासी में तनत चल गइल। ऊ कई बेर लिखल लाइनन के पढ़ली। बुझाइल जइसे उनकर आँख लोरा गइल होखे, 'पता ना केकरा खातिर, एह घर से अतना गहिर नाता जोर लेले रहल हिया ई बेचारी।'

– 'मूर्ख बाड़ऽ तूँ बिभू...!' चाची खिसियाइल पर्ची हमरा हाथ में थमा दिहली!

XXXX XXXX XXXX

– 'मूर्खे ना... गदहा बाड़ऽ तूँ! निवेदिता सोफा पर ढहि गइल।

– 'तूँ, ओह लड़की के समझिये ना पवलऽ। आ हम त तहार पहिल आकर्षन पुछले रहनी, तूँ त पूरा कहनिये सुना दिहलऽ! ओफ्फ, तूँ समझिये ना पवलऽ। केहू ना समझ पाई। न हमनी का प्रेम के, ना उदासी के, ना सपना के।

'जानत बाड़ऽ लइकी खाली पेटे में ना मारल जाली सन। ऊ कई बेर मरेली सऽ, अपनन का हाथे। उन्हन के सबसे ढेर खतरा आपने कहाये वालन से होला!' खीस आ अवसाद में ऊ आपन आँखि बन्न कर लेले रहे।

••

कहानी

चल खुसरो घर आपनो...

डॉ0 भगवती प्रसाद द्विवेदी

बँगला खचाखच भरल रहे। सभ लोग आ–आके बइठत जात रहे। पुरनिया लोग बतावेला कि बहुत पहिले इहाँ एगो दोसर बँगला रहे। तब फिरंगी हुकूमत रहे। गाँव के मुखिया रहलन राम टहल बाबा। उन्हुके देखरेख आ सदारत में बँगला के मए कार्रवाई होत रहे। कलक्टर, दरोगा, सिपाही, जे केहू गाँव में आवत रहे, सभसे पहिले ओही बँगला में बइठावल जात रहे। खूब जमिके आव–भगत होत रहे। रामटहल बाबा घुलि–मिलिके बतियावसु आ तब गाँव के जवना अदिमी से भेंट करेके होत रहे, तत्काल उहँवें बोलावल जात रहे। गाँव के नामी लठइतो लोग रात–दिन बाबा के सेवा–टहल में लवसान रहत रहे। गाँव के कवनो झगड़ा–झंझट, चोरी–चमारी, लूट–खसोट के ममिला के फैसला बाबा पलक झपकते सुना देत रहलन। साज–सज्जा आ साफ–सफाइयों के नजरिया से बँगला नायाब रहे। पता ना कब, बाबा के सरगवासी होते ऊ बँगला मटियामेट हो गइल आ ठीक ओही जमीन पर ई बरंडा बनि गइल। बाकिर ई बरंडा आजुओ ओह बँगला के इयाद ताजा करेला। गाँव के लोग अब एह बरंडे के बँगला कबूल कऽ बइठल रहे।

सभ पंच बँगला में बइठि चुकल रहलन। मुखिया जी आके अपना आसन पर विराजमान भइलन। हाथ जोरिके सभ लोग उन्हुकर पवलग्गी कइल। रामटहल बाबा के नाती लागेलन बलेसर बाबा। आज काल्ह गाँव के मुखिया। इंसाफ खातिर मशहूर। भला होखबो करसु त काहें ना! न्याय करेके बेसकीमती सूझबूझ उन्हुका विरासत में जे मिलल रहे!

दु कतना दिन से गाँव में जवन चरचा के बिसे बनल रहे, ओही के आजु फैसला होखे वाला रहे। लरिका–सेयान, बूढ़–जवन–सभ केहू रस लेत रहे। जहँवें दू–चार लोग जमा होत रहे, बात के बतंगड़ बनत देरी ना लागत रहे। सउँसे गाँव खातिर ई एगो अजगुत मसला रहे। सभ लोग अपना–अपना तरीका से तरक–दलील देत रहे। आपन डफली आपन राग अलापल जइसे सभका खातिर निहायत जरूरी हो गइल रहे। खेत–खरिहान में, बजार–दोकान में– हर जगहा खाली एकही चरचा रहे आ ऊ चरचा रहे छितेसर काका के।

छितेसर काका एगो कोना में सिमटल–किकुरल बइठल रहलन। उन्हुकर बेचैन निगाह एकाएक देवकली पर जाके टिकि गइल। उहो डबडबाइल आँखि से उन्हुके के टुकुर–टुकुर ताकत रहली। उन्हुकर दूनों बेटा कबो अपना माई के आ कबो भीड़ में बइठल–ठाढ़ लोगन के कौतुक से निरेखत रहलन स। छितेसर काका के आँखि छलछला अइली स। दोसरा ओरि मुँह फेरिके ऊ आँखि में भरल पानी के साफ कइलन। एकाएक थोरकी देरी का बाद होखे वाला फैसला के उन्हुका पूर्वाभास अस भइल आ ऊ सिर से पाँव ले काँपि उठलन। लिलार प पसेना के बून चुहचुहा अइली स। मन में आइल, जे अबहिएँ जाके ऊ देवकली के बाँहि थाम्हि लेसु आ अपना दूनों बेटन का सँगे परिवार आ गाँव–समाज के दरकिनार करत निकलि भागसु – सभका निगाह से दूर – बहुते दूर।

लोगन के ठकचल भीड़ देखिके उन्हुका आँखि में ऊ दिन अचके घूमि गइल। उहँवों ओह दिने अइसहीं खचाखच लोग–बाग जुटल रहे। उहँवाँ के मुखिया गरजत रहे। पंच गलफर फारि–फारि के चिचिआत रहलन स। सभकर खीसि सातवाँ आसमान प जा चढ़ल रहे। ओह इलाका में ओइसन अनर्थ! तमाम लोग एक–दोसरा के मुँह दुखिके मजा लेत रहे। देवकली के घिसिया के सभा में हाजिर कइल गइल रहे। ऊ पाप कइले रहे, जवना के सजाइ ओकरा भुगुते के रहे। अमरेश ओकरा सँगें छल कइले रहे। ओह दूनों के खुलेआम चलत पियार–मनुहार, रात–बिरात बेहिचक मिलल–जुलल आ साँझ–सवेरे एके सँगें घूमल–टहरल। दूनों अड़ोस–पड़ोस के आँखिन के किरकिरी रहलन स। बाकिर जब बियाह के चरचा छिड़ल, त एगो निसबद रात खा अमरेश एगो चिट्ठी छोड़िके हरदम–हरदम खातिर नव–दू–एगारह हो गइल, ओकरा के दगा दे गइल। अपना पाती में ऊ आपन अलचारी जाहिर कइले रहे कि ओकरा बियाह–शादी में इचिकियो बिसवास नइखे, कि ऊ ताजिनिगी छुट्टा साँढ़ बनल रहल चाहत रहे।

देवकली खत बाँचिके आपन कपार पीटि लेले रहे। अमरेश ओकरा से बिसवासघात जे कइले रहे! ऊ चिकरि–चिकरि के, चिचिआ–चिचिआ के पूछल चाहति रहे कि आखिर ओकरा होखे वाली संतान के का होई, कि ओकरा पाप के का कवनो दीगर मरद कबूल करी? बाकिर ऊ कहबो करे, त केकरा से? कवन मुँह लेके?

देवकली से अधिका महल्ला के लोगे फिकिरमंद हो उठल रहे। ओकरा के ढाढ़स बन्हावे आ कवनो विकल्प ढूँढ़े के, के कहे, अब त नवही से लेके बूढ़ ले– सभ केहुए ओकरा के कोसे लागल रहे। सभकर नफरत–भरल शरारती नजर ओकरा देह के टोह लेबे खातिर रेंगनी के काँट–अस गड़ि जात रहे आ देवकली

भीतरे–भीतर तिलमिला उठति रहे। एक–एक कऽके सभकर चलावल सवालन के तीर ओकरा जिगर के छलनी कऽ देत रहलन स। तब कवन माई के लाल ओह पापिन के हाथ थाम्हित? राधा बनिके किसुन–कन्हैया का जबरे रास रचावत त खूब रुचत होई, बाकी अब के ओकरा पाप के हकदार होई? बोलु...! आ तब महल्ला के बदनाम करे वाली देवकली के सजाइ भुगुते बदे सभा में घिसिया के ले आइल गइल रहे। सभकर एके गो सवाल रहे कि ओकरा होखे वाला बुतरू के बाप के रहे?

छितेसर काका अतीत से वर्तमान का ओरि पलटलन। गरमागरम बहस जारी रहे। गाँव के तमाम तमाशबीन लोग 'चिरई के जान जाय, लइका के खेलवना' कहाउत के चरितार्थ करत रहे।

छितेसर काका के ऊ दिन फेरू बरबस इयादि के झरोखा पर नाचे लागल। उहँवों के सभा में लोग अइसहीं दहाड़त रहे। दोसरा के अलचारी में खूब दहाड़े आवेला पंचन के। ओह दहाड़ के गूँज थाना में चहुँपल रहे। तब छितेसर काका ओही थाना में सिपाही रहलन। उन्हुकर रोआँ–रोआँ गनगना उठल रहे, नस तना गइल रहे। एगो अबला के आबरू के चीर खींचे वाला अतना दुरजोधन! एगो मरद ओकरा से दगाबाजी कइलस त का इहाँ के बाकी नवहीं हिजड़ा बाड़न स? उन्हुका लाल–लाल आँखिन में जइसे खून के थक्का जमि गइल रहे। दूगो सिपाहियन का सँगें जब ऊ मोंछि अइँठत सभा में हाजिर भइलन, त ओह घरी देवकली खातिर लोहा के छड़ लाल कइल जात रहे।

ऊ मोंछि पर ताव देत दहड़ले रहलन, "एह लइकी के पाप के भागी ई खुद ना, बलुक ऊ छिछोरा अमरेशवा बा, जवन एकरा के दगा देके चम्पत हो गइल। एगो हिजड़ा त एह अबला के इज्जत का साथे खेलवाड़ कऽ के गइबे कइल, बाकिर हम त समुझत बानीं कि इहवाँ बइठल–ठाढ़ तमाम नौजवान हिजड़े बाड़न स।" फेरु ऊ आपन आखिरी निरनय सुनवले रहलन, "देवकली के हाथ थाम्हे खातिर हम तय्यार बानीं। अगर ऊहो राजी होखे त बोले! आजुए साँझ खा बियाह के मुहूरत बा।"

छितेसर काका के बात सुनिके सभ केहू हैरत से उन्हुका तरफ टुकुर–टुकुर एकटक देखे लागल रहे। कतहीं ई सिपहिया पगलाइल त नइखे? मुखिया जी खूब समुझवलन–बुझवलन कि देवकली पापिन ह, कि अमरेशवा का साथे खुलिके ई गुलछर्रा उड़वले बिया, कि ऊ एह कुलटा के हाथ कतई मत थाम्हसु। बाकिर ओह लोग के मए तीर निष्फल साबित भइल रहे। छितेसर काका अपना बात पर अटल रहलन आ बिलखत देवकली उन्हुका गोड़, से लपिटा गइलि रहे।

साँझ खा जब छितेसर काका के बियाह के बरियात सजि–धजि के निकलल, त सउँसे कसबा में उन्हुके बहादुरी के चरचा छिड़ल रहे। सड़क के एँड़ा–गोएँड़ा ठाढ़ मरद–मेहरारू उन्हुका के देखे खातिर आतुर रहलन।

छितेसर काका ओह घरी ई भुलाइए गइल रहलन कि उन्हुकर बियाह हो चुकल रहे, कि उन्हुकर तीन–तीन गो बेटी रहली स। लरिकाइएँ में उन्हुकर शादी रचावल गइल रहे। ललिता से कब उन्हुकर गँठजोड़ भइल, कब गवना भइल, उन्हुका इचिकियो इयाद ना रहे। भला दस–बारह बरिस के उमिरियो कवनो बियाह के उमिर ठहरल! नोकरी लागल, त ऊ केहू के अपना बियाह के बावत तनिकियो भनक ना लागे दिहलन। पुलिस इंक्वेरियो में ऊ सभकरा के समुझा–बुझा देले रहलन। सभका निगाह में ऊ कुँआरे रहलन। एह से जब शादी रचावल जात रहे, त दुलहिन देवकली के माथ एहसान से नवल जात रहे। छितेसरे काका नू उन्हुकर आबरू बचवले रहलन, नाही त पता ना ऊ कवना घाटे लगिती, भगवाने मालिक रहलन।

जब ऊ हवलदार होके रिटायर हो गइल रहलन, त देवकली आ दूनों बेटा उन्हुकर गाँव देखे खातिर ललचत रहलन स। ऊ बतवले रहलन, उन्हुकर शानदार मकान बा, नोकर–चाकर बाड़न स, चार–चार गो बैल बाड़न स, दुधारू गाइ बिया, खेती–बारी बा। कइसन होई ऊ गाँव? कइसन होइहन उहाँ के लोग? जब ऊ सपरिवार गाँव खातिर पयान कइलन आ खेत–बधार नियराइल, त लरिका अचरज से एने–ओने ताके लगलन स सभी किछु बड़ अजगुत लागत रहे। गाँव के छटा, साँचों कतना मनभावन रहे! बाकिर गाँव में ढुकते लोगन के किसिम–किसिम के बेतुका सवाल, व्यंग–बान से घाही करेवाली बात दिल–दिमाग में बेरि–बेरि हंट करे लागल रहली स।

ललिता के झुर्रीदार सूरत देखिके छितेसर काका के पहिला हाली एहसास भइल रहे कि ऊहो त उन्हुका साथे बिसवासघाते कइले रहलन। ठीक अमरेशवे लेखा। तीन–तीन गो बेटी जनमाके फेरु कवनो खोज–खबर ना लिहल... उन्हुका लागल, जइसे ऊ एगो अइसन नाइंसाफी कइले होखसु, जवना खातिर भगवानो माफ ना करि सकसु। साँचो, अदिमी जोश में आके होश–हवास ले गँवा बइठेला। बाकिर अब पछताए होत का...!

छितेसर काका का सँगे देवकली के देखते ललिता के तन–बदन में आगि लागि गइल रहे। अपना सोझा सवति के साक्षात् खाड़ देखिके ऊ बिखिधर नागिन नियर फुँफकार छोड़े लागल रहली। देवकली जइसहीं गोड़ दूए खातिर आगा बढ़ली, ऊ आपन गोड़ झडहेर

देले रहली। मुकेश आ सुरेश कबो एक–दोसरा के, त कबो अपना माई–बाप के हक्का–बक्का होके देखत रहलन स। उन्हनीं के अचरज होत रहे कि पापा उन्हनीं के कहवाँ ले आके पटकि दिहलन, जहवाँ डेग धरते अइसन दुरगति!

छितेसर काका अपना औकात आ समझदारी–भर ललिता के खूब समुझवलन कि अब त तीनों बेटियन के बियहा गइला से घर में उन्हुका सेवा–टहल खातिर केहू नइखे बाँचल, कि ललिता के बाद खानदान के बीया बुताए वाला रहल हा....

"त का एह सवति के बेटा हमरा घर–दुआर के हकदार होइहन स? एह नीच के औलाद, जेकरा जात–इज्जत के कवना ठेकाने नइखे!" ललिता के लाल–लाल आँखि छितेसर काका के आँखि में धँसे लगली स।

"ई मत भुलइहऽ ललिता कि देवकलियो का साथे हमार शादी वैदिक रीति–रेवाज, मंत्रोच्चार आ नगरवासियन के मौजूदगी में धूमधाम से भइल रहे। ई दूनों लइका हमार आपन बेटा हउवन स–ठीक तहरा तीनों बेटियन लेखा..." एकाएक छितेसर काका खुद के सम्हारि ना पवलन आ कड़कि के जवाब दिहलन।

"त का मुकेशो तहरे बेटा हऽ? दोसरा के पाप के आपन कहत शरम आवे के चाहीं, छितेसर!" एकाएक उन्हुकर बड़का भइया धड़धड़ात भीतर आइल रहलन आ बात काटि के दहाड़े लागल रहलन।

छितेसर काका के मन परल– परमेसर भइया एक हाली उन्हुका से भेंट करे खातिर शहर गइल रहलन आ उहवाँ उन्हुका बिसे में सभ किछु खुलासा मालूम हो गइल रहे।

"बाकिर हम एगो अबला के आबरू के रच्छा कइलीं, त कवन अनर्थ कऽ दिहलीं! देवकली ठगाइल रहली, ई बात साँच ह। बाकिर हम इन्हिका के कोठा पर जाए से रोकि लिहलीं, त कवन पाप कऽ दिहलीं!" छितेसर काका अपना भइया के आड़े हाथ लेत कहलन, "हम समुझत बानीं कि तूँ अइसन काहें कहत बाड़? एही से नू कि हमार ई बेटा इहाँ के जगह–जमीन में हिस्सेदार मत बने पावऽ स!"

"छितेसर! जबान पर लगाम कसऽ! गाँव में पंचाइत बा, पंच बाड़न, मुखियाजी बाड़न। उहे लोग एकर फैसला करी। हम तहरा कल्यान के बात कहत बानीं आ तूँ बाड़ऽ कि..." परमेसर व्यंग भरल मुसुकी काटत कहलन।

"कइसन पंचाइत आ कइसन पंच?" छितेसर काका त पंचाइत के इंसाफ से पहिलहीं से वाकिफ रहलन।

"ना छितेसर! गाँव में रहे के बा, त पंचाइत के मानहीं के परी। पंच परमेसर होलन।" पाछा खाड़ सुरेन्दर चाचा के आवाज कँपकँपाइल रहे।

... आ छितेसर काका के लाख आनाकानी के बावजूद आजु पंचाइत बइठिए गइल रहे। सभ लोग कौतूहल भरल नजर से एक–दोसरा के देखत रहे। सभ केहू के फैसला के इंतजार रहे।

खैर, छितेसर काका के आखिर जवना बात के अनेसा रहे, उहे भइल। पंच देवकली के रखेलिन साबित कऽ दिहलन आ ओकरा के लरिकन समेत गाँव से निकाल–बाहर करे के फैसला सुना दिहलन।

"ठीक बा, हम अपना लरिकन का सँगे अबहिएँ चलि जात बानीं। बहिन! राउर सोहाग अमर रहो। इन्हिकर खेयाल राखबि। खेत–बारी, घर–दुआर– सभ रउरा के मुबारक होखे। कतहीं भिखियो माँग के त...." देवकली के आँखिन में एकाएक बाढ आ गइल।

"ना–ना, देवकली! अइसन कबो ना हो सकेला। हमार अब इहवाँ के बड़ले बा! हम ललिता के नजर में गिरि चुकल बानीं। इहाँ हमार जिनिगी एको छन ना टिकि सके। हमहूँ तहरा सँगे चलब। अबहिएँ चलऽ!" छितेसर काका आपन आँखि पोंछत देवकली के बात काटि के आपन आखिरी निरनय सुनवलन।

"ना, रउआँ हमरा के एह हाल में छोड़िके मत जाईं। रउआँ के हमार किरिया!" ललिता रोवत–बिलिखत अचके छितेसर काका के गोड़ से लपिटा गइली।

छितेसर काका गोड़ छोड़वलन, दूनों बेटन के हाथ थम्हलन आ गमछी से आँखि पोंछत देवकली का साथे चलि दिहलन।

मुखिया जी आ पंच खाड़ होके अचरज से उन्हुका पर निगाह टिका दिहलन। किछु लोग पाछा से व्यंग–बोल फेंकल, बाकिर ऊ ओह बातन के इचिकियो परवाह ना कइलन।

थोरकी दूर आगा बढ़िके ऊ एक हाली पाछा मुड़िके देखलन। ललिता उन्हुका के एकटक ताकत ठाढ़ रहली। उन्हुकर झुर्रियन से भरल चेहरा लोर से सराबोर हो गइल रहे। छितेसर काका समुझि ना पावत रहलन कि ललिता के आँखि के लोर सवति के गाँव छोड़िके जाए के खुशी में बहत लोर रहे आ कि मरद के वापस लवटि जाए के वियोग में विपदा आ बिछोह के लोर? चिरई के जान जाय.... ऊहो गमछी से आँखि पोंछलन आ हाली–हाली आगा डेग बढ़ावत बुदबुदाए लागलन– चल खुसरो घर आपनो, रैन भई चहुँदेस्!

••

शकुंतला भवन, सीताशरण लेन, मीठापुर, पटना

कहानी

भरम टूट गइल!

अजय कुमार

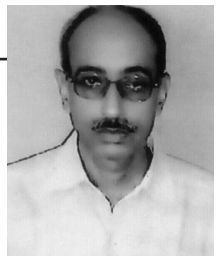

अब जिनिगी में शांति आ आराम के त नामे नइखे रह गईल। रोज रोज के भागमभाग आ दौड़ा–दौड़ी से, समय के अभाव से मन चंग हो गइल बा। लगातार चंग प चढ़ल रहला से लोग कहेला कि देह ढहे लागेला, ठीके कहेला लोग। एगो ऊ समय रहे कि स्कूल आ खेल के सिवा दोसर कवनो चीझ के चिंता ना रहे। सबेरे स्कूलो में कागज के जहाज बनऽता आ एक घंट त रोजीना खेल के होत रहे, जवना में खेल माने गेंदा। चार साढ़े चार बजे लवटऽ त हाली–हाली खाइ के तिलंगी उड़ावऽ ना त फिर गेंदा के खेल जमत रहे। रात होखे दू घरी त घरे लवटला प दादी कहे कि 'जवना झरेला लोग जवरे बहार काटल रहले हा, तवने घर जो!' हाली–हाली हाथ गोड़ धो के ललटेन बार के पढ़ाई चालू होखे। पानी के दिन होखे त फतिंगा उठँस, त पियाज काट के रखाव कि भगिहें स बाकी ऊ काहे के भागें जा सऽ? त बिलाई के भागे सिकहरे टूटे, जल्दिए छूट्टी हो जाये। खाइ के सूत रहऽ। ओह घरी बड़ा पानी बरसे, रात–रात भर बरसे आ ओह घरी बड़ी नीन परत रहे। ऊ नीन आज कूलर आ एसी में नइखे परत। जिनिगी के रसे सूखत जात बा। दुवार दलान प केहू बइठत नइखे ना केहू के केहू से कवनो मतलबे रह गइल बा। सभे अपने में लीन बा। एही सोच–विचार में डूबत उतरात रतन अपना कुर्सी प कइठल सीलिंग ताकत रहन आ उनुकर कम्प्यूटर 'सेभ–स्क्रीन' मोड में चल गइल रहे, तबले सिन्हा जी दूरे से बोलले– 'काहो, का सोंच में डूबल बाड़ऽ? बदली ठीक जगह न नइखे भइल त तनी साहेब से भेंट काहे नइखऽ करत? सिन्हा जी रतन के बड़ा मानेलन। रतन सिन्हा जी के भइया कहेलन। सिन्हाजी एह बैंक–शाखा के बचत–खाता विभाग के हेड हवन। सिन्हा जी के साफ कहनाम बा कि रतन के दरद के बेमारी त बड़ले बा आ नयकी शाखा में जहवाँ उनुकर प्रमोशन के बाद बदली हो गइल बा तहाँ ना डाक्टर बा, ना कवनो सुविधा बा, ना रोड बा, ना गाड़ी चले, ना कवनो दउरी दोकाने बा। कई एगो साथी–समाजी के कहला–सुनला के बाद रतन साहेब से मिले जाये खातिर अपना आप के तइयार कइलन।

दरद से काँखत रतन जब जिला मुख्यालय के सीढ़ी चढत रहन त मन में का जाने काहें दो धुकधुकी अस बरत रहे। साइत भविष्य के अनहोनी के आभास उनुका हो चलल रहे। सीढ़ी चढ़ते जसहीं बरामदा में घुसले, तसहीं संपर्क–पदाधिकारी के केबिन भीरी साहेबे पर नजर परल। रोबीला चेहरा, नाटा देह–धाजा, सूट–बूट झरले साहेब उनुका सोझा ठाढ़ रहन। मंजूर हसन उनुकर ब्रीफकेस लेले पाछा–पाछा रहन। बुझाय साहेब अपना क्वार्टर प जाये खातिर निकल चुकल रहन। सामने परते रतन चहलन कि परनाम क के पँजरा हट जास बाकि ई होना पवलस। ऊ आपन बदली रोके वाला चिट्ठी पहिलहीं साहेब भीरी पेठा देले रहन आ उनुका ई मालूम ना रहे कि मामिला भीतरी–भीतरी कतिना गरम भ गइल रहे। परनाम करे खातिर रतन के हाथ अबहीं उठले रहे कि साहेब बोल उठले– 'कहाँ घूमऽ तानी?' रतन– 'आइल त रउए भीरी रहीं, बाकी रउआ निकलत बानी त बाद में भेंट कर लेब।' साहेब– 'का कहीं का कहे के बा?'

रतन सोंचलन कि अब तऽ कहहीं के परी। 'सर, हमार तबियत गड़बड़ रहत बा, कसाप हमरा बड़ा दिक्कत बा।' साहेब– 'रउआ मंजूरी के चि2ी देले रहीं कि ना? ई प्रमोशन रउआ स्वीकार बाकि ना? रतन चुप लगा गइले, कहसु का? ई तकलीफ रउआ काल्हे से भइल बा? रतन बोलले, 'ना सर, ई त 1993 से बा।' साहेब– 'गाभी मरलस, 22 बरिस से आरामें परल बानी त एको दिन कुछो तकलीफ ना भइल आ कसाप के सुनिये के रउआ बेमारी ध लिहलस? त ठीक बा जाईं, इलाज कराईं, रहब ओहिजे! हमार एक करोड़ के बिजनेस डुबा के कहतानी कि ट्रान्सफर रोक दीं? ई ना हो सके!'

रतन के काठ मार देलस। साहेब के भासन अबहूँ चालू रहे– 'रउआ कतिना काम करे वाला बानी से हम खूब जानतानी।' रतन के जइसे होस आइल– 'ना सर, रउआ हमरा साथे काम करे वाला जूनियर भा सीनियर लोग से पता कर लीं कि हम का करीलाँ आ का कर सकीलाँ? काम करे खातिर त हमरा हाथ में खुजली होखेला!' साहेब तर्क कइलस, 'काम करेवाला आदिमी काम छोड़ के भागे ना!' रतन प मानो साहेब के आखिरी जुमला से घइलन पानी पर गइल। रतन के मेहरारू के सुगर के बेमारी आ घर में बूढ़ खटपरू बेमरिया मतारी के जिकिर कइला से अब कवनो लाभ ना बुझाइल। साहेब जाते–जाते ईहो कह गइलन कि 'रउआ जा के खा के सुतब आ हमरा नीने ना परी। रउआ मेरूदंड में दरद होता माने कि राउर अबहीं मेरूदंड बाँचल बा, तबे नु दरद होता ना त बैंक में अब कहाँ केकरो मेरूदंड बाँचल बा?'

हतास–निरास रतन गते–गते विशाल जिला मुख्यालय के सीढ़ी उतर गइलन। ओहिजा के सभ स्टाफ अपना–अपना सीट पर ठाढ़ हो के बतकही सुनत रहन बाकिी केहू रतन के पछ में एको लब्ज ना बोलल। सभ देहचोरवा, चमचवा जवन कहियो कवनो काम नीके तरे कइले नइखन सऽ, उहे परधान बनल बाड़े सऽ। रतन के जईसे नीन टूटल, ऊ आजु ले एही गुमान में रहन

कि उनुकर कामे उनुकर सिफारिश करी, बाकी काम कइल, बैंक खातिर आठ–आठ बजे रात तकले बिना कवनो ओवरटाइम के क्लर्क होके खटल कवनो कामे ना आइल। भक् से कुल्हि भरम फाट गइल। रतन कम से कम पनरह गो साहेब के आइल–गइल देखले होइहन। आज ले कवनो जाना के डेरा प कहियो ना गइलन। केकरो झोरा ना ढोवले। बस काम से काम आ हई अंजाम? कवन–कवन साहेब का, का नीक जबून काम कइले ई का रतन ना जानसु? बाकी का मतलब? एकर इहे परिणाम? एह घरी सभ ब्यर्थ बा। आज कर्मठ उहे बा जे बॉस के निगाह में रहे, काम करे भा मत करे। दही में सही मत मिलावे, दही में दही मिलावे एकरे जबाना बा, बाकी रतन से ई सभ होई का? जे जान–समुझ के सँपर के चमचई करी ऊ साफे चिन्हा जाई आ तब जादहीं फजीहत होखे के परी। चमचई भा मरदई त खूने में होला आ जन्मे से रहेला। 'लूर–लछन बाई, मरले प जाई।' कहले जाला हारल–थाक रतन घरे लवटलन, कतिना साथी–सँघतियन के फोन कइलन, सभे उनुकासे सहानुभूति परगट कइल बाकी सभ मुँहपुराई भर रहे, अवरू कुछोना। रतन के जतना तकलीफ अपना देहिं के दरद से ना रहे, ओह से जादा बड़े साहेब के बोली आ बेहवार से रहे। ऊ जादहीं बेमार भ गइलन, बोखारो हो गइल। महीनवन बेड प परल रहले, बाकी ना केहू देखे आइल, ना बदली रूकल। महीना दिन बाद रतन ठीक होके नयकी शाखा में ड्यूटी ज्वाइन कइलन। ध ीरे–धीरे मन लागे लागल। बाकी ऊ गाँव गाड़ी के राह प रहले ना रहे ना ओहिजा रहहीं के कवनो साधन रहे। एगो बाबू साहेब कहले कि हमरे दुवार पऽ रहीं बाकी खाना हमरे घरे बनी आ ठाठ से रहीं। रउवा अपने खाए के बनाइब त हमार सिकायत होई। ई रतन के कइसे मंजूर होखे कि ऊ केकरो दुवार–दालान प रहस आ फ्री के रोटी तूरस? दोसरा ओरिया ई होइये ना सके कि प जी हजूरी करसु आ मन मोताबिक पोस्टिंग पावसु। रतन मने–मन जिला मुख्यालय में जारी सत्ता के खेल, राजनीति, करप्शन, गुटबाजी सभ से परिचित रहले। अइसहूँ ऊ खेल इन्हिका बस के नइखे, ऊ मुट्ठी बाँध के संकल्प लिहले कि अब जीवन में कवनो साहेब–सूबा भीरी कहियो ना जइहें। चाहे जवन हो जाय। दफ्तरी लोचन पुछले– 'सर काहें मुट्ठी बन्हले बानी?' तब रतन का कहसु? कहलन, 'दरद होता हो भाई! ई त उहे जानतारे कि ऊ कइसन दरद हऽ आ कतना भीतरी ले उनुका करेजा में उतर गइल बा?' ••

आनंद नगर, मोतीझील, पिपरहिया रोड,
तिवारीजी के हाता, आरा

केकर केकर याद करीं ?

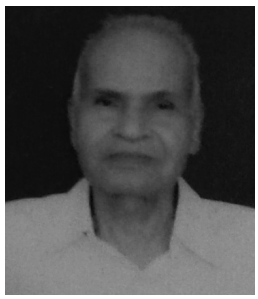

शिवपूजन लाल विद्यार्थी

केकरा - केकरा के भूलीं हम आ केकर- केकर याद करीं !

फुरसत बाटे केकरा, जे सुन ले ई करुण कहानी
कवन नेह का अँचरा पोछीं हम अँखियन के पानी
पाथर के मूरत सगरी, कहवाँ जाके फरियाद करीं !

हसरत भरल कई गो अँखिया, ताके हमरी ओर
दिल के दिया जरा के कतना आँगन करीं अँजोर
कतने महफिल सून परल बा, कवना के आबाद करीं ?

हमरा अस निरधन के झोरी, सुख के कन दुइ-चार
आस लगवले दुखिया कतने तिकवे मोर दुआर
केकरा के खुस करीं भला हम, केकर दिल नाशाद करीं !

गिनती नइखे दिल पर हमरा, केतना चोट परल बा
डेगे -डेगे दुख - अभाव के पाथर कठिन धरल बा
केतना अउर सहीं हम, आपन दिल कइसे फौलाद करीं !

जानत बानी प्रेम - मिलन के अन्त जुदाई होला
नेकी के इकराम इहाँ पर बस रुसवाई होला
स्वारथ का मण्डी में आपन अमन चैन बरबाद करीं !
केकरा - केकरा के भूलीं हम आ केकर - केकर याद करीं !!

गुंजन कुटिया, नारायणी विहार कॉलोनी,
चितईपुर, वाराणसी

आनन्द सन्धिदूत के
दू गो गज़ल

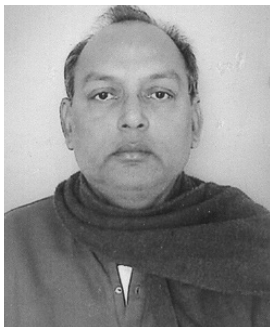

(एक)

राउर वजूद आँख में आइल फफा गइल
पानी में केहू खींच के कंकड़ चला गइल।

चारो पलक ठहरल उठल झपकल दरक गइल
शबनम से रगड़ खाइ के शबनम बुता गइल।

रहलीं कहे के अइसे कि केहू न सुने बात
केहू न मिलल हाथ में कागज धरा गइल।

नाचत कलम रहे बिना साजोसिंगार के
फूटल त कंठ अइसे कि घुंघरू बन्हा गइल।

आँखिन में आँख डाल के देखे के दिन गइल
अब सामने पड़ गइला पर पलके मुँदा गइल।

चिन्ता जनाय माथ पर हैमर चलत रहे
मन का कलानुराग के धुरमुस बना गइल।

आनन्द सन्धिदूत समय हम पर हँस गइल
हम का हँसीं, समय प' ऊ पीछे लुका गइल।

(दू)

सामने से बरक गइल केहू।
लोर बन के ढरक गइल केहू।

एक अहसास खुल के मिलला के
बन के आँचर सरक गइल केहू।

दंश केसे कहीं कहाँ ले कहीं
बन के स्मृति टभक गइल केहू।

अँगुरी-पहुँचा से बढ़, धरे गर्दन
हमसे एतना सहक गइल केहू।

हम त केहूके नाहीं गोहरवलीं
झूठे एहिजा ठमक गइल केहू।

मूँद के आँख हम बइठल तनहा
आँखि आगे चमक गइल केहू।

कांच नीनी झपक गइल जियरा
एही बिचवे धमक गइल केहू।

••

पदारथलाल की गली, वासलीगंज,
मिर्जापुर (उ०प्र०)

गाँव–जवार से माटी के महक

(भोजपुरी भूइं रतनगर्भा हवे। सन्त, महात्मा, विचारक, भाषाविज्ञानी, गणितज्ञ, संगीतज्ञ, साहित्यकार, पत्रकार, वीर सैनिकन आ राजनेतन के जनम-करम के भूमि भोजपुरी क्षेत्र का गौरव आ गरिमा के देस-विदेस जनले-पहिचनले बा। छपरा, आरा, सीवान, बक्सर, गाजीपुर, मऊ, देवरिया, गोरखपुर के दिल का रुप में धुकधुकाए वाला जिला बलिया त, महर्षि भृगु बाबा, गर्ग, गौतम आ दर्दर जइसन मुनियन के तपोपूत धरती हवे। मंगल पांड़े का जरिये आजादी के बिगुल बजावे आ चित्तू पांडेय आदि का जरिये, आजादी के - घोषणा आ पहिल झंडा फहरावे के सौभाग वाला ई जनपद कला, संस्कृति, साहित्य, विज्ञान, कृषि आ राजनीतिक अगुवाई का दिसाईं अपना सतत् कर्म आ निष्ठा से कीर्त्ति-अरजन कइले बा।

राष्ट्र का निर्माण में अपना प्रतिभा, ज्ञान, कौशल आ निष्ठा से योगदान देबे वाला भोजपुरी जनपदन के, प्रतिभाशाली, विद्वान, संस्कृतिकर्मी, वैज्ञानिक, अर्थशास्त्री, प्रशासनिक अधिकारी आ अकादमिक लोगन का बारे में, भोजपुरियन के जाने के चाहीं- खास कर ओह लोगन का बारे में, जेकरा अपना भूमि, भाषा आ समाज से जुड़ाव आ आत्मीयता बनल बा। हम अपना एह विचार के ध्यान में राखत, एह नया स्तम्भ में एही माटी के महक का रूप में भोजपुरिया गाँव-जवार से अपना प्रतिभा आ मेहनत से आगा बढ़ल कुछ खास लोगन के परिचय वाली तिसरकी कड़ी दे रहल बानी - संपादक)

व्यक्ति विशेष/ प्रोफे ० रामदेव शुक्ल

•• जन्म- ०५ जनवरी १९३८ । शाहपुर, कुरमौटा, कुशीनगर (उ०प्र०) में । शिक्षा - गोरखपुर विश्वविद्यालय से एम० ए० (स्वर्ण पदक), पी-एच०डी०। तिब्बती भाषा में डिप्लोमा (स्वर्ण पदक सहित)। शोध -'मध्यकालीन हिन्दी काव्य में चित्रित संस्कृति' एवं यू०जी०सी० शोध परियोजना में ''एकता के अन्तर्वर्ती सूत्र के रूप में ''भोजपुरी- अवधी-मैथिली व नेपाली शब्दावली का अध्ययन''।

•• आचार्य आ अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय से सेवानिवृत। यू०जी०सी० अतिथि प्राध्यापक, पूना विश्वविद्यालय (१९८२), इलाहाबाद विश्वविद्यालय(२००८), गोवा विश्वविद्यालय (२०११ और २०१३) एमेरिटस फेलो (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, स्पैंशिया विश्वविद्यालय (रोमानिया) में ब्रजभाषा कार्यशाला रिट्रीट में विशेषज्ञ का रूप में कार्य, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के ओरिएन्टल इन्सटीच्यूट में विजिटिंग प्रोफेसर (२०१४), कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी में अवधी - भोजपुरी पर व्याख्यान (२०१४)

•• <u>कथा सृजन - उपन्यास</u> -ग्राम देवता (हिन्दी आ भोजपुरी में), संकल्पना, विकल्प, मन दरपन, अगला कदम ,गिद्धलोक ,चौकठ से बाहर, बेघर बादशाह आदि
अउरी तीन कहानी संग्रह --माटी बाबा की कहानी, नीलमघर आ तीन लम्बी कहानियाँ।। हिन्दी के प्रसिद्ध पत्रिकन - सारिका, नया प्रतीक, भाषा, कल्पना, कादम्बिनी, चौरंगी वार्त्ता ,वागर्थ आदि में कहानी।।भोजपुरी में कतने कहानी रेडियो आ दूरदर्शन से प्रसारित ,''पाती'', समकालीन भोजपुरी साहित्य में भोजपुरी के कई कहानी प्रकाशित ।

•• <u>पत्र पत्रिकन में कालम</u> - ''परिवर्तन'' में 'गाँव' कालम, नवभारत टाइम्स में ''आठवाँ कालम'', सहारा समय में ''आईना'', अपनी जमीन में ''लोकदृष्टि'' ।।

•• <u>आलोचना</u> - बिहारी सतसई का पुनर्पाठ, घनानन्द का काव्य, निराला के उपन्यास, नाटककार लक्ष्मीनारायण मिश्र आदि नौ गो पुस्तक।। सम्पादन - घनानन्द, बिहारी दोहावली, छायातप, मध्यकालीन

काव्य अउर मोती बी० ए० ग्रन्थावली (नौ भाग) आदि ।

सम्मान - कथाश्री सम्मान, भारतेन्दु सम्मान ,विद्याभूषण सम्मान, भोजपुरी के सेतु सम्मान (२००६), श्रुतिकीर्त्ति शिखर सम्मान, शुद्ध विन्दु आ रेल सम्मान।

वर्तमान आवास - शीतल सुयश, राप्ती चौक के निकट, आरोग्य मन्दिर, गोरखपुर -२७३००३ (उ०प्र०)

श्री रामदेव शुक्ल जी भोजपुरी क्षेत्र के, कीर्त्तिमान पुरुष हईं ।हिन्दी, भोजपुरी में उहाँ का साहित्यिक अवदान आ रचनात्मक देन के भुलाइल ना जा सके । लेखक, कवि आ संपादक ''पाती'' का रूप में कई अवसरन पर हमके उहाँ के सान्निध्य से प्रेरणा मिलल आ गर्व के अनुभूति भइल । उहाँ के विशेष स्नेही क लाभ मिलल।

प्रोफेसर शुक्ल जी त कतने बेर विश्व भोजपुरी सम्मेलन का अधिवेशनन में मिलनी आ सभा संगोष्ठियन में सक्रिय भागीदारी कइनी बाकि हमके एगो अवसर उहाँ के घरे जाये के मिलल रहे, जवना में उहाँ का परिवार का सहज आ उदार आतिथ्य के भुलाइल कठिन बा ।

उहाँ के भोजपुरी पत्रिका ''पाती'' के सम्मानित लेखक रहलीं आ सबले बड़ बात ई कि हम जब जब कवनो विषय पर उहाँ से कहानी भा आलोचनात्मक विमर्श भेजे क निहोरा कइनी, उहाँ के रचना तत्काल मिलल । भोजपुरी लेखन पर उहाँ के हमेशा निगाह रहल आ कतने कवि लेखकन के उछाह बढ़ावत लउकनी ।

विश्व भोजपुरी सम्मेलन, बलिया के नौवाँ अधिवेशन आ पाती अक्षर सम्मान समारोह के कुछ झलकी

''पाती'' संपादक आ अतिथियन द्वारा श्री कृष्ण कुमार, श्री विजय मिश्र के पाती अक्षर-सम्मान दिहल गइल

श्री बरमेश्वर सिंह जी का अस्वस्थतावश, उहाँ क सम्मान हीरालाल 'हीरा' जी ग्रहण कइले। वरि० कवि गिरिधर करूण जी क सम्मान अलग से भइल।

"भोजपुरी के रचनात्मक आन्दोलन" विषय पर विचार गोष्ठी में बोलत
डा० अशोक द्विवेदी, पत्रकार अशोक, डा० प्रकाश उदय

''भोजपुरी के रचनात्मक आन्दोलन'' विषय पर विचार गोष्ठी में बोलत डा० नीरज सिंह, डा० रघुवंशमणि, डा० जयकांत सिंह अउर सभाध्यक्ष डा० अरूणेश नीरन (विश्व भोजपुरी सम्मेलन के राष्ट्रीय महासचिव)

कहानी

कुसुमावता कथा

प्रेमशीला शुक्ला

अपना घर का खिड़की से कब्बो काल्ह हम कुसुमावता के आवत–जात देखीं। बहुत ध्यान ना दीं। रास्ता आवत–जात सब आदमी पर केहू केतना ध्यान दी? कुसुमावता के नजदीक से देखे के आ ध्यान देबे के मौका अपना स्वारथ के चलते हमके एक दिन मिलल। वाकया कुछ अइसन भइल कि घर के काम सम्हरले ना सम्हरत रहे। हमके कवनो काम करे वाली के जरूरत रहे। ई हम जानत रहनीं कि कुसुमावती घर के काम–काज करेली। एक दिन हम उनुके रास्ता चलत रोकनीं– 'हमरा इहाँ काम करऽ?'।

सहज रूप से आपन बाति कहत हमार नजर उनुका पर पड़ल। कुछु उनुका आँखि में अइसन रहे कि हम आँखि मिलाके उनुसे बात ना क पवनीं। एँहर–ओहर ताकत हम जबाब के प्रतीक्षा करे लगनीं।

– 'का देब?' – जवाब में सवाल मिलल।

– 'चलीं, गेट का अन्दर चलीं, बातचीत हो जाई।' – हम कुसुमावता से कहत अपना कैम्पस के गेट खोलनीं। कुसुमावता पीछे–पीछे अइली। आगे चलत हमरा मन में इहे होत रहे कि ई औरत माने वाली नइखे। खैर, कुसुमावता भीतर अइली बाकी बइठली ना। खड़े–खड़े बोललीं–

– 'बताईं, हमरा पास एतना बिलमे के टाइम नइखे।'

– 'अरे दू मिनट बइठीं तऽ, कवन घंटा–दू–घंटा बइठे के बा?' – आपन गरज रहे, एसे अपना स्वर में नरमी ले आवत हम कहनीं। 'रउरे बताईं, रउरे का लेब।'

– टनक्के जवाब मिलल– 'एक काम के छः सौ रुपया। का–का करे के बा? खाली बरतन आ कि झाड़ू–पोंछा आ कि दूनों? एही हिसाब से जोड़ लीं।'

– 'रउरा तऽ दिल्ली–मुम्बई के रेट बतावत बानीं, आरे, बरतन देखि के, आ शहर का हिसाब से आपन मजूरी बताईं।' हम तनी अउरी नरमे बोलनी।

– 'का दिल्ली–मुम्बई में हाथे से काम होला आ इहाँ मसीन से?' – कुसुमावता रुखरे बोललीं।

अकाट्य तर्क रहे। हम का बोलतीं? मन में सोचाइल, के इनकर नाम कुसुमावता रखि दिहस?

रामजी के मन कि तबले बेडरूम से हमार 9–10 साल के बेटी झनकत–पटकत आइल। – 'माँ, पापा झूठ बोलेले, ई तऽ सरासर धोखा हऽ। कहले रहले, साँझी के घूमे चलल जाई आ अब चलत नइखें।'

हम कुछ कहीं, एकरा पहिले कुसुमावता बोल पड़ली– 'ये बछिया, ई कवन धोखा हऽ, आजु ना जइहें काल्हि जइहें। धोखा तऽ हमार बाप हमरा साथे कइलें। ले आके गँजेड़ी–भँगेड़ी का साथे बान्हि दिहलें, जिनगी बोझा बना दिहलें।'

कुसुमावता का अब कवनो जल्दी ना रहे। अस्थिरा के बइठ गइली, जइसे कवनो कथा–कहानी सुनावे बइठत होखें। चेहरा पर से रूखाई गायब हो गइल, ओकरी जगह दुःख छा गइल। बेटी बेडरूम में जाके फेर से बाप सँगे अझुरा गइल रहे। हम कुसुमावता के देखि के असमंजस में पड़ि गइनी। अतना जल्दी आदमी के भाव–भंगिमा बदल जाला? कहाँ गइल ऊ तेज आ तल्खी? इहे सब सोचत हम कुसुमावता के देखे लगनीं।

अगर नाक के नोंक पर अँगूठा रखिके तर्जनी के गोल घुमा दिहल जाए तऽ कुसुमावता के मुँह के 'आउट लाइन' बनि जाई। एह आउट लाइन में सही दूरी पर, सही साइज में गढ़ल आँखि–कान, नाक–ओठ, भँवहि–लिलार – माने अंग–अंग। केस से लेके गोड़ की नोंह तक – एही लेखा गढ़ाउर। एह पर रंग चंपई आ एहू पर कोमलता के पानी? उमिर झँवाँ देले रहे तब्बो सुकुवार देह हराठी–मुराठी ना भइल रहे। बाकी अँखिया में का रहे कि हम सीधा देखि ना पाईं, समुझि ना परे। शायद एही से हमरी आँखी में कुछ विस्मय कुछ कौतूहल के भाव रहे, जवना के देखि के कुसुमावता कहली– "ये तरे चिहा के का देखतानीं? झूठ नइखीं कहत। हमार बापे हमरा साथे धोखा कइलें। तीन बहिन में हम सबसे छोट हईं। दू बहिन के बिआह गोंयड़े का गाँवन में कइलें। हमरी बेरि हा–हा गइलें। कहें– हमार छोटकी बेटी फूल हऽ फूल, एही से एकर नाम हम कुसुमावता रखनीं। एके हम सहरे बिअहब, गाँव–देहात में ई खपि ना पाई।"

आगे आपन बाति कुसुमावता जोड़ली– 'चिक्कन–मुक्कन घर देख के बिअहि दिहलें, जाँचे–परिखे तऽ चाहत रहे कि भीतर के मरम का बा? बताईं, ई धोखा ना हऽ तऽ का हऽ? अब लेके हम जिनगी भर झंखीं।'

हमरे मन में कुसुमावता खातिर सहानुभूति जागति रहे। तबले बाति के पन्ना पलटत ऊ कहली– 'बोलीं मेम साहब का देब? हमरा एतना बइठे के टाइम नइखे। अच्छा चलीं पचास कमें देब, काल्कि से आइब।'

आपन बाति कहत–कहत कुसुमावता गेट से बाहर भइली। उनुका अब ना ठनगन कइला के टाइम रहे,

ना हमार राय जनला के। अजीब औरत बा। एकर तऽ रंग–ढंग पकड़ में आवते नइखे। एकरा से निबही कइसे? हमसे निबहे चाहे ना निबहे, हमरी कलम से जरूर निबही। सोचत–बिचारत हम अपना जगह बइठले रहि गइनीं।

दोसरा दिन से कुसुमावता दूनूँ जून आवे लगली। आवत के 'मेम साहेब! बरतन निकलल बा, भेंवल बा?' के सवाल आ जात के 'अब हम जातानीं।' की सूचना का अलावा ऊ कुछु बोलें ना। हम जो कब्बो बइठे के कहीं तऽ टकल–टुकल जवाब – 'बइठें के टाइम कहाँ बा मेम साहब?'

हँऽ जो उनुका रहत भर में कवनो बात–चीत हमनका आपस में करीं तऽ ओही बात के टूँड़ फाड़ के ऊ अपना जिनिगी के कवनो वाकया जरूर सुना दें। तब उनुका टाइम के कवनो कमी ना रहे। अजीब विरोधाभास। एक–दू ना अलवन विरोधाभास से भरल रहली कुसुमावता। काम करत–करत कब उनुकर रौद्र रूप, कब करुण रस, कब परिहासी रूप, कब दार्शनिक रूप सामने आ जाई, कहल ना जा सके। आ ये सब का बाद ऊ त तुरते अपना कामकाजी रूप में आ जायें। बाकी हमरा दिमाग में सारा दिन उनुकर बाति घूमल करे। हमरे खातिर सहज भइल उनुका लेखा आसाान ना रहि जाये। अपना आसानी खातिर हम एगो नुस्खा अख्तियार कइनीं। जब तक कुसुमावता काम करिहें, हमनका आपस में बात न कइल जाई। बाकी घर–त घर, कुछ ना–कुछ अइसन होये जाव कि कुसुमावता के कवनो ना कवनो प्रसंग सामने अइले बिना ना रहे। कुसुमावता अइली। सामने अखबार पड़ल रहे, देखावत पुछली– 'हई मेहररूआ काहें डण्डा से दोकान पीटताड़ी सन।'

हम देखनीं। शराबबन्दी खातिर मेहरारून के दल दोकान में तोड़–फोड़ करत रहे। हम उनुके समुझावे के कोसिस कइनीं। समुझते कुसुमावता के आँखि चऽढ़ि गइल– 'ठीक ई कुल जरूरी बा। एगो हमार जमाना रहे। घर–घर मेहरारू सराबी–कबाबी मरदे से लतिआवल जायें, लड़ें–झगड़ें बाकी अकेले–अकेले, अपने–अपने घरे में। ओसे भला कुछु होखे के रहे? अबके मेहरारू कुछु कऽ के रहिहें। हम कुछु ना कऽ पवनीं।'

कुसुमावता थहरा के बइठि गइली। चढ़लि आँखि मुरूझा गइल।

– 'का भइल?' उनुके देखिके हमरा मुँह से निकलल।

– 'भइल का मेम साहब, आपन दिन मन परि गइल। हम त गँजेड़ि का पाले परल रहनीं। घर के बरतन–बासन, रासन–पानी तक ना बाँचि पावे, बेंचि–बेचि गाँजा; बेंचि–बेंचि गाँजा। रोई–कलपीं, लड़ीं–झगड़ीं आ लात–जूता खाईं। मरद–मानुष तऽ बीसे रही। तन के कपड़ो बिकाए लागल। पहिले धराऊँ साड़ी गइस, धीरे–धीरे रोज पहिरे वालीन के नंबर लागि गइल। एक दिन अइसनो आइल कि देहियें पर के बाँचल रहल, अउर सब बेंचि के गाँजा किना गइल।'

– 'गहना–बीरवो बेचल सुनले रहनी। कपड़ा बेंचि के गाँजा किनल?' – 'ई तऽ कानें नइखे परल?'

– 'हँऽ जवन केहूका काने ना परल, ऊ हमरा सिरे परल। एके कपड़ा, फींचीं, सुखाईं आ पहिरीं।' कुसुमावता के आवाज चढ़त–उतरत रहे।

– 'हम तऽ एतनो पर राजी रहनीं। जबले कपड़ा झुराए तबले रोटी पकाईं। छोटपर टुकड़ा लपेटले रहीं। के से लाज रहे? ऊ मरदे रहलें, लइके नान्हें रहलें। बाकी एह पर कइसे राजी होइतीं मेमसाहब कि ऊहो फींचलको केहू ना छोड़े?'

– 'आंऽ?'

हमरा मुँह से एतने निकलल।

– 'गऊ किरिया जो झूठ बोलत होईं। नहा के साड़ी झरके खातिर झलनीं। अपने रसोई में चलनीं। रसोई से निकलि के देखतानी का कि साड़ी गायब। नवाहे रहे। कपार घूम गइल। हाथे के बरतन छूटि गइल।'

आवऽ आजु।

हमरा भीतर चण्डी पईसि गइली।

हमरा सामने बइठल कुसुमावता साँचो चण्डी के रूप धऽ लेले रहली। उनुकी आँखि से अँङार बरिसत रहे। सांस में धौंकनी चलत रहे।

– 'हम रसोई में गइनीं आ चूल्हि में लकड़ी लगवनीं। आजु जबले दागि ना लेब चूल्हि के आगि बुताए ना देब। आवऽ आजु।'

घरी बीतल। पहर बीतल। तिजहर के पग परल।

हम जरते लकड़ी लेके दउरनीं।

जवनो कपड़ा लपेटले रहनीं, भुइयाँ गिरि गइल।

"ई का? ईं का? – जबले मुँहें से निकले तब ले लकड़ी कपारे पर गिरि गइल रहे।"

– 'तोर ई हिम्मत। निकल हमरा घर से। केसे कहब रे, मेहरी के दागल, केसे कहब?' – 'रे बेसरमा, निकसहूँ लायक छोड़ले बाड़े?' – 'अपना ओर देखावत हम कहनीं।'

– 'ना निकसबे तऽ ले।' – कहत बेसरमा मरकीनौना कपार धइले बहरा की ओर भागल।

– 'लइके चिचिआत रहले सन। ओही कुलीन का

सँगे हमहूँ चिग्धरे लगनीं।'

कुसुमावता की आँखीं से झर–झर लोर गिरत रहे।

जेतने रोवे ओतने बोलें। कब्बो रोब में, कब्बो दुःख में।

– 'लइके रोवत–रोवत सूति गइलें। हमहूँ हीक भरि रोके आँसू पोंछनीं। का करीं, कइसे रहीं, बूझि ना पाईं। सोचनी, पहिले कुछ पहिर तऽ लीं। एक जुगुति सूझल। गुदरा पर जवन साड़ी के खोलि चढ़वले रहनीं, ओके खोल डरनीं आ ओही के पहिरि लिहनीं। लाज तऽ तोपाइल।'

कुसुमावता बोलत रहली। हमरी मुँहे में जइसे जीभि सटि गइल होखे, कवनो बात ना निकले। कुसुमावता के बाति आगे बढ़ल– "अब लगनीं अगोरे। सांझि भइल– राति भइल– बिहान भइल– फेर सांझि भइल– राति भइल। अइसे कई दिन बीतल। अब? अब का होई? उधिया गइल मरकीनौना, ओके मउवति आवो, अब हम ओकर मुँह ना देखब।"

कुसुमावता के मन में अब्बो क्रोध भरल रहे।

हमरे मन में सहानुभूति आ जिज्ञासा आ गइल कि सांचो अब होई का? ई तऽ क्लाइमैक्स बा।

– 'हँ तऽ मेम साहब ऊ ना आइल। संपति का नाम पर हमरा लगे एगो ठेला रहे, जवना पर ऊ भूजा बेंचल करे। घर में दू–चार जून के खरची रहे। जब ले आँटल तब ले खइनी–खिअवनीं। जब खतम हो गइल तऽ सड़की पर निकल गइनीं। किराया के कोठरी छोड़ि के सड़की किनारा रहे लगनीं। केहू से कुछ ना कहनीं। ना माई–बाप से, ना नात–रिश्तेदार से। अपना पहुँचा के बल कइनीं। बरतन–बासन माँजि के गुजर शुरू भइल। ठेला पर लइकन के सुताईं अपने सड़की पर सूतीं। दिन बीते लागल मेम साहब। बाकी कब्बो–कब्बो करेजा में अस हूक उठे कि राति–राति भर आँखि ना लागे। हम उनुकर एतना सहनीं आ ऊ...? कहाँ चलि गइलन? ओहू बिर्धाइं डहलन, एहू बिधाईं डहलन। तब्बो मनवाँ में होखे–कहिओ तऽ अइहें।'

आदमी के मन केतना आस संजोवले रहेला, हम इहे सोचत रहनीं।

अचानक कुसुमावता जोर–जोर से रोवे लगली।

– 'आरे, आजु कवन पन्ना पलऽटि गइल? मेम साहब! अन्हारे फेंकल बाति अँजोरे आ गइल। छवो महीना ना बीतल होई बाबू हमार चलि गइलें हो दादा। आरे बाप रे बाप, आरे माई रे माई, आरे हमार बाबू।'

कुसुमावता करेजा पीटे लगली। हमहूँ रोवे लगनीं। कुसुमावता से कहनीं– 'बन्द करऽ ई बाति, चुप हो जा।'

आरे का चुप होईं दादा? बाबू के बहिनी लोग का साथवा ठेलवे पर सुतवले रहनीं। ओहि दिन बाबू कहें– माई रे, तोरे लग्गे सूतब। केतनो मनवनीं, मनलें ना। अन्तों में अपने लगवाँ सुतावे के परल। गोदिए में लेके सूतल रहनीं कि किरवा काटि दिहलस। हमके ना कटलस काहें माई? हमके काहें ना मउवति आइल ए दादा? कुसुमावता के घाव नया हो गइल रहे।

– लोग–बाग कहे लागल– "मरद छोड़ि के भागि गइल, बेटा के दई ले लिहलें।' सुनत–सुनत जीव पाकि गइल।"

घटनाक्रम बतावत–बतावत कुसुमावता अपना दुःख से उबरत रहली।

– 'पत्थर हो गइनीं मेम साहब! साँचो के पत्थर। एक दिन माथ मीसनीं, बार झरनीं बाकी सेनुर ना छुवनी। जाऽऽ, गोदी सून आ मँङियो सून। छुट्टी। ऊ मोहल्लो छोड़ि दिहनीं। कुसुमावता उठि के मुँह धोवली, पानी पिअली आ चऽलि गइली।'

हम उनुका दुःख में डूबत–उतरात बड़ी देर ले बइठले रहि गइनीं। जिनिगी के मारलि बा बेचारी। इनकरा खातिर कुछ करेके चाहीं – ई बाति हमरा मन में उठे लागल।

कुछ दिन हमरा टोके के हिम्मत ना पड़ल। महीना भर बाद हम कुसुमावता के टोकनी– 'रउरा वृद्धा पेंशन चाहे विधवा पेंशन ना मिलेला?'

– 'कइसे मिली मेमसाहब? के दिआई? केकरा आगे हाथ ना जोरनी, सौ–पचास खरचो भइल बाकिी कुछु ना भइल। अउरी–त–अउरी सबका राशन पर का–का ना मिलेला, हमरा खाली चीनी मिलेला। का करब हम चीनी लेके? कवन पूवा–हलुवा बनावे के बा हमरा? एगो चाह पीए के बा, ऊ रउरे सभ किहाँ मिलि जाला। केसे–केसे लड़ीं, आदमी से कि भागि से?'

– 'आज कुसुमावता अपना पहिले वाला रंग में आ गइल रहली। उनुकी आवाज में तनिको नरमी ना रहे।'

– 'काहें रउरा राशन काहें ना मिलेला?' – हम पूछनीं।

– 'कोटेदार कहेला कि रउरा लगे पिअरका कारड बा। ललका कारडवालन के ऊ कुल सुविधा मिलेला।' कुसुमावता कहली।

– 'काहें रउरा पिअरका कार्ड काहें बनववनीं?' हम खीझ में कहनीं। "रउरो मेमसाहेब, हम बनववनी कि जवन साहेबवा आइल रहे, ऊ बनववलसि। ऊ कहे कि जेकरा लगे पक्का घर बा, ओकर कार्ड ललका ना बनि सकेला। करमजुग हऽ मेम साहेब कलजुग। एमे न्याय ना होला, का जानी कुछ पइसा–रुपया देले रहितीं तऽ बनि गइल रहित।"

– 'अब कुसुमावता सुरू हो गइल रहली। हम उनुकर बात सुनत रहनीं।'

– 'अब बताईं रउरे, लइकी सेयान होत रहली सन। सड़की किनारे ठेला पर केतना दिन सुतइतीं? होऽऽ देसनी की ओरे एगो साहेब से कहिके सस्ते करजा लेके आधा कट्ठा जमीन लिहनीं। लइकिओ कुछ घरे काम करे लगली सन। धीरे–धीरे करजा भराइल, एगो कोठरी बनल। हम आ हमार लइकी मजूर अइसन मिस्तिरी का साथे काम करीं जा। एक्को मजूर ना रखले रहनीं। हम नऽ जानऽतानीं, कवने मरम से ऊ कोठरिया बनल। आजु हम ओही से धनिकहा हो गइनीं आ जेकरा दू–दू चारि–चारि सँवाँगीं बा, बहरा कमाता बाकी छान्हि–छप्पर जानि के रखले बा, ऊ गरीब बा। ओकर कारड ललका बनीं। छोड़ीं मेम साहेब, अकेले देहिं बा, लइकी अपने घरे गइली सन। अब कवनो फिकिर नइखे। जेकरा लइके–फइके बाड़े ओकरा पिन्सिन मिलता, जेकरा पूत–भतार केहू नइखे ओके पूछतर के बा? ओकरा खातिर दसगो कायदा–कानून बा'

कुसुमावता आज स्थिर आवाज में आपन बाति कहत रहली। कवनो दुःख भा पछतावा उनुका मन में ना रहे। कवन माटी के बनल ई औरत हऽ, हम मने–मने सोचत रहनीं। तब्बो दिलासा देबे खातिर कहनीं– 'हम कोसिस करब। कुछ–ना–कुछ तऽ होइबे करी। केतना दिन घूमि–घूमि काम करब?'

– 'जेतना दिन जिअब ओतना दिन। ईहे लिखाके आइल बानीं दई किहाँ से।' – कुसुमावता पट्ठे जवाब दिहली।

– 'अच्छा, केतना दिन मरले भइल होई रउरा मलिकार के?' – हम जिज्ञासावश पुछनीं।

– 'इहे कुछ महीना दिन।'

– 'आँ?' – हम चिहा गइनीं।

– 'हाँ मेम साहेब।' – कुसुमावता अब्बो अस्थिरे रहली। ऊ बतावे लगली– एगो आदमी दू–चार दिन पहिले आइल रहल हऽ। बड़ी मुसकिल से खोजत–खोजत हमरा लगे आइल रहे। ऊहे कहत रहे कि भागि के ऊ नाच का जमात में रहे लागल। आपन नाँव–पता बतावे बाकी जब जाएके बाति कहल जाए तऽ कहे– 'का जाईं ओ पिचासिनि का लग्गे ऊ अब्बो ओइसे होई, छछात पिचासिनि। इहाँ मन भर गाँजा मिलता, अउरिओ सभ चीज के इन्तजाम होइये जाता, परल रहेद।' मस्ती में नाचे–गावे। जब मरि गइल तऽ जमात के मेठ हमके बतावे खातिर भेजले हँऽ।

– 'तबऽ?' – हम पूछनी।

– 'तब का? हमके सब राँड़–बाँड़ जानते रहे, केसे पूछे–कहे जाईं, ओकरा नाम पर चुप्पे एकबेर अउरी मांथ मीसि लिहनीं। रउरा पुछनीं हँऽ तऽ बता दीहनीं।' – कुसुमावता जवाब दिहली।

– 'रउरा के तऽ सब केतना दिन से बिना सेनुर के जानता, पेंशन वाला आफिस में जाइब तऽ इहे कहब?' – हम पूछि बइठनीं।

– 'अउर का? झूठ बोलब का? जवन बा, तवन बा। अब चलीं ए मेमसाहब, हमरा टाइम नइखे।' – इहे कहत कुसुमावता चले लगली।

– 'ई औरत का हऽ?' – हमरा मन में सवाल अब्बो उमड़त–घुमड़त रहे।

कुसुमावता रोज आवें बाकी उनुके टोके के हिम्मत ना होखे। दस पन्द्रह दिन बीतल होई, सुने में आइल कि कुसुमावता गिरली आ मरि गइली। ••

■ **प्रदक्षिणा, दक्षिणी उमा नगर, सी०सी० रोड, देवरिया**

फोटो ग्राफर, लेखक, कवि भाई लोगन से निहोरा.....

(1) फुल स्केप कागज पर साफ सुन्दर लिखावट में भा कृतीदेव 10 फॉन्ट में टाइप कराके रचना–सामग्री आ फोटोग्राफ रजि0 ड़ाक से भेजीं अउर **ashok.dvivedipaati@gmail.com** पर मेल करीं।

(2) पत्रिका में रिपोर्ताज रपट, फीचर सामग्री भेजत खा, साथ में ऊहे चित्र/फोटो भेजल जाव, जवन बढ़िया आ प्रकाशन जोग होखे। आपन संक्षिप्त परिचय आ नया फोटो साथ में भेजीं। (रजि0 डाक से)

(3) पाठक भाई लोगन से विनती बा कि पत्रिका का बारे में, आपन प्रतिक्रिया/विचार भेजत खा, आपन नाम पता, पिनकोड सहित आ मोबाइल नंबर भेजीं। पता पत्रिका में छपल बा।

(4) संस्कृति–कला संबंधी आलेख बढ़िया चित्र रेखाचित्र, फोटोग्राफ के साफ प्रिन्ट–आउट का साथे भेजत खा ओकरा तथ्य–परक प्रामाणिकता के जाँच जरूर करीं। संपादक का नाँवें ईमेल पर फोटोग्राफ भेजल जा सकेला बाकि लिखित रचना के प्रिन्ट रजि0 डाक/कुरियर से भेजल जरूरी बा।

(5) निजी खर्चा पर निकलेवाली आ बिना लाभ के छपेवाली अव्यावसायिक पत्रिकन के सबसे ज्यादा सहयोग ओकरा लेखक कवियन आ पाठकन से मिलेला। ई समझ के एह पत्रिका के पहिले खुद ग्राहक बनी अउरी दुसरो के बनाईं।

शंख बाजल

डॉ. शारदा पाण्डेय

धर्मराज युधिष्ठिर राजसूय यज्ञ करत रहलन। ओह समय एगो शंख यज्ञ स्थान पर धइ दीहल गइल। भगवान श्रीकृष्ण से पुछला पर कहलन कि जब यज्ञ पूरा हो जाई तऽ ई शंख अपने से बाजि जाई। ऊहे एह बात के प्रमाण होई कि यज्ञ पूरा हो गइल। यज्ञ कुल्ही कर्मकाण्ड सहित अपना पूर्णता पर पहुँच गइल। आहुति के मंत्र–ध्वनि से पूरा मण्डप भरि गइल, बाकिर शंख ना बाजल। युधिष्ठिर चिंताकुल दृष्टि से श्रीकृष्ण का ओर देखलन; कृष्ण के आँखि दोसरा ओर रहल। बुला ऊ शंख की ओर देखत रहलन। शंख अचल नीरव पड़ल रहे। कुल्ही भाई एक दोसरा के ओर देखत रहित गइलन। रनिवास में चर्चा होखे लागल, दरबार में चर्चा भइल, सभा में खुसफुसाहट सुनाए लागल, बाकिर शंख ना बाजल। यज्ञ के पुरोहित, पंडित–विद्वान सभे के मुँह झुरा गइल। कहाँ कवन गलती भा कमी भइल कि शंख ना बाजल। धर्मराज हाथ जोरले श्रीकृष्ण के काने गइले। पुछले– 'हे केशव! यज्ञ तऽ निर्विघ्न पूरा हो गइल बाकिर शंख ना बाजल।' श्रीकृष्ण युधिष्ठिर के देखि के कहलन, 'धर्मराज! तब रउरा कवना बिना पर कहऽतानी कि यज्ञ सम्पूर्ण भइल?'

धर्मराज उदास होइ के कहलन, 'रउरे कहीं। कहँवाँ कमी भा चूक भइल कि यज्ञ के अपूर्ण मानल जाउ?'

कृष्ण कहलन, 'शंख के ना बाजले कवनो कमी के सूचना देऽता। हमरा बुझाता कि रउआ यज्ञ में कवनो सज्जन–संतजन छूटि गइल बाड़न, जेकर सम्मान ना कइल गइल। ना उनुका के भोजन करावल गइल।' युधिष्ठिर हतप्रभ रहि गइलन। "देश–देशान्तर के ऋषि–महर्षि एह यज्ञ में जबसे आइल लोग, भोजन व्यवस्था में कवनो कमी ना राखल गइल। इहाँ तक कि रउरो एहिजे बानी। रउरे संरक्षता में हम सनाथ बानी।"

श्रीकृष्ण, युधिष्ठिर के प्रश्न बूझि गइलन। कहलन कि, "तहरा राज्य के सीमा पर गाँव से बहरा एगो श्वपच् 'वाल्मीकि' नाम के संत आजु तक ना तहरा से निमंत्रित भइलन ना उनुका से 'अइगा' मँगाइल।"

धर्मराज चिहा गइलन। कृष्ण ई का कहऽ तारन। श्वपच् के बोलावे के! ऊहो एह धर्मयज्ञ में, राजसूय में! बाकिर अवरू कुछु कहे के उनुकर हिम्मत ना परल। विचार भइल कि भीम के भेजल जाउ। भीमसेन जाइ के 'वाल्मीकि' के मँड़ई के सोझा खड़ा हो गइलन। संगे उनुकर दल–बलो रहल। वाल्मीकि डेरा गइलन। काँपत दूनू हाथ जोरि के खड़ा हो गइलन। मन में सोचलन कि कहाँ का बेजाइं भइल कि ई राजसेना एइजू आइल। मुँह के रंग उड़ि गइल। तबले भीमसेन सादर प्रणाम क, के कहलन– 'काल्हु आवे परी राजभवन में।'

वाल्मीकि कहलन, 'राजाज्ञा के आगा केकर बस बा। हम जरूरे आइब। जइसन रउआ कहबि ओइसहीं होई।' कुल्ही राति आँखि में कटि गइल,' जाने काल्हु का होई?'

दोसरा दिन भीमसेन फेरू हाजिर। प्रणाम कइ के अपना रथ पर हाथ धइ के वाल्मीकि के बइसवलन। जनता देखत रहल ई अनहोनी। वाल्मीकि के राजमहल के अतिथि गृह में आदर के साथ उतारल गइल। भीम के विनम्रता देखि के कृष्ण के मुँह पर मुस्कान खेलि गइल। अर्जुन संत वाल्मीकि के पाँव पखरले सोना के थार में। आजु राजरानी द्रौपदी अपना हाथ से छप्पनों व्यंजन बनवली, रचि के परोसली। एक–एक घर में चरणोदक छिरिकल गइल। सोना के धरती गंगाजल से धोके हीराजड़ित आसन पर संत के बइठावल गइल।

बाल्मीकि नीचे आँखि कइले एक के बाद एक कुल्ही कटोरी के भोजन मिलाइ के एकवट लिहलन आ खाए लगलन। तऽले शंख बाजे लागल। चारो ओर आनन्द के लहर उठे लागल। युधिष्ठिर के मुँह पर संतोष झलकल कि यज्ञ पूरा हो गइल। अनासे तनिकी भर बाजि के शंख पटा गइल। बुझाइल जे झूमत खेत पर बिजली गिर गइल होखो। धर्मराज उदास स्वर में कहलन, "केशव! अब का भइल? शंख काहें पटा गइल?"

कृष्ण के मुँह पर एगो छाँह आ गइल– 'बुझाता कि संत के प्रति कवनो अपराध हो गइल। पाँचो पाँडवन के कुछु ना बुझाइल।' खाली द्रौपदी के आँखि में एगो लहर आइल। नीचे देखत कहली– 'हो सकऽता एकर कारन हम होखीं। इहाँ के जब कुल्ही कटोरी के व्यंजन एके में सानिके खाए लगनी तऽ हमरा मन में भइल कि अतना रुचि से एक अ एक गो व्यंजन बनवलीं आ ई कुल्ही एके में सानि लिहले। आखिर चाण्डाल चाण्डाले होला। नीच अदिमी खाए के ढंग का जानी?'

बुला अवरूओ पाण्डवन के अइसने लागल होई! धर्मराज एकर माने समुझ गइलन। द्रोपदी आपन कमी अनुभव कइ लिहली। हाथ जोरि के क्षमा मँगली।धर्मराज, अर्जुन, भीम, नकुल, सहदेव सभे एह स्वीकारोक्ति के आगा नइ गइल। कृष्ण मुस्करा दिहले। वाल्मीकि परम तृप्ति से भोजन पवले। संतुष्ट होके कहले– 'कवनो बात ना, हम तऽ भोग के भाव से कबो भोजन ना कइनी। भगवान के प्रसाद के रूप में भगवदार्पण भाव से लिहनी। अलगा–अलगा स्वाद तऽ मिलि के ओही एक रस में समाई!'

सभ चकित हो गइल एह सोझ सहज अभिव्यक्ति पर। शंख बाजे लागल, बाजते गइल। बाजते गइल, जबले वाल्मीकि अपना घरे रथ से उतरि ना गइलन। ••

142, बाघम्बरी गृह योजना, भरद्वाजपुरम्, प्रयाग-211006

कहानी

ए रेक्शा

अनिल ओझा 'नीरद'

पप्पू प्रसाद रेक्शा वाला! आजु के दिन, इहे हमार पहिचान बा। बाकी आजु से करीब चउबिस–पच्चीस बरिस पहिले हमार कवनो पहिचान ना रहे। वोइसे, बिना पहिचान के त हर आदिमी पैदा होला, बाकी पैदा भइला का सँगहीं ओकरा, अपना बाप–मतारी के पहिचान, ओकरो के मिलि जाला, जइसे एगो नाँव, ओकरा बाप–मतारी के नाँव, जाति, जवन कुल्हि पहिलहीं से तय होला, ओकरा संगे जुड़ि जाला। रहे के एगो ठौर–ठिकानो जरूर होला।

बाकी, आजु से चाउबिस–पच्चीस बरिस पहिले हमरा संगे, अइसन कुछ ना रहे। हम के रहनी? हमार बाप–मतारी के रहे? हमार नांव का रहे? हमरा बाप–मतारी के नांव–जाति का रहे? उनुका रहे के ठेकाना का रहे? कुछ ना। ....आ आजु पच्चीस बरिस बादो, हमरा एह सवालन के कवनो जबाब, ना मिलल।

हम, जब होश सम्हरनी त अपना के फुटपाथ पर पवनी। एकदम फुट–पाथ से सड़क तक घूमत बिलखि–बिलखि के रोवत। चारू ओर तिकवत, जइसे, केहू से सहायता माँगत होईं। कहत होईं कि हमरा के गोदी में उठा लऽ। केहू त उठा लऽ। हमरा के चुप करावऽ। कुछ खाये के दऽ। रहे के कवनो जगह दऽ। हमरो के अपना गोदी में लीहल बच्चा लेखा दुलारऽ पुचकारऽ। आ ई हरकत, हम खास क के, तब करीं, जब कवनो मरद भा मेहरारू के, अपना गोदी में, कवनो हमरे लेखा, लइका भा लइकी के, ले के चलत देखीं। हम हाथ पसार दीं, अउर जोर से रोईं। हलांकि हमरा, तब ईहो पता ना होखे, कि ई मरद–मेहरारू के हवे? इनिका गोदी में के, ई लइका भा लइकी के ह? एकरा से, एह लोगन के नाता का बा? आ हमरा से, अइसन नाता रखे वाला, केहू, काहें नइखे?

हम, खड़ा–खड़ा रोवत रहि जाईं आ ऊ लोग आगे बढ़ि जाउ। हम, अउर जोर से रोवे लागीं, बाकी हमरा रोवलो पर, केहू के, हमरा पर, दया ना आवे। जइसे, सभ बस, अपना धुन में आ एगो रुटीन, आवाजाही का क्रम में होखे। दीन–दुखिया केहू से ओकरा, कवनो मतलब ना होखे। जइसे, सभकर एगो मंजिल बा आ सभका, ओहिजा पहुँचे के जल्दी बा।

बस, जल्दी नइखे त हमरा। हमरा कहाँ जाये के बा आ जाइल काहें खातिर होला, ई तब, हमरा कहाँ पता रहे? हमार मंजिल त, बस ई फुट–पाथ रहे, जहाँ दिन–राति, हम पड़ल रहत रहीं आ जाने काहें, कबो–कबो उठि के रोव लागत रही आ जब कबो, दया क के, केहू कवनो खाये के सामान, दे देत रहे त ओकरा के खइला के बाद, हमारा रोवाई, अपने–आप बंद हो जात रहे। ओह, त ई रोवाई, एह पापी पेट के भूख के चलते आवत रहे? ई बात त हमरा, बहुत बाद में, पता चलल रहे।

हमरा रोवाई में, माई–माई, चाहें, बाबू–बाबू के आवाज, कबो ना रहत रहे, तब। तब तक त हम ई जानतो ना रहनीं, कि ई माई–बाबू के होले आ कवनो लइका खातिर, इनिकर अहमियत, का होला? ई तऽ बहुत बाद में, जब हम जननीं, कि बिना माई–बाबू के, कवनो लइका भा लइकी के जनम, होइये ना सके, तब हम, सोचे पर, मजबूर भइनीं कि तब, आखिर, हमार जनम, कवना माई–बाबू से भइल आ कहवाँ? का इहंवें, जहाँ हम, शायद जनमें से पड़ल बानीं, आ कि कहीं अउर हमरा के पैदा क के, इहाँ ले आके, छोड़ि गइले? तब काहें? कहीं अइसन त ना, कि ऊ, बहुत गरीब रहले, हमरा के पाले पोसे में, असमर्थ रहले, एह से, आपन जिम्मेवारी छोड़ि के भागि गइले आ कि कहीं मरि–बिला गइले?

बाद में, बहुत होश सम्हरला के बाद, हम ई जरूर सुननीं कि, बहुत सा महतारी–बाप, अपना लइकी संतान के बोझा समझि के, पेटे में मारि देले, ना त पैदा भइला का बाद, कहीं, कूड़ा–कचरा भा नदी–नाला में फेंकि के, आपन जिम्मेवारी खतम कइं लेले। ओहू में, फुट–पाथ पर पले वाली बेटी संतान का संगे त, अउरी झमेला बा। ओकर भविष्य का होई? कवनो फुट–पाथिये लइकन के वासना के शिकार हो जाई कि, कवनो उठाईगिरा के गिरोह में फंसि के, कवनो कोठा पर, पहुँचि जाई। तब का होई? तब त, एह से पहिलहीं मरि जाउ, तवने ठीक। बाकी हम त बेटा संतान रहनीं, तब हमरा संगे, अइसन काहें भइल? हम, आजु ले, ई ना समझि पवनीं।

हम, जब से होश सम्हरले रहनीं, तब से, ई महसूस कइले रहनीं, कि, हमार बसेरा, एगो फुट–पाथ पर बा, जवना पर, एगो मइल–कुचइल कथरी परल बा, जवना पर हम, राति चाहें दिन में, जब नीनि लागेला, सूतल करींला। कहीं उठि के पेशाब कइ दीहींला, कहीं टट्टी कइ दीहींला। केहू ना बोले वाला होला, ना टोके वाला आ जब भूखि लागेला त उठि के रोवे लागींला। तब उठि के रोवते–रोवत मुख्य सड़क का किनारे तक आ जाईंला। लोग गुजरत रहेला, हमार हाथ पंसरल रहेला, तब आवत जात लोगन में से, कुछ लोग, हमरा हाथ पर दस–पइसा, बीस–पइसा, चार आना, फेंकल शुरू क देला आ जब कुछ बटोरा

जाला, त जाके घुघुनी–पूड़ी वाला दोकानदार के दे दहीं ला आ ओकरा बदला में, ऊ जवन कुछ दे देले, ओकरा के खा लीहींला, फेरू उनके से पानी मांगी के पी लीहीला। फेरु आके, अपना कथरी पर सूति जाईंला। अभी के काम चलि गइल, बाद के चिन्ता का होला, हमरा का मालूम रहे?

बाकी, ई कुल्हि त, हमरा होश सम्हरला के बाद के, इयादि परल बात ह, बाकी अब, जब हम सोंचीला, त कुछु इयादि ना परे कि होश सम्हरला से पहिले, ई कुल्हि काम, हम कइसे करत होखबि? के हमरा के खाये के देत होई? के पीये के देत होई? के चुप करावत होई? के सुतावत होई? के का ओढ़ावत होई? हम कइसे जीयल होखबि? आ जियनी काहें? मरि काहें ना गंइनी? कुल्हि झंझट से, छुटकारा मिलि गइल रहित। देहिं पर, आजु ले, एगो बस्तर त बा ना, आजुवो, लंगटहीं–उघारे घूमि रहल बानी। त ई, अतना जाड़ा, गर्मी, बरसात, कइसे सहि गइनीं? हे भगवान! ई तहार, कइसन लीला? हमरा के कइसे जिन्दा रखले बाड़? आ काहें खातिर? ई हम, अब सोंचीला। एगो अनाथ, टूअर लइका के जीयल, का जरूरी रहे? हमरा त इहो नइखे इयादि कि एह बीचे हमरा, कवनो बेमारियो–हेमारी भइल रहे कि ना? कबो कबो हम इहो सोचीला, जब से हमरा एह बात के पता चलल, कि एह शहर में, अतना सरकारी अनाथालय बाड़े स, जहाँ अनाथ लइकन के राखल जाला, पालल–पोसल जाला, पढ़ावल–लिखावल जाला, जहाँ से, ऊ एक दिन अपना गोड़ पर खड़ा होखे लायक आदिमी बनिके निकलियो सकेले भा निकलि जाले, त काहें ना इहां के सरकार हमनी चाहें कम से कम हमरा लेखा अनाथ लइका–लइकी के जेकरा कि बाप–मतारी केहू नइखे, अपना पुलिस से उठवा के, ओकरा में भर्ती करवा देले, जवना से, ओह लइका–लइकी के नीमन से पालन–पोसन हो सको, रहे के एगो घर–छत मिलि जाउ आ ओकर जिनिगी संवरि जाउ। बाकी बाद में, बहुत बाद में, हमरा एकर जबाबो मिलि गइल, अपना अनुभवे से, कि सरकारो का हमनी लेखा लोगन खातिर चिन्ता करे के फुरसत ना होला, आखिर ओकरो के, हमनी लेखा लोगन से, कवनो वोट–चन्दा त मिली ना।

एही सिलसिला में, एगो अउरी बात के पता चलल रहे हमरा, कि, एह अनाथालय में पले वाला, लइका भा लइकी के कबो–कबो अइसनो भागि चमक जाला कि कवनो निःसंतान मरद–मेहरारू आ के अपना पसन के कवनो लइका भा लइकी के गोद ले लेला आ अपना संतान नीयर ओकर पालन–पोसन करेला, ओकरा के अपने औलाद लेखा, महतारी–बाप के प्यार–दुलार देला आ ओकरा के आपन नांव–जाति देके बड़ करेला, आदमी बनावेला आ ओकर भागि सँवारि देला। बाह रे भगवान! तहार लीला, एक ओरि जेकरा के संतान देल ओकरा के, जे कइसन मजबूरी दे देले कि ऊ अपना करेजा के टुकड़ा के, अपने हाथे घूरा पर फेंकि देला आ एक ओरि अइसनो इन्सान पैदा करेल कि ऊ दोसरा के औलाद के आपन बना लेला। तोहार ई लीला न त, अभी ले हमरा समझ में आइल ना त हमरा, अइसन सौभाग्य मीलल। तोहरा लीला के प्रणाम।

खैर, कुछ अउरी होश सम्हरनी त हमरा पता चलल, कि हम जवना फुट–पाथ पर रहींले, ऊ हाबड़ा स्टेशन के, बस स्टैन्ड के फुटपाथ हऽ। इहां से हावड़ा में हर जगह जाये खातिर बस खुलेली स। ई बस स्टैन्ड, हावड़ा स्टेशन के पीछे बा, जवना के खुला–बन्द नाला में अब, हमनी का, टट्टी–पेशाब करींले जा। हावड़ा स्टेशन माने, हावड़ा के रेल–स्टेशन। माने, इहां के रेल गाड़ियन के खड़ा होखे के जगह, जहाँ से एहिजा से दूर–दूर तक जाये खातिर रेल–गाड़ी खुलेली स आ उहां से आवेली स। ई दूर–दूर के जगह, कइसन होत होई? का अइसने, जइसन, ई जगह बा, जहाँ हम बानीं? तब हम सोचीं। का ओहिजो के स्टेशन के आस–पास, हमरे लेखा टूअर–टापर लइका, भिखमंगा के जीवन, जीये खातिर मजबूर होइहें?

अब, हमनी के एगो दल बनि गइल रहे। दल माने, भिखमंगा पार्टी के दल, जवना में, हमरे उमिरि के भा कुछ छोट–बड़, दस–बारह गो लइका–लइकी रहले। चार–पांच गो लइकी आ छव–सात गो लइका रहले शायद। सभ लेकिन एहिजे के, आस–पास के फुट–पाथ के। सभ, आपस में, मिलि–बांटि के भीखि मांगे अब। केहू के जगह मेन सड़क रहे आ केहू के फुटपाथ आ बस स्टैण्ड के बीच वाली सड़क। केहू बस में घूमि के मांगे। यानी, आपस में मिलि–जुलि के, आपन–आपन जगह, तय क लेले रहे, सभी केहू ताकी, केहू के संगे, केहू के कवनो झमेला मति होखो। हर दल, दू से तीनि के बीच में रहे। एही में कवनो–कवनो लड़िका–लड़िकी के गावहूं आवत रहे। ऊ दल, हाथ में, पथल भा ईंटा के, रगड़ि–रगड़ि के बनावल, दूगो खपटा लिहले, बस में चढ़ि जाइल करे आ नया–पुरान फिलिम के गाना गा–गा के, बस के मुसाफिरन के सामने, जा–जा के भीखि मांगे आ एह क्रम में, ऊ लोग जादातर चलती बस के चयन करे आ गावत–बजावत दूर–दूर तक निकलि जाइल करे

आ फेर ओने से लौटती बस में, इहे क्रम दोहरावत, लवटि आवत रहे। एक क्रम में, लड़िका–लड़िकी मिलि के आपन दल बनावत रहले आ मिलि के गावतो रहले। एह में, अच्छा कमाई हो जाइल करते रहे। एह तरह से, हमनी के, एगो आपन टीम बनि गइल रहे, बाकी ई तय क दीहल गइल रहे, कि सभकर कमाई, आपन–आपन आ अगर दल, दू या तीनि लड़िकन के मिलि के बनल बा, त सभकर हिस्सा बराबर–बराबर।

एह दल के बने से पहिले हमरा इयादि बा, एगो घटना घटल रहे हमरा संगे। एक दिन, हम आ एगो अउरी, हमरे उमिरि के लइका, एगे संगे, बीच वाली सड़क पर, भाग–दउड़ करत, भीखि मांगत रहनी जा करीब–करीब ओह बस स्टाप के सामने के सड़क पर, जहाँ से, दीघा जाये वाली डीलक्स बस खुलेली स। अचानक, हमनी दूनो आदिमी, एके आदिमी के पीछे पड़ि गइनी जा। दूर तक पीछा कइला आ चिचिआत कइला का बाद– कि बाबू, दे द ना, कुछ दे द ना, दसो पइसा दे द ना, ऊ एक छन खातिर रुकल आ अपना पैंट के पाकिट में हाथ डालि के, कुछ खुदुरा पइसा निकललसि, आ हमनी दूनो के हाथ पर, दस–दस पइसा के सिक्का फेंकत, आगे बढि गइल। हमनी दूनों आदमी, पइसा पाके, रुकि गइनीं जा आ मुसुकात, एक दोसरा के, देखनीं जा। फेर हमरा ओर देखत ऊ अचरज से पुछलस–

– 'तोर नांव का ह रे?'

– 'का जाने, ई त हम जांनते नइखी। हम कहनी आ फेरू ओकरा से पूछनी।'

– 'आ तोर नांव का ह?'

– 'मुन्ना! ऊ कहलसि।'

– 'तोर ई नांव के धइल?' हम पुछनी।

– 'हमार माई!' ऊ कहलसि।

– 'तोरा माई बिया?' हम पुछनी।

– 'हं!' ऊ कहलसि।

– 'का जाने, हमरा त माई, हइये नइखे। बाबूओ नइखन। त के भला हमार नांव धरित?' हम कहनी।

– 'बाबू त हमरो नइखन। चल जाये दे। आजु से हम तोरा के 'पप्पू' कहबि। आजु से तोर नांव पप्पू। ठीक बा नूं।' ऊ पुछलसि।

– 'ठीक बा।' हम कहनीं। आ ओही दिन से हम पप्पू हो गइनी।

– 'बाकी तें लंगटे–उघारे काहें रहेले रे?' ऊ हमरा देहिं पर आपन नजर दउरावत पुछलसि।

– 'हमरा पासे कवनो कपड़ा नइखे। हम कबो पहिरलहीं नइखीं। हम त इहो नइखीं जानत कि ई कहाँ मीलेला आ एकरा के कइसे आ काहें खातिर पहिरल जाला। हम बड़ा मासूमियत से कहनी।'

– 'बड़ भइला पर कपड़ा पहिरल जरूरी होला बुरबक, ना त लोग बाउर मानेला। देखत नइखे, एही से सब कपड़ा पहिरि के घूमत बा। अब तेहूं लइका थोड़े बाड़िस? ठीक बा चलु, हम अपना माई से कहि के तोरा खातिर कपड़ा किनवा देबि, बाकी इयादि रखिहे, रोज के कमाई में से, बचाके, थोड़ा–थोड़ा कइके ओकर पइसा सोध क दीहे।' ऊ कहलसि।

– 'ठीक बा।' हम कहनी।

आ एह तरी, पहिला बेरि, हमरा देहिं पर बस्तर चढ़ल, पांयेट–बुशट। आ ओही दिन से हमनी का पक्का दोस्त हो गइनी जा। एकरा बादे, सभकर मीटिंग क के, ऊपर वाला समझौता आपस में तय भइल।

ई त दल के मीटिंग भइल, तब पता चलल, कि हमरा दल के हर सदस्य के साथे, हमरा के छोड़ि के केहू ना केहू बाटे। केहू के लगे माई बिया, बाकी हरदम, बेमार रहे वाली। केहू के लगे, बाबू बाड़े, बाकी कवनो ना कवनो अंग से अपंग बाड़े। केहू के लगे, दूनो बाड़े, बाकी उनुकर परेशानी अलगे बा। गांव के गरीब परिवार, अपना गरीबी से तंग आके, रोजी–रोजगार के चक्कर में एहिजा अइले, संग में एगो बड़ बेटा रहे, बाकी पहिले त कतहीं, रहहीं के जगह ना मीलल, त एहिजे, फुट–पाथ पर डेरा डालि दिहले, बाकी बेटा एक दिन, एह कुल्हि से परेशान हो के भागि गइल, त आजु ले ना लवटल। अब ई छोटका बेटा, जवन एहिजे पैदा भइल, ऊ हमनी के दल में, मिलि गइल। बाप–मतारी, बुरा ना मनले। आखिर दोसर कवनो उपायो ना रहे। बेचारू अपनहूं कुछ मर–मजूरी करेले। कुल्हि मिला के काम चलि जाता, बाकी इज्जति जवन गइल, तवन कहाँ से आई? अब त गांवहूँ लवटि के ना जा सकसु। तबसे इहंवे पड़ल बाड़े।

नाना तरह के समस्या, नाना तरह के परेशानी, बाकी जे रहि सकेला, ऊ त संगे बा नूं? तब, फेरू हमरे बाप–मतारी, हमरा संगे काहें नइखन? कइसन कठकरेजी रहले ऊ? हम, बीच–बीच में सोचीं।

एही बीच, हम इहो देखनी, कि एहू परेशानी में, बहुत लोग अपना–अपना रहे खातिर, घरनुमा, कुछ ना कुछ बना लेले बा। केहू लकड़ी के सहारे, प्लास्टिक से घेरि के, दरबा नीयर, कुछ बना लेले बा, केहू टीन–गत्ता, बोरा चट्टी से, छाई–छूपि के, कुछ खड़ा कइले बा, केहू फाटल–पुरान चद्दरि आ कम्मर से, कहीं कुछ आड़ कइ ले ले बा। अब भले ई दरबा, चारि फुट लम्बा, दू फुट चौड़ा आ दू फुट ऊँचा से

बेसी, कुछ नइखे, जवना में आदिमी, ना त ठीक से टांग पसारि के सूति सकेला, ना अपना कद के हिसाब से, ठीक से बइठि सकेला, आ खड़ा त कवनो कीमत पर ना हो सके, तबो, सभका पासे कुछ ना कुछ बा। नइखे त बस हमरे पासे कुछ नइखे। आ होखे कइसे? जेकरा, दस बरिस के उमिर तक देहि पर, कपड़ा तक के सुधि ना रहे, ऊ दरबा कहां से बना पाइत अपना खातिर? फेर जे बना सकत रहे, ऊ त रहबे ना कइल हमरा संगे।

एकरा बादो, एकरा में एगो समस्यो रहे। हर चारि–छव महीना पर गश्ती पुलिस के दल आवे आ फुटपाथ के सफाई के नांव पर, ई कुल्हि दरबा, उजारि के, भीतर के सामान, जेने के तेने फेंकि के आ फुट–पाथ खाली क देबे के हिदायत दे के चलि जाउ, लेकिन एसे का पुलिस आपन काम कइके जाउ आ फुट–पाथ वाला लोग, आपन काम करे। फेर दू–चारि दिन बाद दरबा जस के तस खड़ा। आखिर इज्जति–पानी त एही से नू तोपे के रहे, फेरू, थोड़े जाड़ा–पाला, बरसात से बचाओ त हो जात रहे। लोग निष्चिन्त रहत रहे, जइसे कि चल, पुलिस त अब, दू–चारि महीना बादे नूं आई।

एगो समस्या अउरी खड़ा होत रहे, एह लोगन का सामने, कवनो बच्चा के जनम पर त ओतना ना, ऊ त जइसे–तइसे सम्हरा जात रहे, बाकी एह लोगन में से, केहू के घरे, जब केहू के मरनी होत रहे, तब त जइसे सबके सांसे टंगा जात रहे कि, अब एह लाशि के कइसे पार लगावल जाउ? बड़ा दुर्गति होखे साह। पहिले लाशि के दिन भरि, सड़क पर कपड़ा से ढंकि के सुतावल जात रहे, फेर भीखि लेखा चंदा जुटावल जात रहे आ तब कहीं सांझि ले लाशि के शम्शान पहुंचावल जात रहे। श्राध कर्म त दूर के बात, केहू के कवनो क्रियो–कर्म ना होत रहे।

एह बीच, हमनी के गावे–बजावे वाला दल के लोग, अब स्टेशन में घुसि के, ट्रेन में, आपन किस्मति, आजमावल शुरू क देले रहे। खास क के लोकन ट्रेन में। बन्डेल से बर्दवान तक के सफर कइके, दिन भरि में, लवटि आवत रहे। झोली भरल रहल रहे।

हमार आ मुन्ना के जोड़ी, लेकिन अलगे रहे। हमनी का अभी ले, अपना के सड़क आ बस के भीतरे के क्षेत्र, अपना जिम्मे रखले रहनी जा। काम चलत रहे। केहू अइसनों मिले जे पइसा त ना देउ, बाकी सीख जरूर देउ। 'हट भाग इहां से, एतना बड़ा होके भीख मांगतारे, लाज नइखे लागत? जोके कवनो काम काहें नइखे करत?' एह पर अगर ई जबाब दे दीहल जात रहे, कि– 'बाबू दीं ना एगो हमरा काम हम करबि' तब त उनकर मुँह देखहीं लायक होत रहे। मूड़ी नीचे क लेत रहले, चाहें घुमा लेत रहले।

उमिरि थोड़े अउर बढ़ल। चउदह–पनरह के आस–पास। अब त सचहूं, अपनहूं लाज बुझाये लागल, ई काम करे में। दल के पूरा टुकड़ी के इहे हाल रहे। कारणो रहे, पीछे कुछ अउर टुकड़ी तैयार जे होत रहली स। अब कमो–बेस सब केहू सोचत रहे, अपना–अपना तरह से, काम बदले के बारे में। ओइसे, लइकी लोगन के दल, जे गा–बजा के कमाये में लागल रहे ऊ सभ, अपना काम में, ओसहीं लागल रहे। ओह लोगन के लोकल–ट्रेन के काम, ठीक चलत रहे। ओसहूं ई सीधे–सीधे भीखि मांगल त रहे ना, कुछ हुनर देखा के कुछ मांगल रहे। लेकिन एह बीच, एक आध गो घटना अइसन सामने जरूर आइल रहे, जवना से सभकर कान खड़ा हो गइल रहे, आ ऊ घटना ई रहे कि एह बीचे जवान होत दू–चारि गो लइकी गायब हो गइल रहली स। अब पता ना ऊ एह काम से तंग आके, अपने भागि गइल रहली स कि कवनो मनचला भा अउर कवनो तत्व, उन्हनी के बहला–फुसलाइ के भगा ले गइल रहे, बाकी तबो एह बात पर हमनी लेखा परिवारन में ढेर अचरज ना भइल रहे, सिवाय ओकरा जेकरा घर चाहे जवना बाप भा मतारी के ऊ बेटी रहली स, बाकी ऊहो लोग दू–चार दिन ले रो–धो के चुपा गइल रहे। कारण दोसर कवनो उपायो त ना रहे, ओह लोगन के पास, चाहें हमनिये के पासे। आखिर, कहाइतो त केकरा से, पुलिसो त कवनो मदत त करित ना। एह बारे में, एगो अउर बात साफ ना भइल रहे कि एह काम में, अपने दल के लइकनि के कवनो हाथ रहेकि ना, हालांकि एतना बड़ दल में से कुछ लइको, एकरे आगे पाछे भागल रहले से। त आखिर अंगुरी उठो त केकरा ऊपर आ केकरा खिलाफ? ओइसहूं अइसन, माहौल में अइसन घटना के शंको पहिलहूं से रहत रहे।

हम आ मुन्ना लेकिन, तय कइ लिहनी जा कि ई काम अब ना करबि जा। हमनी के। तब आपन भागि पहिले मोटिया गिरी में आजमावे के फैसला कइनी जा। रेक्सा वगैरह से, जवन पसिन्जर, सामान लेके, ट्रेन पकड़े खातिर स्टेशन आवे, त रेक्सा त स्टेशन से बहुत दूरे रुकि जास, उन्हनी के, मेन गेट तक जाये के परमिशन ना रहे, त पहिले अइसन लोग के धइल शुरू कइनीं जा– 'दीं ना बाबू, हम राउर सामान ले चलऽ तानी। भीतर ले पहुँचा के आइबि। कुली के बीस रुपया देबि, हमरा के दसे रुपया देबि।'

– 'ना, ना, कुली झगड़ा करे लगिहें स, तब?'

– 'कुली झगड़ा करिहें स, त रउआ एको पइसा मति देबि।' बस, खुश।

जवान लोग त, एहू पर राजी ना होखे। आपन सामान अपनहीं उठा के चलि देउ, बाकी परिवार वाला, चाहें बूढ़–पुरनिया लोग, एह शर्त पर, कि देख सामान ले के भागि मति जइह। धीरे–धीरे आ संगे–संगे चहिल, राजी हो जाउ आ एक तरे, कुछे दिन में, आपन ई धंधा चलि निकलल। दिन भरि में भा खाली सांझिये के, दुइयो चारि गो अइसन पार्टी भेंटा जाउ, त तीस–चालिस रुपया त कहीं ना गइल रहे। बाकी कबो–कबो एह से बेसियो भेंटाये लागल। आ भेंटाउ काहें ना? एतना बड़ा स्टेशन, एतना पसिन्जर, सबेरे से राति तक पांचो–दस गो अइसन पसिंजर, ना भेंटइहें, त का भेंटइहें। साल–दू साल तक ई काम ठीके ठाक चलल, तले एकरा बाद, एगो दोसरे काम में अझुरा गइनीं जा।

बस स्टैन्ड के सामने वाला मकान में, सामने के तरफ, यानी मेन रोड के तरफ, जवन हावड़ा से, मछली हट्टा होते सलकिया का ओर जाला, ओह मकान में कई गो खाये–पीये के होटल रहले स। ओही होटलन का बगल में, कोना पर, दवाई दोकान के पास, एगो अंग्रेजी शराब के दोकान रहे। ई कुल्हि आजुवो जस के तस बाड़े स। जवन सबेरे दस बजे खुले आ राति खा दस बजे बंद होखे। सांझि खा, ओहिजा से शराब कीने खातिर, दोकान का सामने लम्बा लाइन लागि जाउ। फेर दोकान बंद भइला के बाद, शुरू होखे ओहिजा एगो नया धंधा। देर से आवे वाला गाहकन खातिर, दोकान का पीछे, मकान के अन्दर से, ब्लैक में दारू बेचे वाला लोगन के, कारबार शुरू होखे, जवन राति के दू–तीन बजे तक चले। एह काम में, ओह लोगन के, जाने केतने लोग लागल रहसु। एकरा अलावहूं, आस–पास के कई गो लइका–सेयान आदिमी सब जुड़ि जासु। एमे होखे ई कि गाहक, सीधे–सीधे त, मकान का भीतर जाके, माल कीनि ना सकत रहे। काम, एकदम गोपनीय राखल जात रहे। त ओह में, ई बीच वाला आदिमी, एक तरह से, दलाल के काम करसु। गाहक से अपने बात करसु आ ओकरा से पइसा लेके, भीतर जासु आ माल ले आके गाहक का हाथ में थम्हा देसु। एकरा एवज में, ऊ लोग गाहक से, पांच–दस रुपया एक्स्ट्रा ले लेत रहे, चाहे गाहक अपना मनहीं दे देत रहे, जवन एह लोगन के कमीशन चाहें, एक्स्ट्रा कमाई, जवने कहीं हो जात रहे। काम तनी रिस्की रहे, बाकी कमाई अच्छा रहे। हर्रे लगे ना फिटकिरी रंग चोखा वाली कहाउति रहे। रिस्क ई रहे, कि कबो–कबो पुलिस के अचानक छापा पड़े, जवना से पकड़ाये के डर रहत रहे। बाकी, ई कबो–कबो होखे, चार–छव महीना में एक बेरि। आखिर ब्लैको करे वालन के कुछ त सेटिंग रहते होई।

हम आ मुन्ना, कई दिन से, ई खेल देखत रहनीं जा। काम ठीक लागत रहे, एह से, एकरा से जुड़े के बारे में सोचत त रहनीं जा, बाकी डर के चलते, तनी हिचकत रहनीं जा। बाकी एक दिन हिम्मति जुटा के मैदान में, कूदि पड़नी जा। धन्धा चले लागल। कमाई होखे लागल। एक–एक राति में, सइ–सइ रुपया तक कमइनी जा। कबो–कबो गाहक कम भेंटइला पर, कमो कमाई होखे, बाकी काम ठीके चलत रहे। राति भरि के काम, दिन भरि सुताई, का हरज रहे। ई नीनि त, दिन भरि के, बस के धड़धड़ाहटो ना तूरि सके। ऊपर से होटल के बढ़िया खाना, मन के आनन्द दे जाउ, से अलग। एही कमाई से, हम अपना खातिर, नया बिछवना बनववनी, जाड़ा खातिर नया कम्मर किननी। सांझि के उठला पर, जब ले ई दोकान खुलल रहे, तब ले आपन कुलियो वाला काम चलिये जात रहे, त का पूछे के। एह बीच राति के कई बेर पुलिस के छपो पड़ल, बाकी हमनी के सावधान रहनीं जा, आ पुलिस वर्दी देखिये, परा जाईं जा। कई साल बीति गइल, अब ई कुछ ठीक से इयादि ना रहे। जिनिगी कुछ हद तक सेट हो गइल रहे, कि एही बीचे, एक दिन राति के, अचानक सादा वर्दी वाला पुलिस के छापा पड़ल आ कई आदिमी पकड़ा गइले। ओह में, हम आ मुन्नो रहनीं जा।

राति भरि थाना के लॉकअप में रहनीं जा। दोसरा दिने सभकर कोर्ट में पेशी भइल। एह में जेकरा–जेकरा पीछे, केहू रोवे–गावे वालारहे, तनी समर्थ रहे, भा कर्जा–रीन काढ़ि के अपना आदिमी के छोडा सकत रहे, ऊ त आपन–आपन वकील क के, अपना–अपना आदिमी के जमानत करा लीहल, बाकी जेकरा–जेकरा पीछे केहू नारहे, ओह सभ के सजा हो गइल। अब अपराध कवनो संगीन त रहे ना, एह से सभकर सजा, एके समय खातिर भइल। छव महीना कैदे बामुशक्कत।

बात छवे महीना के रहे, बाकी जेल के भीतर, बहुते कष्ट भइल। ओहिजा के नजारा त अलगे रहे। एगो त खचा–खच भरल जेल, ऊपर से, केहू बड़ा कैदी रहे, केहू मझोला त केहू छोटा। हमनी के गिनती सभसे छोटा में रहे। बड़ा कैदी में, केहू खून क के आइल रहे, केहू डकैती त केहू बड़हन लूटपाट। छोटा कैदी पर, बड़ा कैदी के रोब चले। जवना सेल में ओकरा के

राखल जाउ, ओह सेल के बड़ा कैदी के ओकरा सेवा करे के पड़े। ओकर कुल्हि हुकुम, ओकरा माने के पड़े। ना मनला पर, मार–पीट सहे के पड़े। कतना छोट कैदी त, जेकर बाप–मतारी रहले भा समर्थ रिश्तेदार रहले आ जेकरा लाख कोशिश का बादो, ऊ ओकरा के छोड़ा ना पावल रहले, ओकर जान बचावे खातिर भा सेवा करे से बचावे खातिर बड़ा कैदी के, ऊ लोग, सेवा कर का रूप में, भेंट चढ़ावे, तब जा के ओकर जान बांचे। बाकी हमनी के पीछे, अइसन के रहे, जे मदत करित, से हमनी का त ओह लोग के सब हुकुम माने के पड़ल।

जेल से छूटि के अइनी जा, त बाहर के नजारा त जस के तसे रहे। ओकरा में कवन बदलाव होखे के रहे, कि होइत। सब काम, पहिलहीं लेखा जइसे के तइसे चलत रहे। ऊहे बस स्टेन्ड, ऊहे रिफ्यूजी लेखा भिखारिन के नया–पुरान दल। ऊहे शराब के दोकान। ओसही चलत राति के कारबार। सब कुछ ओइसहीं। हं, फुटपाथ पर परल, हमार ओढ़ना–बिछवना, गायब हो गइल रहे, जवना के नया से बनवावे के चिन्ता, अलग से लागल हमरा।

लोगन से सुनले रहनी कि, एक बेरि जे जेल चलि जाला आ उहाँ के बदमाशन के संगति में पड़ि जाला ऊ, अधिकतर बदमाशे बनिके निकलेला, बाकी भगवान के लाख–लाख धन्यवाद, कि हमरा संगे अइसन कुछ ना भइल। बाहर अइला के बाद, हमार मन बदलि गइल रहे। शराब के ओह दोकानि का ओर त फेर से, ताकहूँ के मन ना कइल। मुन्नो, कुछ कुछ हमरे मत के रहे, एह से, पहिले त अपना के फेर से खड़ा करे खातिर, हमनी का, एक बेरि फेर आपन ऊहे पुरनका धंधा, मोटियागिर शुरू कइनी जा। आखिर, जीये खाये खातिर कुछ त करहीं के रहे। बाकी हमार मन, अब एहू में ना रमत रहे। हम अब आपन रास्ता बदलल चाहत रहनी आ एही सिलसिला में, हमार मन जाके टिकल रेक्शा पर। अब, हमरा मन में, रेक्शा चला के आपन पेट पाले के भाव पेदा होखे लागल रहे। आखिर कुछ त स्थाई होखे आ एह पुरनका लीक से हटि के होखो। मुन्ना हमरा से सहमत ना रहे, बाकी हम, अपना अभियान में जुट गइनीं। मोटियागिरी में, जवना–जवना रेक्शा से, मारल उतारि के, हमनी का स्टेशन में पहुँचावल करीं जा, ओहमे से, हर रेक्शावाला पर हमार नजर टीके लागल। सबसे, मोटा–मोटी परिचयो होत जात रहे। अब जवान रेक्शा वाला त बात सुनिहें ना, एह से, बहुत दिन से, हमार नजर, एगो बूढ़ रेक्शा वाला पर टिकल रहल। एक दिन, आव देखनी ना ताव, ओह बूढ़ा रेक्शा वाला बाबा के एके बेरि गोड़ पकड़ि लिहनीं। कहनी– 'बाबा, हमरा पर उपकार कइ द। हमरा के रेक्शा चलावे सिखा द। हमहूं, रेक्शा चलावल चाहतानी। तूं जवन कहब, जइसे कहब, हम करबि, बस हमरा के आपन चेला बना ल।'

जाने कइसे, ओह रेक्शा वाला के मन, पसिजि गइल। ऊ बाबा, राजी हो गइले आ दुइए–चारि दिन में, ओहिजे ओही स्टेन्ड में, थोरे–थोरे देर के अभ्यास करा के, हमरा के रेक्शा चलावे सिखा दिहले। हमार मन, सातवाँ आसमान पर पहुँचि गइल, बाकि असली मुसीबत, अभीं टलल ना रहे। अब रेक्शा कहाँ मिली, जवना के हम चलाइबि? अब आपन रेक्शा कीने के बेंवत त रहे ना। अइसन समय में, फेर ऊहे रेक्शा वाला, बूढ़ा बाबा, कामे अइले आ अपना रेक्शा मालिक से बात क के, हमरो खातिर, एगो भाड़ा के रेक्शा के व्यवस्था करवा दिहले। हम त जइसे नाचि उठनी।

दोसरे दिन से, हमार रेक्शा चलावल शुरू हो गइल। रूट उहे, हावड़ा से सलकिया, बान्धाघाट, बाबूडंगा वगैरह के रखनी। शर्त ई रहे कि दिन–भरि रेक्शा चलवला का बाद, सांझि खा, रेक्शा भाड़ा का संगे, रेक्शा के मालिक का दरवाजा पर खड़ा क देबे के रहे। बाकी के कुल्हि कमाई हमार। हं, अगर रातियो के रेक्शा चलावे के होखे त ओकर भाड़ा अलगा से देबे के रहे। बाकी एह कमाई में एगो शर्त अउरी रहे, कि रेक्शा में, छोटा–मोटा, टूट–फूट भइला पर, ओकर रिपेयरिंग, रेक्शा वाला खुद करवाई आ बड़ खराबी भइला पर, ओकरा के रेक्शा मालिक दूर करवाई।

त लीं साहब! हम रेक्शा चलावे लगनी। अब लोगन का हमार नांव पप्पू–प्रसाद त मालूम रहे ना, एह से, ऊ लोग हमरा के रेक्शे वाला कहि के पुकारल शुरू कइल। ओहू में कइसे? जहां खाली रेक्शा देखले, बोलि पड़ले– ए रेक्शा! सलकिया चलबऽ? ए रेक्शा! बांधाघाट चलबऽ? यानी कुल्हि मिला के, अब हम ओह लोगन खातिर एगो नांव ना, संबोधन भरि रहि गइल रहनी– 'ए रेक्शा!'

बाकी एगो बात बताईं साहेब! हमरा आजुवो, अपना पुरनका अड्डा से बड़ा लगाव बा। हम, हफ्ता में, एक बेरि ओहिजा जरूर जाइले। अब हमार पुरान साथी सभ त ओहिजा बाड़े ना, त नवके लइकनि सभ के संगे, आपन मन बहलाईले। टाफी–बिस्कुट, कुछ लेले जाईं ले, आ उन्हनी में बांटीले। उन्हनी के खुश होत देखि के हमहूं, खुश होंइले। कबो–कबो कपड़ा–लत्ता, कवनो–कवनो के दे आंइले। मन बहलाई ले। बहुत सोचींले बाकी उन्हनी खातिर कुछ ठोस करे में, अपना

के हमेशा असमर्थ पांई ले। हाय रे, भगवान तोहार खेला, तोहरा आगा, हमनी लेखा लोग का हमेशा लाचारे रही? मन में सोचीले।

सोचे के त बहुत कुछ सोचींले। अपना पांव पर अब खड़ा हो गइनी। अब राति खा, फुट–पाथ पर सूतल छोड़ि देले रहनी। अपना कमाई से, सलकिये इलाका में, एगो खोला–बाड़ी में एगो कमरा, अपना रहे खातिर भाड़ा पर ले लेले रहनी। बाकी रहनी त अकेलहीं। खाना–पीना अबहिंयों, होटले में होत रहे, से अब आपन घरो बसावे के खेयाल, हमरा मन में, उठे लागल रहे। बाकी सवाल रहे कि हमरा लेखा अनाथ से, के अपना लइकी के बिआह करी?

बाकी, एह दिन, एकरो उपाइ निकलल। एक दिन, हम अपना पुरनका अड्डा पर गइल रहनी। छोट–छोट लइकनि में बिस्कुट–लमचुस, बांटत रहनी, कि तबहीं, समाने से स्टेशन का ओरि से सबितरी आवत लउकलि। ई हमनी के दल में, एक–दू दल बाद, शामिल भइल रहे एह धंधा में। बाद में, लोकल ट्रेन में घूमि–घूमि के आ गाइ–बजाइ के भीखि मांगल शुरू क देले रहे। एही से, दिन में, कमे लउकति रहे। अब त निकहा सेयान हो गइलि रहे। एकर बाप ना रहले, खाली माइये रहे, बूढ़, बेमार। जाने ई राजी हो जाउ, त एकरे से, हम बिआह कलीं त का हरज बा? देहिं से, जवानी फूटि चलल बा एकरा। जाने हब एकर भविष्य का होई? कवना बदमाश के नजर एकरा पर गड़ि जाई आ एक दिन, एकरा के बहला–फुसिला के, बेसी कमाई के लालच दे के भा कभी राति–बिराति में, उठा ले जा के, कहां बेंचि–भठा दीही। कम से कम एकरो से बिआह क के घर त बसा लेइब।

ईहे कुल्हि सोचत–बिचारत, एक दिन जाके हम, ओकरा माई से भेंट कइनी। ओइसे त ऊ हमरा के जानते रहे, हमेशा, एहिजा देखलहीं रहे, बाकी आजु ओकरा से खास क के मिले के कारण, अपना मन के इच्छा, ओकरा पर जाहिर कइनी। हम कहनी, कि "अगर अइसन हो जाई त ए अम्मा, तूंहूं चहबू त हमनिये के संगे रहि सकेलू।" हमार बात सुनि के, एक छन खातिर ऊ तनी चिन्तित भइली, फेर कहली, कि, 'ए बबुआ! ओइसे त हमनी में, बेटी–दमादे के घरे के पानियो ना पीयल जाला, बाकी अबहिये हम कवन आपन कमाई खात बानी? आखिर त बेटिये के कमाई नू खात बानी, त बाद में दमादे के कमाई खाये लागबि, त कवन जे पाल लागि जाई? बाकिर एक बेरि सबितरियो से पूछि ले तानी। अगर ऊ राजी हो जाई त, हमरा कवना बात के एतराज होई? अरे, जब हमहीं कवनो जाति–बिरादरी के नइखीं रहि गइल, त दोसरा के कवन जाति–बिरादरी पूछे के बा?

सबितरी से पुछाइल। अउर कुल्हि बात के त ऊ महत्व दिहलसि कि ना, ई त ना पता चलल, बाकी माई के संगे रहे के बात पर ऊ राजी हो गइलि। एह तरह से, हमनी के बिआह हो गइल, ओहिजे के एगो मंदिर माला पहिरा के आ सेनुर टीकि के। अरे, अब हमनी के कवन बर–बिरादरी रहे, कि बरियाति साजे के रहे, आ भोज देबे के रहे। बस, अपना ओही दल में, कुछु मिठाई कीनि के बांटि दिहनी जा आ ओही दिने, सबितरी आ ओकरा माई के लेले–देले हम अपना डेरा पर आ गइनी, अपने रेक्शा पर बइठा के।

आ ओही दिन से हो गइनी हम, पूरा के पूरा घरवासी, पप्पू प्रसाद रेक्शावाला। हमरा खुशी बा कि हम अपना दल का दलदल से एगो कली के फूल बनि के मुरझाये से पहिले बचा लिहनी। हमरा दल के अउरी लइका–लइकनि में, ई विचार पैदा हो जाइत त, कतना नीक होइत। हमार अबहिंयो, ओह अड्डा पर आइल गइल जारी बा। ••

■ 28/4, भैरवदत्ता लेन, नन्दी बगान,
सलकिया, हावड़ा, 711106।

Anjoria.com
पहिलका भोजपुरी वेबसाइट

डिक्टेशन

शिवपूजन लाल 'विद्यार्थी'

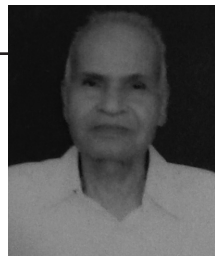

हमनी के चार–पाँच संघतिया बतकही करत रहीं जा आ बात घपला–घोटाला आ राजनीति के अपराधीकरन के गलियारा से शुरू होके के मौजूदा शिक्षा में आइल गिरावट, छात्रन में दिन–प–दिन बढ़त उदन्डता, अनुशासनहीनता शिक्षकन में अध्यापन–कार्य के प्रति अरूचि, उदासीनता, कर्तव्यहीनता आ यथोचित ज्ञान के अभाव के दरवाजा प आके अँटक गइल।

एह प्रसंग में एगो साथी अपना छात्र–जीवन से संबंधित एगो बड़ा मजेदार घटना सुनवले।

घटना साथी के गाँवे के मीडिल स्कूल के रहे जब ऊ संभवतः सातवाँ किलास में पढ़त रहले। एगो शिक्षक, जे वोही इलाका के रहे वाला रहले, कुछ पइसा खरच क के आपन तबादला कराके वोही स्कूल में आ गइले। संजोग से योगदान के पहिलका दिन शिक्षक के हमनी के साथिये के कक्षा में अंग्रेजी के घंटी मिलल। ऊ मुख्य रूप से अंगरेजिये के टीचर रहलन। उनका अपना अँगरेजी ग्यान के बड़ा गुमान रहे। ग्रामर–ट्रांसलेशन पढ़ावले खातिर उनका किताब के जरूरत ना पड़त रहे। सभ रूल–रेगुलेशंस उनुका जबानिये इयाद रहे। एह से कक्षा में ढुकते छात्रन प आपन गेयान के रंग जमावत सवालिया अन्दान में बोलले– 'का पढ़े के बा– ग्रामर कि ट्रांसलेशन?'

सभ लइका एक सुर में बोल उठलन– 'ग्रामर–ट्रांसलेशन ना सर, डिक्टेशन। ई डिक्टेशन के घंटी ह।' अब तऽ मास्टर जी के हक्का–बक्का।

डिक्टेशन? कमबख्त ई कवन विषय ह? ग्रामर–ट्रांसलेशन, प्रोज–प्रोयट्री के नाँव सुनले रहीं, पढ़ले रहीं। ई डिक्टेशन कवना बला के नाँव ह? लइका बार–बार हल्ला करेंऽ 'सऽ सर–सर, डिक्टेशन लिखाई।' अब तऽ मास्टर जी के हाथ–गोड़ फूले लागल। अकिल कामे ना करे। का करीं का ना, कइसे स्थिति के सम्हारी। ई तऽ माथ मुड़ावते ओला पड़ल। आजु योगदान के पहिलके दिन आ आजे कटघरा प चढ़ि जाये के पड़ल। गेयान के जोर–जोम के हवा निकल गइल।

मास्टर जी भीतर–भीतर नरवस रहलन। लइकन के शोर कइला से उनकर माथा अउर खपत हो गइल। उनुका लागल जइसे उ लइकन के पढ़ावे ना बलुक उनुका आगा आपन इम्तहान देवे आइल होखसु आ बिना प ढ़ल पाठ से सवाल पूछ दियाइल होखे। बड़ा उधेड़बुन में पड़ि गइलन। छक्का छुटे लागल, बाकिर लइकन के आगा हथियार डाले उनका गवारा ना रहे।

इहे सोच–विचार आ ऊहापोह के चकोह में पड़ल रहन, तले एगो लइका उनका अंगरेजी के किताब थमावत बोललस– 'लीं सर, एकरे में से कतहीं से डिक्टेशन लिखाई।'

किताब हाथ में लेते मास्टर जी के बुझाइल, कुहासा कुछ छँट रहल बा। समाधान के रस्ता कुछ–कुछ नजर आ रहल बाटे। थोरिका अकिल से काम लेबि आ धीरजा के टँगरी पकड़ले रहबि, तऽ संकट दूर हो जाई।

ऊ भँवर से निकले खातिर जोर–शोर से हाथ–गोड़ मारे लगले आ एने मास्टरजी के किताब देला के बाद लइकन के बेसबरी के बाढ़ बढ़ल जात रहे।

मगर मास्टर जी जल्दिये निकास के रस्ता ढूँढ़ लिहले। विचार कइले, थोरा अलगा हटि के लइकन के गतिविधि आ प्रतिक्रिया के वाच करी। बोलले– 'तू लोग थोरिका देर शांति से बइठऽ भा कुछ लिखऽ–पढ़ऽ लोग। हमार कलम ऑफिस में छूट गइल बा। हम लेके आवत बानी।'

'ठीक बा सर, राँवाँ जाईं। तले क्लास–मनीटर हमनीं के डिक्टेशन लिखइहें' – एगो लइका बोल उठल।

'मनीटर लिखइहें?' – मास्टर जी जिज्ञासा भरल नजर से छात्रन का ओर देखले।

'हँऽ सर! जब–जब टीचर गैर हाजिर रहेले, मनीटरे डिक्टेशन लिखावेलन। आ कबो–कबो टीचर के रहलो पर मनीटर के लिखावे के पड़ेला।'

'हँ सर, टीचर कुरसी प बइठ के अखबार पढ़ेलन आ मनीटर के लिखावे के बोल देवेलन। अखबारे पढ़ते–पढ़ते कबो–कबो टेबुल प गोड़ पसारि के फोंफ काटे लगिहें।' – एगो दोसर लइका बात के जइसे पूरा कइलस।

'तऽ ठीक बा, मनीटर तब तक लिखावसु। हम ऑफिस से होके आवत बानी' – ई कहिके मास्टर जी कक्षा से निकलि के ऑफिस का ओर चल दिहले। मगर दू चार मिनट का बाद बगल वाला कमरा के पिछुआरी खिड़की से ढूका लागि के सुनले रहले। एगो लइका जोर–जोर से किताब से बोलत रहे अउर सभ लइका लिखत रहन स। मास्टर जी के मुँह से हठात् निकलल– 'धत् तेरी के! इहे डिक्टेशन हउवे? तब से हम उल्लू बनल रहीं। नरवस भइल रहीं। अतना छोटहन आ मामूली चीज के ना जानला से।'

उनका अपना ऊपर हँसी आइल। मगर डिक्टेशन का राज जनला का बाद, अब तऽ ऊ जइसे तीसमार खाँ बन गइल होखसु। महाज्ञानी पंडित हो गइल होखसु! गरब से सीना तानि के तेज कदम से कक्षा में चहुँपले आ रोबदार आवाज में बोलले– 'द दऽ, अब

हम डिक्टेशन लिखाईं। मनीटर के उच्चारण सही नइखे होत। आवाजो बड़ा कमजोर बा आ लइका सभ हल्ला करत बाड़न स।'

मनीटर का हाथ से किताब झटकि के घूमि–घूमि के गंभीर आवाज से मास्टर जी अँगरेजी के वाक्य डिक्टेट करावे लगले। ओकरा बाद सभ लइकन के कॉपी करेक्शन कइले ओ ओह पर आन दबंग हस्ताक्षर मारि के चहकत क्लास से बाहर निकलले।

छुट्टी का बाद भर रास्ता सोचत रहले, अपना के कोसत रहले। ई डिक्टेशन के भूत आजु हमरा के बड़का अफदरा में डलले रहे। अगर अकिल से काम ना लेतीं त सभ रंग झड़ि जाइत, इज्जत खँखरी हो जाइत। बड़ा मोसकिल से जान बचल।

साथी के ई घटना सुनि के हम सभ संघतिया देर तक हँसत रहलीं जा।

आजो जब हमार नन्हका रिंकू डिक्टेशन लिखावे के हमरा से जिद करेला, हमरा ओह साथी के छात्र–जिनिगी के घटना मानस–पटल प नाचे लागेला आ बरबस ओठन प मुस्कुराहट तैरे लागेला। ••

गुंजन कुटिया, नारायणी विहार कॉलोनी,
चितईपुर, वाराणसी

लघुकथा

कोइला में हीरा

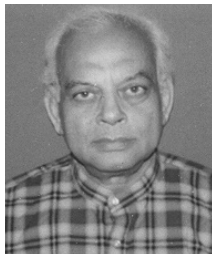

राजगुप्त

मोहन गाँव के एगो बड़हन किसान रहले। अउला खेत–खरिहान, बाग–बगइचा रहे। मोहन के मेहरारू, सुदामी देवी। एह लोग के कइगो लड़िकी–लड़िका रहले। चउथका लड़िका नेमचन्द सुघर–सुन्नर आ पढ़े में बहुत तेफा रहले। कवनो दुसरा प्रदेश में बहुत बड़का अफसर रहले।

नेमचन्द अपना बाप–महतारी के हमेशा ओरहन देसु कि कबही अपना लड़िका किहां आवत नइख जा। कबहीं आवऽ। आके एक–दू महीना रहऽ जा। एइजा ढेरकी ले मंदिर बाड़े स। घुमऽ फिरऽ जा। देवी–देवता के दरसन करऽ जा। मन बदलि जाई। मिजाज तर, दिल खुश हो जाई।

बड़ी चिरउरी–बिनती कइला के बाद मोहन पाँच बरिस बाद नेमचन्द के बाति मनले। उनका बंगला पर चोहँपले। नेमचन्द के आफिस, कार, बंगला, नोकर–चाकर देखिके मोहन सचहूँ आश्चर्ज कइले। ओहू से जेयादा आश्चर्ज भइल नेमचन्द के मान–सम्मान देखिके। इ सब देखिके मोहन के मुँह से निकल जा– बाप रे बाप! एगो आदमी के भला एतना मान–मरजाद आदर–सम्मान?

नेमचन्द के दोस्त राजकुमार ओही कम्पनी में काम करत रहले। बड़ पद पर रहले। जब सुनले कि इयार के माई–बाप आइल बाड़े त उनका के आदर सम्मान देबे खातिर एक दिन राति खां अपना घरे खाना पर बोलवले। पचास डेग दूर राजकुमार के बंगला रहे। नेमचन्द, राजकुमार के बँगला देखाइ के बढ़िया से समझा–बुझाइ के माई–बाबू के आगा भेजि दिहले। कहले, तोहन लोग आगा बढ़ऽ जा, पाछा से हम आवऽतानी। मोहन सुदामी संग आगा चलले। राजकुमार के बंगला पर चोहँपले। राजकुमार दुआरि पर खाड़ रहले। मोहन करिया कलूट बांस लेखा दुब्बर पातर सुदामी सखुआ के धरन अस मोटहन रहली। अनमन तरकुल आ बरगद के फेड़।

मोहन आ सुदामी के देखि के राजकुमार सवचले, 'आप लोग?'

मोहन जबाब देत कहले, 'साहेब पाछा से आवऽ ताड़े।'

मोहन के जबाब सुनि राजकुमार ओह लोग के आदर से बइठहूँ के ना कहले। बलुक अइसन देहि–धजा देखि छनकि के रुखर बोलले।

'तबले रुकऽ जाऽ!'

मोहन अबे कुछ कहते तबले नेमचन्द लगे आ गइले। अचकचाइल राजकुमार दुआरि का ओरि ताकि के कहले, 'माता–पिताजी'।

राजकुमार के एतना बचन सुनि के नेमचन्द अपना माई–बाबू के हाथ धधाइ के पकड़ि कहले। ''आवऽ माई, आवऽ हो बाबू! आवऽ जा भीतरी चलल जा।'' मेहमान के आगा राजकुमार के रास्ता देखावत चले के चाहीं कि नेमचन्द अपना माई–बाप के हाथ पकड़ले आ भीतरी चलि दिहले। ई देखि राजकुमार लजाइल, चकरिया गइले। ••

राज साड़ीघर, चौक, बलिया (उ०प्र०)

कहानी

लोक-विश्वास

वेद प्रकाश पाण्डेय

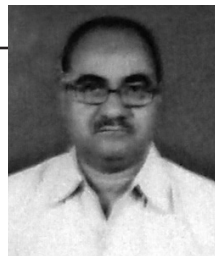

जनार्दन अपना दुआर पर बइठ के ब्लेड से दाढ़ी बनावत रहलन। दिन रहे शनिच्चर। सबेरे कऽ सात बजत रहे। मजब्बूला नाऊ अब गाँव में घूम–घूम के दाढ़ी–बार नइखन बनावत। सड़क पर आपन सैलून खोल लेले बाड़न। जब ढेर रुपिया मिले के आगम होला तऽ बार उतारे, चाहे, शादी–बियाह कऽ मौका से, मनावन कइला पर आके एहसान जतावेलन।

शनिच्चर के दाढ़ी आ नोंह काटत देख के जनार्दन कऽ माई कहे लगली–

– 'का ए बचवा जब से तूं पढ़गीत पढ़ के बहरा कलकत्ता में नोकरी का करे लगलऽ, आपन खनदान आ घर–दुआर के रितियो–रिवाज बिसरा देहले बाड़ऽ।'

– 'का भइल माई?'

– 'अरे कहीं शनिच्चर के दाढ़ी–बार बनावल जाला? नाखून काटल जाला?'

– 'तऽ का हो गइल?'

– 'हो का गइल। दोष परेला। ई कुल बरकवला से लोक–परलोक सँवरे ला।'

– 'माई! ई कुल डपोरशंखी बात हमरा कपार पर कबले ढोअइबू? दाढ़ी ना बनवला पर आफिस कऽ साहब–सुब्बा खिसियालन सऽ। ई कुल पिछड़ापन कऽ निशानी हऽ। ठीक–ठाक ना रहला पर गँवार कहेलन सऽ।'

तूं कुल कह जा। लेकिन पहिले क रीति–रिवाज, लोकविश्वास के अनुरूप आदमी के रहहीं के चाहीं।

फिर, रूक के कहे लगली कि देखले रहल हऽ नऽ कि पूरब जाए खातिर तोहार बाबा जतरा कऽ दिन देखवावत रहलन। नोकरी पर कलकत्ता जासु तऽ अतवार के। चाहे मंगर दिन के। ऊ कवनो घसगढ़ा थोरे रहलन। बैंक कऽ मजेर रहलन। सस्ती कऽ टाइम में उनकर तूती बोलत रहे। थोरकी भर रुपिया कमायँऽ। कलकत्ता से कमा के छुट्टी पर आवें तऽ घर भर के लुग्गा–कपड़ा, धोती, गंजी, छाता, बल्दी ले आवें। ओ घर तोहार तीनों चाची लोग एक्के में रहे।

पास बइठल मुनेसर भाई कहे लगलन, 'हमार बाबूजी तऽ एतना अंधविश्वासी रहलन कि मुकदमा लड़ें, तारीख पर जायँ तऽ खाली बल्टी, चाहे गगरी सामने ना पड़े के चाहीं। अगर सामने देखाइ गइल तऽ घर भर के समझऽ लऽ फजीहत कइ दिहन। एक बेर कचहरी जात उनका सामने मनुआ बो कनऽबरी पड़ गइल रहे, आगे। ओहि घरी संगे जात बनरसिया से कहलन कि आगे परि गइल बा। आज योगी दादा वाला मोकदमा कऽ फैसला हमरा पक्ष में ना होई। देखिहे, बनारसी।'

सहिए भइल। फैसला सुनला कऽ बाद बनारसी, गया दादा से कहे लगलन कि, 'ठीके कहत रहल हऽ। नतीजा तऽ गाँव कऽ खोरी से निकलते तूं सुना देहले रहल ह।'

गया दादा कहलन, 'ए बनारसी ई, कपरा के कुल बरवा अइसहीं नहीं पाकल हउवन सऽ। अनुभव कऽ धूप–छाँव सहिके एकर विश्वास मन में समाइल हऽ।'

दुआर पर सात–आठ आदमी बटुरा गइल रहलन। उत्तर–दक्खिन पुरवा पर से वंशरोपन, लालमुनि, रामराज, राधेश्याम जइसन नवयुवकन कऽ जमावड़ा हो गइल रहे। बरखा–बुन्नी पड़ला के चलते काम–धाम ठप्प रहे। जनार्दन भाई सबका खातिर घर में ले चाह मँगवलन। सब चाय कऽ चुस्की लेत रहे। एहि बीच इनरमन कुशवाहा हाँफत–काँपत आके कहलन, 'आज तऽ गजब हो गइल।'

लोग, चिहुँक के पूछे लगलन–'का हो, का गजब हो गइल?'

– 'शिवलोचन का बांयाँ अलंग पर गहुँवन साँप गिर गइल रहल हऽ।'

– 'काट देहले बा का?'

– 'नाहिं बच गइल बाड़न। कटलस ना बाकि दुशमन समझि के उनके, किशोर, गंगा आ मुनवा मिल के लाठी से मार देहले हां सऽ।'

जनार्दन कऽ माई चट से कहली– 'शिवलोचन के हक में ई सुभ दिन बा। बायाँ अलँग पर साँप के गिरल सुभ होला।'

– 'माई! तूंहूँ नऽ अइसन कब्बो–कब्बो बात करे लागेली कि का कहीं? चिरई क, जान जाय लइका के खेलवना। ओह बेचारा कऽ जान बाँच गइल। केतना बड़ भाग्य बा। आ, तूँ कहत बाडू कि उनका खातिर सुभ घड़ी बा।'

– 'अच्छा देखिहऽ जा कि उनके कहीं न कहीं से धन मिली। ई कुल हमार पतियावल हऽ।'

रामराज, जनार्दन कऽ माई के हाँ में हाँ मिलावत कहे लगलन कि काकियो कऽ कहल सही हो सकेला। ई लोग उमरदराज भइल। समाज में घटल देखत–सुनत आ अपना पर बीतल समय का हिसाब से बनल बा। लोक–विश्वासो एकदम गलत ना होला।

– 'ए बबुआ! जनार्दन तऽ हमरा बात के हँस के उड़ा देलन। लेकिन गांव–समाज जवन बात मानत आवत बा। हमार बाप–दादा देखत आवत बा। ओके हम काहें ना मानीं? काहें छोड़ देईं? इनका इम्तहान देत जाए के बेर रमुआ धोबी पड़ल रहे। गदहा पर लादी लेके अपना गाँवें जात रहे। ओही दिन मुरदो सामने पड़ल रहे। जतरा बनल। नोकरी मिलल। ई

कुल अपना मन मनला कऽ चीज हऽ। केहू पर कवनो जोर जबरदस्ती थोड़े बा। देखऽ ना, रामकृपलवा कऽ माई के कहत बानी कि जो पचोखर से, डाक्टर किहें से, दवाई लिआव, लेकिन ओझा–सोखा का फेर में पड़ल बा। रोज नगीना भाई से नतिया के झाड़–फूँक करवावत बिया। चूल्हा में लाल मरिचा जरवावत बिया। का कहीं? समझावत बानी तऽ कहत बिया तोहरा सिपाही अदमी के का अक्कील बा। ऊ खेलते खानि, दुपहरिया में, बगईचा में डेरा गईल बा। ओकरा ऊप्पर तरकुलवा पर कऽ नेटुआ बाबा कऽ परछाँई पर गइल बा।' लालमुनि परतोख देत कहलन।

सब कोई ठठाइ के हँस दिहल। 'जनार्दन भईया एह देश के सुधरे में बड़ा टाइम लागी। अबहियों गाँव क मरद–मेंहरारू एतना अंधविश्वास में जकड़ल बा कि का कहल जाय? अदमी चांद पर जा रहल बा। मंगल ग्रह पर रहे के सोच रहल बा। आ, ई लोग, अबहीं भूते, पिशाच का फेर में डूब–उतिरा रहल बा। वाह रे जमाना!' दुअरे बइठल राधेश्याम जनार्दन के पच्छ में सवाल दगलन।

एही बीच वंशरोपन कहे लगलन– 'गाँवों धीरे–धीरे बदल रहल बा। अब जयमाल प्रथा से बियाह हो रहल बा। लइका, लइकी के देख–सुनके, पसन्द कर रहल बाड़न सऽ। पर्दा–प्रथा खतम हो ता।'

बेचू बो काकी जब सूरुज भगवान के जल देके खाली भइल तऽ सबका ओर मुँह कइके सवाल कइली 'ए रामराज आजकल रतिया कऽ कउवा काहें ढेर बोलत बाड़न सऽ हो?'

– 'हमहूं सुनीलां काकी!' रामराज कहलन। राधेश्याम काहें के चुप रहसु? कहले, 'हम तऽ खेत घुम्मत, कई दिन ले, सियारनों के फेंकरल सुनत बानीं।'

जनार्दन कऽ माई कहली, 'जानत नइखू बहिनी! ई कुल अकाल पड़े क लच्छन देखात बा।' कहाउत हवे–

'रतिया बोले कागा
दिनवा बोले सियार
तऽ गअँवाँ होवे उजार।'

जनार्दन उबिया गइल रहलन, 'छोड़ माई, ई कुल पुराना जमाना कऽ बात हऽ। दुनिया बदल रहल बा। नया युग क नई सोच आ रहल बा। अब पुरान लोक विश्वास से काम नइखे चले वाला।'

एतने में हरख, दुआर पर बोलावा लेके आ गइलन। 'शिवलोचन चचा किहें सतनारायन भगवान कऽ कथा बा। उहाँ सबके बोलाहटा बा।'

जनार्दन कऽ माई पुछली– 'कवनो खुशी भेंटाइल बा, का हो?'

– 'हँ हो दादी! लइका कऽ, पुलिस में बहाली हो गइल बा।'

जनार्दन कऽ माई कहली– 'देखलऽ जा नऽ। गहुँवन साँप कऽ बायाँ अलँग पर गिरला कऽ आगम।' ••

■ इंदिरा नगर, सुंदरपुर, वाराणसी

जीवन – दर्शन के गीत

✍ गुरुविन्दर सिंह

आजु गाई त गाईं कवन गितिया
मोर जगले – जागल कटल रतिया !

गहिर निसा में डूबल लागे
जियतो में – जस मूवल लागे
अफनाईं धड़के छतिया !
मोर जगले – जागल कटल रतिया !

निनियाँ के फुसलावत रहनी
बइठल लोर बहावत रहनी
भारी भइली कठिन रतिया !
मोर जगले – जगल कटल रतिया !

हमरे ना, ई तहरो कहनी
दिन –दिन विषम होत बा रहनी
चउपट भइली गिरहतिया !
मोर जगले – जागल कटल रतिया !! ••

■ एन –654 सेक्टर – 8, आर० के० पुरम्, नई दिल्ली

कुछ गजल
गंगा प्रसाद 'अरुण' के

(एक)

चमत्कार बा , हाला नइखे ।
तनिको गड़बड़झाला नइखे ।

ई बिकास के राज-सड़क हऽ
कहवाँ ऊँचा - खाला नइखे ।

कवनो अइसन जगह बताईं
जहवाँ हवस -हवाला नइखे ।

छोपनी नइखे केकरा आँखे
केकरा मुँह पर ताला नइखे !

चान- सुरुज उनके घर कैदी
एने कहूँ उजाला नइखे ।

कवन गली, कवना चौराहा
जमकल, बजकत- नाला नइखे !

जेने कोड़ीं, तेने पाईं
कहवाँ घूस - घोटाला नइखे !

(दू)

भाव चलत बा, छाव चलत बा ।
नखरा - तिल्ला - ताव चलत बा ।

उनका कोठे उड़न - खटोला
अपना अँगना नाव चलत बा !

बाटे ऊ मजबूर संगठन
छन-छन में, बदलाव चलत बा ।

'कुन्टल-टन' सबकुछ पचि जाला
अपना खातिर 'पाव' चलत बा ।

फिर से उपटल टीस दरद ऊ
कबके लागल घाव चलत बा ।

नेकी अउर बदी के इहवाँ ---
जुग जुग से टकराव चलत बा !

(तीन)

सोन हरिन संहारिन - धूप
पसरल बा हतियारिन धूप ।

दहकत आँवाँ के तम्मू -
जम बइठल बंजारिन धूप ।

साँस चले भाथी अइसन
भिच्छा प्रान ,भिखारिन धूप ।

'मोहन' मन्तर उचरेले--
'मारन' मतिन चमारिन धूप ।

लट अझुराइल धूरि भरल
लागे निपट गँवारिन धूप ।

तन पर लिखे अम्हउरी से
गोदना गोदनिहारिन धूप ।

उमस पसेना के गगरी --
ढोवे ढीठ कँहारिन धूप ! ••

21- बी ,रोड न०-1, जोन- 4,
बिरसानगर, जमशेदपुर -19

कन्हैया पाण्डेय के दू गो कविता

(एक)

बबुआ हो !

तोहरा खातिर चउथ-जिउतिया का ना कइनी बबुआ हो
नीक लगे जे, सगरी तहके, सँचि के धइनी बबुआ हो !

लखि लखि तहरे सुघर सुरतिया मने-मने अगरइनी
सुदिन समझलीं हम दुरदिन के, आपन पीर भुलइनी
बड़ होखबऽ तूँ,सब दुख भागी ,असरा कइनी बबुआ हो !

नजर-गुजर ना लागे तहके, अँचरा ढाँपि सुतवनी
खुद सुतनी भींजल लेवा पर, तोहके साफ बिछवनी
तोहरा खातिर दुख-बीपत हम कूल्हि भुलइनी बबुआ हो !

करनिनियों के फुरसत कबहूँ मिले न हमके तबले
दूध पिया के, लोरी गा के, सुता न देईं जबले
जबले तोहरा नीन न लागे, हम छपिटइनी बबुआ हो !

अब घरनी बा तोहरा खातिर, अनचिन्हार हम बानी
भइनी हम उघार एह घर में अछइत छप्पर छानी
दूध क बदला अब बिख-बोली सुनि पछतइनी बबुआ हो !
तहरा खातिर चउथ जिउतिया, का ना कइनी बबुआ हो !!

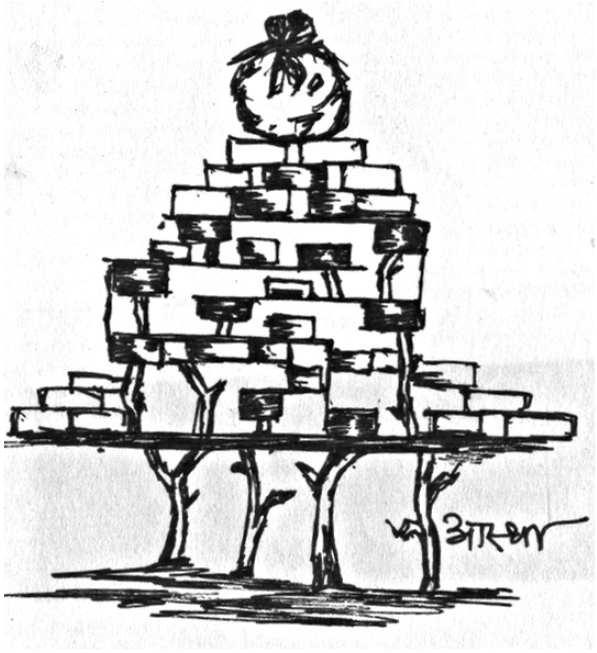

(दू)

अरज (लोकराग)

बेर बेर तोहें गोहरवनी, अरजिया सुनवनी नु हो
बदरा, दिहले न तनिको तुँ कान, बधरिया ना अइलऽ तुँ हो!

खइहें से अब का लरिकवा, झँझाई बखरिया नु हो
बदरा, सूखि जाई रोपल धान, बधरिया न अइलऽ तुँ हो !

चढ़ि जाई माथे करजवा, कि बिगरल समइया नु हो
बदरा चटि गइले चउरा-दिसान, बधरिया न अइलऽ तुँ हो !

अबहूँ से आइ के बरिसि जइतऽ, मनवा हरसि जइते हो
बदरा, देहियाँ मे परि जाइत प्रान, बधरिया जो आइ जइतऽ हो!

घुमि घुमि सगरो बरिसलऽ, झमाझम बरिसलऽ नु हो
बदरा, सूखि गइले सगरी सिवान, बधरिया न अइलऽ तुँ हो !

••

■ आवास विकास कालोनी, हरपुर, बलिया (उ०प्र०)

मनोज कुमार सिंह के तीन गो कविता

(एक)

होला मतलब के जे यार,वफादार ना होला।
चाहे करि लऽ कतनो प्यार, ऊ साकार ना होला।

ना समझेला जिनगी भर,
कबहूँ पीर पराई।
जेकरा पाँवन में ना होखे,
फाटल कबो बेवाई।
बइठल बा जेकरा रग-रग में,
धोखा आ मक्कारी।
उ का जानी कइसन होला,
रिश्तन के फुलवारी।
कबहूँ बगिया फूल आ भँवरा बिन गुंजार ना होला।

मन मधुबन में आग लगा,
केहू छिपके मुस्काला।
कर देला बरबाद डाह में,
खुशियन के मधुशाला।
आ केहू त जीवन भर,
दोसरे खातिर जिएला।
आपन खुशी बाँटि दोसरा के,
गम कीनत फीरेला।
अइसन दोसर कवनो जिनगी में, तेवहार ना होला।

घोर अन्हरिया छा जाला जब,
मन दर्पन के आगे।
लउके ना कुछ साफ नजर से,
बेचैनी तब जागे।
आगे गड़हा,पीछे खाई
निर्णय ना हो पावे।
तब तक केहू राग प्रेम के,
अचके आइ सुनावे।
कइसे कह दीं मन के पीड़ा के,उपचार ना होला।

(दू)

जेतना बाउर गाएब रउवाँ।
ओतने ऊपर जाएब रउवाँ !
चोली, ढोंढ़ी के गीतन से,
पइसा बहुत कमाएब रउवाँ !

बहुते नीमन काम होत बा।
भोजपुरी के नाम होत बा।
धूम मचल गीतन पर रउवाँ,
जईसे बईठल धाम होत बा।
दुर्गा पूजा के सीजन भर,
रंडी नाच नचाएब रउवाँ!

हचकि हचकि के गावत रहीं।
डीजे रोज बजावत रहीं।
ढिम चिक, ढिम चिक नया ताल पर,
नाचत अउर नचावत रहीं।
भोजपुरी के इज्जत सगरी,
बा विस्वास बढ़ायेब रउवाँ।

नाम भिखारी के मिटवा दीं।
राजिंदर के दीप बुझा दीं।
सरदा सिनहा के गीतन पर,
सगरो अब कालिख पोतवा दीं।
भोजपुरी के जयचंद जी,
माला हम पहिराएब रउवाँ।

चोली के रंगोली वाला
समियाना के गोली वाला
छिनराई के बदजुबान से,
अउरी हँसी ठिठोली वाला।
भोजपुरी के फिलिम बनाईं,
निहिचित आस्कर पाइब रउवाँ।।

(तीन) गजल

जबसे माउस के ,खास हो गइल।
मन इ वर्चुअल ,कलास हो गइल।

ज्ञान-गठरी ,मोबाइल भइल,
सोंच सगरी, झंलास हो गइल।

केतना इंसानियत घटि गइल,
जइसे घइला, गिलास हो गइल।

आग मन के, बुझल देखि के,
दिल के चूल्हा, उपास हो गइल।

बीज कइसे उगी, नेह के,
मन में सगरो, खटास हो गइल।

तीन बित्ता के, जिनगी मिलल,
भर समुन्दर, पियास हो गइल।

आदमी मारि के, आदमी,
सोंच लिहलस, विकास हो गइल। ••

जवाहर नवोदय विद्यालय, जंगल अगही,
पीपीगंज, गोरखपुर, पिन-273165

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी के दू गो कविता

सीरत के बतिया

सूरत ना हमरी निहारी ए राजा ।।
सीरत के बतिया बिचारीं ए राजा ।।

ढलती उमिरिया मे चिचुकल चेहरवा
अचके भुलाइल पछिलका कहरवा
केतना ई देहिया निखारीं ए राजा ।। सीरत के बतिया.....

कसके ला मनवा ठसक नाही चलिया
कनवाँ मे करकत सरकेले बलिया
बीतल जवन मत उचारीं ए राजा ।। सीरत के बतिया.....

गरदिश मे निकसल बाली उमिरिया
भइली मोहाल मोर तिरछी नजरिया
हियवा के टीस मत उभारीं ए राजा ।। सीरत के बतिया.....

कहवाँ बचल अब पतरी कमरिया
घेरले बा रोज नवकी बिमरिया
पहिलकी प्रितिया सँभारीं ए राजा ।। सीरत के बतिया.....

हमार नन्हकी

बेर बेर हँसावेले, बेर बेर रोवावेले
हमार नन्हकी।
हमके घुमरी घुमावेले, हमार नन्हकी।

खात के बेरा हाथ थरिया में मारे
तोतली बोलिया से बाबूजी पुकारे
भर घर के भर दिन, मन हरसावेले
हमार नन्हकी ।

बइठल देखे त, खूँट धइ खींचेले
अचके कोंहाले, आँखि दूनों मीचेले
पीट पीट थपरी, सभके बोलावेले
हमार नन्हकी ।

अचके मे रीझेले, अचके मे खीझेले
कबों कंचा खेले खाति हमरो के धींचेले
कबों आगे कबों पीछे, सभ के धउरावेले
हमार नन्हकी । ●●

सी-39, सेक्टर-3, चिरंजीव विहार,
गाजियाबाद (उ०प्र०)

अनपुरहो कथा

कुमार विरल

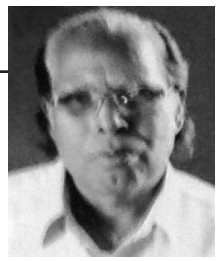

नाट–खुट, गुल–थुल, भक्–भक् गोर, कोरदार उज्जर लूगा पेन्हले अस्सी पच्चासी के उमिरों में घूंघ तनले, खाली अँखिए लउकेला अनपुरहा आजी के। हिरदा बाबा के भउजी रही आ भर गाँव के अनपूरहो आजी। बरमहल बोलहटा देली अनपुरहो आजी, बाकि ना जाने काहे दो बसगीत बो, उनका काथा परोजन, मरनी–हरनी, परब–त्योहार में ना आवसु। कले–कले अनपुरहो के दिन बीतत जाला, अमावट डाले में अमझोरा बनावे में आ हिरदाबाबा के मकुनी बनावे में 'आ 'मार बढ़नी रे' जस–जस बुढ़ात जात बाड़े हिरदा ओत–ओत नखड़ा बढ़ल जात बा। दलपीठी, लउक–जाबर त कबो महुवर। पेट के हिसाबे नइखे। भकोसे लगिहें त अठारह बीस गो मकुनी आ बड़का कँटिया के संउँसे मठ्ठा पी जइहें। ऊपर से चानी में झाँस मारत निझका करूआ तेल चाहीं। दू–चार चुरूआ त नकिए में सुरुक जाले। ई बात भितरिया कहत बानी हम, गाँव नइखे जानत। एगो अएब उनका में रहे। नियम से कबो एह महल्ला, कबो ओह महल्ला, केहु ना केहु के दुआरी पर झाड़ा फिरे के। भोरे घरवइया चिचिआके गारी बाँचे लागें, त बुझाए कि पंडित जी वेद वाचत बाड़न। एक दिन मउगा त हाँथ चमका–चमका गारी देलक– 'अरे निपुतरा, बइया समवना, तोरा के देबी माई कंकार माई उठा लेस। हे सूरूज बाबा तू उगल बाड़ऽ, एकर इंसाफ तूँही करिहऽ।' मउगा टट्टी कुदारी से नाक जाँत के बीगे। हिरदा बेचारू, मुस्किया के आगा बढ़ जासु। पाका पर यानी सार्वजनिक चबूतरा पर पूरा गाँव गरमी के रात में लइका बूढ़ सेआन सूते। कथा कहसु पुरनिया लोग, हमनी हुंकारी भरीं छोट–छोट लइका। हिरदा बाँगस ढेर। एक बेर बाँगत रहन– 'जनलऽ खिरोधर पाँच साल पहिले कनवाँ भर निरउठ निछक्का घीव ले आइल रहीं। चोरवा बहू से कीनि के आ रोज दाल में डाल के खाईला। अबहुओं निकहा आधा कनवाँ बाँचल बा।' ना रहाइल मनरिकवा के, चट से जबाब देलक– 'त सींक में बोर के खात होइबऽ बाबा।' 'हिरदा जोर से डपटले, 'चोप ना त जीभ खींच लेब। चइता के सार मुंह लड़ावत बाड़े।'

हँ अनपुरहो आजी बरोबर झिरकेली हिरदा बाबा के, बाकी काहे के? लत–लुट बाई ई, मरले पर जाई। अनपुरहो आजी उलवा उलावेली घुनसारी। बूंट के मोंथ के भुँजावेली। तब सोन्हई आवेला सतुई में। फेर जाँत में पीसेली आ जँतसार गावेली। बुझला उनकर दरद जँतसार के झींक में पिसा रहल बा तबे त सतुआ सोन्ह हो जाला। अमृत फेल बा। गदबेर होखे के पहिले बेचारो साहेबा इंनार पर से दू घइला पानी लाके धीरसीर पर धर देली। फेर करमी के साग टूँग के राख देली। अदउरी बटोर के आ अँचार के बोइआम हिला के कोनसिया घर के ताखा पर राख देली। तब चिपरी लेके चूल्ह बारेली सेकराहे। भर गाँव जूट जाला लइकी लइका बूढ़ जवान आग माँगे खातिर। आग चूल्ही में से निकल–निकल बँटा जाला संउँसे गाँव में आ अनपूरहो आजी के गांव के सब समाचार मिल जाला। केकर पतोहि परसउती में बिआ, केकर गइया बिआइल, कवना के कुत्ता कटले बा, केकरा का भइल, सब जानकारी मिल जाला अनपूरहो दादी के। फेर रसोई बना के बड़का अलीगढ़ के ताला बन करके अंचरा के खूँट में चाभी के झोंझ बान्ह के निकसेली अनपुरहो आजी कोइरार में। बेचारो के दम्मा ई जड़वा में जास्ती पैमाल कइले रहेला। हँफनी से घरघरात बेदम भइल रहेली। झूला में बटाम घेंटी तर आ लुगा आ सलूकां में अनपुरहो आजी प्राचीन भारत के इतिहास लागेली। जवना में गाँधी बाबा के चरखो चलेला आ लोकगीत, लोकगाथा आ लोक–नाटक के चलत–फिरत कारखाना दिखाई देला। ई कार्यशाला चलत रहेला। भोर से सूते तक अविरल प्रवाह। उनका के पैमाल कइले रहेला बेसबुरी फुआ के नन्हका जुलुमा। जुलुमा के कारने हायल–कायल रहेली बेचारो। नाट–खुट–बटखरी अस पूरा गाँव में लोकप्रिय बाड़ी अनपुरहो आजी। देसी चिकित्सा के मास्टर।

नया नोहर कनिया उनका के देखते घूघ तनले अँचरा से, सोहर के पाँच बेर गोड़ लगिहे सऽ त अनपुरहो आशिर्वाद दीहें "जीयऽ जागऽ एक से एकइस होखऽ भगवान आंचर खोलस! देबी मइया, बर्हम बाबा अहिवात बनवले राखस।" भर अँचरा आशिर्वाद देते अनपुरहो आजी के आँख से आशिर्वाद के लोर डबडबा जाला। उच्च पीढ़ा मिलो आ आयन–बायन कुछ चीखे के मिलो। आ मजमा भर टोला के लाग जाव आ जुरते कवनो जनमतुआ उनका गोदी में आ जाव। कवनो के छेरिअइनी भइल बा, त कवनो के दँतउठी भइल बा, हरिअर फँटउस अस छेरता, त कवनो के सुखड़ा भइल बा, त कवनो के असमानी बोखार धइले बा, भा कवनो के हब्बा–डब्बा। सब रोग एस्पेस्लीस्ट हई अनपुरहो आजी। छेरिअइनी खातिर मार्गदर्शन दीहें। सांझ खा दिआ बारि के जनमतुआ के मुंह पर देखइहऽ आ बोलिहऽ – 'हँसनी खेलनी आगा आओ रोअनी छेरिअइनी पाछा जाव। जय हो दिआ गोसांई।' लइका ठीक हो जाई। लइका एकटके दिआ के टेम्ह देखे लागी ध्यान से आ चुप हो जाई। अनपुरहो से जब कन्ट्रोल ना होखे त आले मियाँ बीबीगंज वाले किहाँ रेफर कर देली आजी।

दँतउठी में एक चुटकी राख ले के जनमतुआ के एक हाथे चानी आ एक अंगूठा से चोर दाँत जाँत दिहें। लइका फिट। आले मियाँ पूछिहें– 'ऐ रवों लरिकवा फँटउस अस हरिअर छेरबो करेला?' अनपुरहो नाक तक लुगा तोपले कहिहें– 'हँ ए डागदर साहेब बाबू बेतावा हो गइल बाड़न। का जाने कवन मरकिया लगवली नजर लगा देले बाड़ी सऽ।' हब्बा–डब्बा झारे के ट्रेनिंग आजी करिया दादी से पवले रही। फेनू कवनो बामत, भूत–प्रेत के विषय में उनका लगे अनघा ज्ञान रहे। बरहम पिचास, मनुषदेव, बैमत, किचिन, परेत, बैताल ढेर रूप उनका इयाद रहे। जइसे भर गाँव के कुर्सीनामा इयाद राखत रही। अनपुरहो आजी भर गांव के मरल आ जीअत इतिहास रही। ओझा भीरी जाते कहिहें– 'देखीं ए भगत जी! उपरवार हऽ कि हवा में लरिका पर गइल बा। भगत पहिले आँख बंद करके, फेर खोल के नचइहें।' कपार तीन हाली पिटिहें फेर, कहिहें– 'चल–चल माँ, हँ हँ हँ फलाना टैम में/हिरिया जिरिया पहुँचे नदिकिनार डिंग डिंग टिंग टिंग हँ हँ बतावऽ तऽ/दैहिक हऊ कि भौतिक/घर के हऊ की बाहर के/कुलद्रोही कि गृहद्रोही/चंगा होई कि नाऽ..... .....?'

आ फेर, जंतर के बंशी में लटकल बेचारी मरीज अनपुरहोरूपी कन्डा का सँगे उपरे टँगा जइहें। लमहर फेहरिस्त। अनपूरहो भर–गाँव जवान के लाल बुझक्कड़ हई। हमेशा उनका सेवा ला हाजिर। मरनी हरनी, जिअनी कौनो खुशी, कौनों बिपत में बे बोलवले हाजिर। करुणामयी ममतामयी गाँव के देवी माई। साइटिका, शरदबाई के इलाज अनजानू बरहम बाबा के लगे करेली। बाँस के कँमाची कमर में सटा के मरीज खड़ा होई कँमाची बीच में सट जाई गत–गते एक दू महिना में चंगा। ई थेरेपी रहे, अब बुझाता।

अनपुरहो आजी के माटी के घर अब ढहल जात रहे।

अनपुरहो आजी के बिआह गंगा ओह पार भइल रहे। गीत अबो गावेली अनपूरहो–

"सब के बिअहलऽ बाबूजी/देश तिरहुतवा से/हमके बिअहलऽ गंगा पार!

सिंकिया के चीरी–चीरी बेरवा/बनबइ कि कइसे होबई ओह पार!"

बहुत गीत गावत रही अनपूरहो आजी। आजो सिकउती, मउनी बिनेली आ कुछ–न–कुछ गावत रहेली। उनकर पति मलेटरी में रहलन आ रंगून में लापता हो गइल रहन। सुभाष बाबू के लड़ाई में। कवनो खोज खबर ना मिलल। अन्हार रात में ढिबरी जरा के, सुजनी सिअत, कुछ लिखेली आजी। कइएक टोप सुई से लिखेली आपन मनके दरद। जब 'जय हिन्द' लिखेली तकिया पर त उनका आँख से लोर टप–टप चुए लागेला। ऊ तकिया के खोल हाली–हाली टिनहीं बाकस में राख देली। आ कुछ बुदबुदाली, जवन केहू के सुनाए ना। उनकर पोसल सुगवा बूझ जाला आ बोले लगेला– 'आजी... आजी.... आजी.....।'

भक् से सोंचते जाग जाली अनपुरहो आजी। एही से ऊ आजो सिन्होरा रखले बाड़ी। सेनूर लगावेली। मरद के रंगून से लौटे के आजो इंतजार करेली।

गोटी निकसारी में चीन्हे खातिर बोलावल जाली आजी। फुलमती हई कि जलपा माई हई, कि शीतला हई। तब मइया के रंथ निकाले के सलाह देली आ गाँव से बीरत रात में रंथ निकलेला। हमनी उनका अँचरा में लुका जात रहीं डरे। गंवई जिनिगी के कतना रस लेके जीअत रही अनपुरहो आजी। अभाव, गरीबी, लाचारी, उनकर छाया ना छू पइलस। गाँव के माई अवतार रही आजी।

अब त झिरकुट हो गइल बाड़ी। डेगुरी बाकिर नाहिये धइली। कूबर निकल गइल त निहुर के चल जात रही। गाँव–गाँव उनका मन में बइठल गाँव उमड़े लागत रहे। घरे–घरे घूमत प्यार से माड़ भात खाए में उनकर संतुष्टी देख के मेवा मिष्ठान के ओर देखे के मन ना करी।

घर माटी के छपरफोश लिपल पोतल चिक्कन चुलबुल दियरखा पर डीबरी जरत रहे आ अनपुरहो आजी गेंदरा पर सुन्दर दुल्हा–आ दुलहिन के संगे कोहबर के चित्र सूई आ धागा से बनावत रही आ मेंही सुर में कवनो गीत गावत रही।

आज सबेरे घर के सामने हजारों के भीड़ लागल बा। उनका केहू ना रहे आ साँच कहीं त उनकरा भर गाँवें रहे। सबके आँख में लोर रहे आ गाँव के सब औरत साड़ी में सजावत रही सऽ अनपुरहो आजी के। सिन्होरा सिरहाना रखा गइल रहे आ जब गाँव कान्हा पर उठा लेलस अनपुरहो आजी के त उनके गीत उनके स्वर में चारो तरफ डँहके लागल...

'झल–झल झलकेला लाली रे सिन्होरवा/झल–झल झलकेला रूप।

झल–झल झकलेली दुलहिन सोहागिन/रुपवा सुरुजवे के जोत!

तनी एक घुँघुटा हटावऽ साँवर गोरिया/देखबि नयन भर रूप।।' ••

मुजफ्फरपुर (बिहार), मो. 09386906189

ऑक्सीजन से भरपूर 'पीपर के पतई'

केशव मोहन पाण्डेय

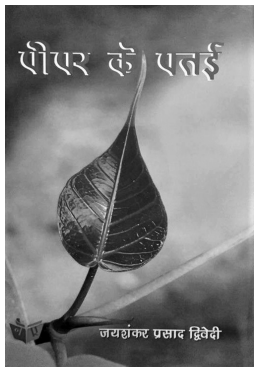

'पीपर के पतई,' कवि – जयशंकर प्रसाद द्विवेदी,
प्रकाशन – नवजागरण प्रकाशन, नई दिल्ली, मूल्य – 200

कहल जाला कि प्रकृति सबके कुछ–ना–कुछ गुण देले आ जब ऊहे गुण धरम बन जाला, त लोग खातिर आदर्श गढ़े लागेला। बात साहित्य के कइल जाव त लेखन के साथे ओह धरम के बात अउरी साफ हो जाला। 'स्वांतः सुखाय' के अंतर में जबले साहित्यकार के साहित्य में लोक–कल्याण के भाव ना भरल रही, तबले ऊ साहित्य खाली कागज के गँठरी होला। अबहिने भोजपुरी कवि जयशंकर प्रसाद द्विवेदी जी के पहिलकी कविता के किताब 'पीपर के पतई' आइल हऽ। ई किताब कवि के पहिलकी प्रकाशित कृति बा बाकिर ऊहाँ के कवनो परिचय के मोहताज नइखीं। ना कवि अपरिचित बानी, ना कवि के कविताई।

कवि जयशंकर प्रसाद द्विवेदी जी के 'पीपर के पतई' हमके पढ़े के मिलल ह। पढ़ला पर लागल ह कि कवि के अनुभवी नजर जिनगी के हर पन्ना के पढ़ले बिआ। जिनगी उनसे सवाल पुछले बिआ आ ऊ समय के साथे ताल ठोंकत अपना कूबत भर जवाब देहले बाड़ें। जवाबो अइसन कि समय भकुआ गइल होखे। संग्रह के शुरूआते में हमरा जवन लउकल ऊ मन मोह लेहलस। कवि आपन किताब अपना स्वर्गवासिनी ईया, स्वर्गवासिनी भतीजी के साथे आपन पहिलका श्रोता अपनी मलिकाइन के समर्पित कइले बाड़े। ई एगो साधारण बाति हो सकेला मगर पुरुष–प्रधान लोक–जीवन में असामान्य तौर पर नारी के आदर दिहल कवि–धरम के सकारात्मक पक्ष उजागर करत बा।

पेशा से इंजीनियर आ मिजाज से कवि द्विवेदी जी अपना असीम कल्पना–जीवन के डगर पर चलत गाँव–देहात के शब्द–गाँठ लेके बाहर निकलल लागत बानी। द्विवेदी जी के कवितन के देख के हमरा त लागल कि ऊँहा के गंभीर से गंभीर बात के कवनो ना कवनो लोकोक्ति–मुहावरा के ऊपर चढ़ि के बड़ा आसानी से कहि देहले बानी। एगो इहे देखीं, –

तुनक के बबुआ मत बतियावा/सभकर अइठन छूटल।/ अइसने घरवा फूटल ।।

द्विवेदी जी के कवितन में पाठक के ढेर अइसन शब्दन से भेंट होई, जवन या त भोजपुरी व्यवहार से बाहर बा या उनकर गढ़ल बा आ चाहें उनका क्षेत्रीयता के प्रभाव में बा। कई बेर हमरो माथा चकरा गइल कि एह शब्दन के माने का हऽ, बाकिर भाव से भरल कविताई में शब्दन के बान्हन टूटत लउकल बा। 'अकड़न' के एगो उदाहरण देखीं –

जे भी सहकल सहकन छूटी
बेसी अकड़न, ओरचन टूटी
पेड़ से झरल पतई मातिन
भद्दई पर , त भुभुन फूटी।।

उघरल देह सोहाले नाही, एहनियों के बुझवले जा।

अगर कहल जाव कि ई 'पीपर के पतई' भोजपुरी शब्द–संपदा के समृद्ध करे वाला आ ओहके पुनर्जीवन देबे वाला ऑक्सीजन के काम करत बा त कवनों बेजाँय ना होई। हँ, कुछ शब्दवन के प्रयोग कहीं–कहीं कुठहरा लागत बा, बाकिर कुछ जगह सरस बा। हई देखीं ना, कनई, बीगत आदि शब्दन के सुन्नर प्रयोग –

आँखिन से झरत लोर/बोझ नीयन जिनगी /बेखबर बइठल/एक दूसरा पर कनई बीगत /अघा गइल।

समय के टोअत आ समय के साथे चलल कवि के धरम ह। कवि जयशंकर प्रसाद द्विवेदी जी सामाजिक संरचना के एगो हिस्सा हवें। ओह सामाजिक संरचना पर राजनैतिक प्रभाव त पड़हीं के बा। राजनीति से दूरो रहल जाव त राष्ट्रीयता खून में त हमेशा उबाल रखबे करी। 'सर्जिकल स्ट्राइक' के बाद के एगो कविता देखीं –

टभकेले रोज रोज मन के दरदिया
बाबा के नावें से लागे सरदिया
सपनों में मोदिए के नउवाँ बरइहें ।
अब कइसे बबुआ नमाज पढ़े जइहें।

कई बेर लागत बा कि कवि के कुछ शब्दन के अर्थ देबे के चाहीं। कई बेर ईहो लागत बा कि कवि शब्दन के चयन के चक्कर में ना पड़ि के भाव के व्यक्त करे में रमल बाड़े। हम ई मान के रहि जात बानी कि कोस–कोस पर पानी बदले, चार कोस पर बानी। कवि चंदौली जिला से हवें, आ ओहीजा भोजपुरी के शब्दन के कुछ अउरी ढंग से बोलल जाला। कई बेर लागत बा कि भोजपुरी शब्दन के मानकीकरण केतना जरूरी बा आ कई बेर ईहो लागत बा कि हम अपना भोजपुरिए में केतना कमजोर बानी। 'चूरी चाउर, आछत, मदत, खोरिन, देखय आदि।

अब्बो ले सुपवा बोलेला' में कवि सामाजिक ताना–बाना में छद्म, द्वेष आ अमरख के सुन्नर चित्रण कइले बाड़े। देखीं –

दिन में खैनी साँझ क हुक्का /भोरे आइल साह क रुक्का
खेती में जब भयल ना कुछहु
अन्नदाता फुक्के का फुक्का /बिगरल माथा डोलेला।
अब्बो ले सुपवा बोलेला।

एगो अउरी उदाहरण देखीं –

मिलत जुलत सभही गरियावत
पगुरी करत सभे भरमावत

पुतरी नचावत मुँह बिरावत
एहनिन के मुँह अब के रोके ?
आन्हर कुकुर बतासे भोंके।

द्विवेदी जी कई गो कविता व्यक्तिगत रूप से लिखले बाड़े। ऊ कविता व्यक्तिगत का, नितान्त व्यक्तिगत भइला के बादो सामाजिक बान्हा से अलगे नइखे। 'इमेज के चक्कर' में जहवाँ दूमुँहा व्यवहार के पीड़ा बा ओही जा 'उबटल पीर' में साथी–सँघाती के बातन के चोट बाऽ आ 'कइसन बहल बेयार' के अलगे बेयार बा। 'खग बूझै खगहीं के भाषा' में किसानिए के पीड़ा नइखे, खराब व्यवस्था से चिढ़ो बा आ 'खीझल बिलिया खम्हा नोचे' में रार–तकरार के साथे ओहसे कुछऊ ना मिले वाला सीख बा। 'गइल भँइसया पानी में' कवि के एगो नव–चेतना के कविता बनि गइल बा। देखीं ना, –

मचल करी ई हाहाकार /करिहें कुल उलटा ब्योपार
मरन अपहरन रहजनी पे/एहनिन के संउसे अधिकार।

जनता तभियो जै जै बोली /छवनी छइहें रजधानी मे।

ओही तरे के एगो इहो कविता देखीं –

कब्बों जे कुछ भयल खेत में
कहाँ मयस्सर उहो पेट में
सहुआ ले भागल उठवा के
घर में बाँचल धान के पइया।
छुँछा के बा के पुछवइया।।

'हे नाग देवता! पालागी' में कवि के पीड़ा के चित्रण देखीं। कवि पीड़ा के पी के एगो नया परिभाषा गढ़त लागत बाड़न, –

आस्तीन में पलिहें बढ़िहें
मनही मन परिभाषा गढ़िहें
कुछो जमइहें कबों उखरिहें
गारी सीकम भर उचरिहें
हे नाग देवता! पालागी।

कुछ रचनन में उलटबाँसी के झलक लउकत बा। 'बहल गाँव बिलाइल खेती' ओसनके रचना बा। एतने ना, एह रचना में गाँव–समाज के रीति–नीति आ नेह–छोह के सथवे सहयोग के भावना के वर्णन बा। समय के साथे अब सबकुछ बदल गइल बा। ना पहिले के नेह बा आ ना पहिले के सहयोग। एगो बानगी देखीं –

गँवईं थाती छोह हेराइल /जाने कहवाँ जा अझुराइल/टूटल गाँछ छुटले बइठकी /नाता रिश्ता सभे भुलाइल/काकी अब ना जोरन देती। बहल गाँव बिलाइल खेती।।

'हमरा के विस्तार में बतवनी हँ' एगो बाप द्वारा बेटा के सामाजिकता के शिक्षा पर रचना बाऽ त 'बिटिया' में बेटी के घर के हँसी–खुशी आ खजाना के सुन्नर चित्रण बा। 'बुढ़ऊ बाबा' ग्रामीण पारिवारिक विद्रूपता के चित्रण बाऽ त 'बेपरवाह' के उठल सुन्नर विषय पर लागत बा कि बहुत कुछ अउरी कहा सकेला। 'बेसरम' के माध्यम से कवि सामाजिक चिंतक के रूप में सजग होत बाड़ें त 'बेतात के बात' तनी माथा चकरावत बा। 'भकुआइल बबुआ' माटी के छोड़ला के पीड़ा के उकेरत एगो सुन्नर रचना बनल बा। देखीं सभे –

माटी के थाती छोड़ी जब से पराइल बा ।
नीमन बबुआ तभिए से भकुयाआइल बा।।

कवि जयशंकर प्रसाद द्विवेदी जी के कविता में सगरो रस के पान हो सकेला। ईहाँ 'सरस्वती वंदना' में शारदा माई से दसोनोह जोड़त भक्ति गीत बा त 'बिटिया' के ईयाद में वियोग वात्सल्य रस बा। 'अब कइसे बबुआ नमाज पढेऽ जइहें' में देशभक्ति के भाव भरल बा त 'अब्बो ले सुपवा बोलेला', 'इमेज क चक्कर', 'मौसियाउर भाई' आदि में व्यंग्य के बाण बा। 'महतारी' कविता में वात्सल्य के रूप देखीं –

आजु निकहे /बिखियाइल बानी माई
बचवन पर /नरियात–नरियात
लयिकवो मुरझा गइलें
आँखिन के लोर थम्हात नइखे
फेरु अझुराइल /नोचब–बकोटब
खिलखिलात, हँसत, मुस्कियात
केतना रंग, केतना रूप।

साँच त ई बा कि आज के मनई आपन मानवता कहीं हेरवा दिहले बा। कवि के अंतिम कविता अइसने मनई के चित्र उकेरत बिआ।

इंटरनेट के बजार में, बेजार भइल मनई
हर बेरा गूगल के शिकार भइल मनई।
घरी–घरी टुकुर–टुकुर वेभ के निहारत रहे
छितिराइल वेभ क, औंजार भइल मनई।।

साहित्य खातिर ई एकदम साँच बात हऽ कि सजग आ सफल कवि ओही के मनल जाला जे अपना वातावरण के अनुसार आपन शब्द चयन, भाषा शिल्प आ संप्रेषण–शक्ति के अपने जइसन प्रयोग करेला। सोना त एक्के होला, ई त सोनार के कला हऽ कि ओह सोना से कवन–कवन गहना गढ़ि देता। कवि जयशंकर प्रसाद द्विवेदी जी अपना पहिलकी कृति 'पीपर के पतई' के कम शब्दन से बड़का–बड़का बात बड़ी सहजता से कहि देहले बानी। कविता में ऊँहा के मुहावरा–लोकोक्तियन के प्रयोग एगो नया रास्ता बनावत बा आ नव–ऊर्जा देबे वाला ऑक्सीजन के काम करत बा। ई ऑक्सीजन त निश्चित रूप से कम–से–कम ना कबो मानवता के मरे दी, ना कबो भाषा के आ ना अपना सभ्यता संस्कृति के। 'पीपर के पतई' निश्चित रूप से भोजपुरी साहित्य के फाँड़ में एगो सुन्नर खोंइछा आइल बा। एहके एक बेर पढ़ला के बाद मन अघात नइखे, बार–बार पढ़े के बेचैन होत बा। ••

रचनाकर्म के साधक
चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह के रचनावली

''आरोही रचनावली'' (भाग – 1) संपादक – जितेन्द्र कुमार । प्रकाशक – चौ0 कन्हैया प्रसाद सिंह 'आरोही' स्मृति संस्थान, पकड़ी, आरा –802301, मूल्य –320/–

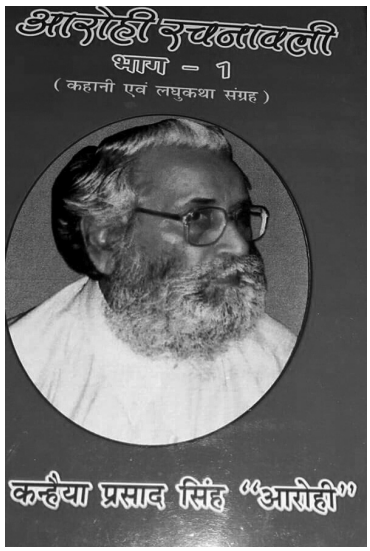

जितेन्द्र कुमार का संपादन में छपल ''रचनावली –भाग– 1'' में चौधरी कन्हैया प्रसाद जी के कथा – संसार के एक जगह समेटल गइल बा। भूमिका विषय वस्तु का अनुरूप आ सार्थक बा। ओम्मे चौधरी जी के कथा –समग्र के बढ़िया विवेचना बा। एकरा साथही किताब में ,चौधरी जी का कहानी सिरजन पर ,कुछ लेखन क लोग के मत –सम्मत दिहल गइल बा ,जवन किताब के उपयोगी बनावत बा।

सुभाव आ बात– ब्यौहार से ठेठ भोजपुरिया आ अक्खड़ मिजाज, चौधरी कन्हैया प्रसाद जी अपना अटूट भोजपुरी प्रेम आ प्रतिबद्ध रचनाधर्मिता खातिर जानल जात रहलन ।आज समझ में सहजे आवत बा कि उहाँ का अपना रचनात्मक भोजपुरी सेवा भाव का दिसाईं कतना समर्पित रहलीं ।चौधरी जी के रचनात्मक – समय लगभग पाँच दशक के बा ,जवना में उहाँ के छोट बड़ पचीसन गो किताब छपली सन।

चौधरी जी ''आरोही'' उपनाम से कबिताई करत रहनी। दोहा, सोरठा, बरवै आदि छान्दसिक विधा में जम के लिखनी। गजल आ हाइकू पर उहाँ के कलम चलल। प्रबन्ध काव्य, खण्ड काव्य क सिरजन कइलीं। याने कि शिखर पर चढ़े आ आरोहण के कोसिस अन्त ले जारी रहल । खाली कविते ना, कहानी, लघुकथा, एकांकी आदि साहित्यिक विधा में उनका अप्रतिम जोगदान के भुलाइल कठिन बा।

वाराणसी से निकले वाली लोकप्रिय कथा पत्रिका ''भोजपुरी कहानियाँ'' में छपल उनकर कहानी ''बड़प्पन'' से, उनका भीतर के कथाकार अपना के दिनों दिन निखारत सँवारत गइल। एह पत्रिका ''पाती'' में उहाँ के कई कहानी प्रकाशित भइली सऽ ! कहानी आ लघुकथा के तीन चार गो संग्रह आइल । ''अपराजित'', ''अनुमन्ता'', 'आ धर्मी' नाँव से तीन गो एकांकी संग्रहो छपल। कहे क मतलब ई कि उहाँ का रचनाकर्म आ भोजपुरी के रचनात्मक आन्दोलन का प्रति बेहद सजग, आशावान आ सेवा भाव से लागल रहनी। भोजपुरी के छोट –बड़ रचनाकारन के परिचय जुटावत आ व्यग्र भइल हम खुद देखले – अनुभव कइले रहनी । तीन भाग में छपल ''साहित्यकार दर्पण'' आ भोजपुरी इनसाइक्लोपीडिया' एह दिसाईं, उनका परिश्रम के प्रमाण बा ।

चौधरी जी का निधन का बाद, उनका सुयोग्य पुत्र कनक किशोर आ परिवार के समर्पण भाव आ परिश्रम के साधुवाद कि चौधरी जी का साहित्यिक अवदान के रचनावली रूप में प्रकाशित करावल ।रचनावली के भाग – 1 के देखल अपना आप में एगो सुखद अनुभव बा । आशा बा ई उपहार, भोजपुरी साहित्य प्रेमियन के बहुत पसन्द आई। ••

''बाइस्कोप'' से उभरत नारी मन के गँवई जथारथ

विजय शंकर पाण्डेय

बाइस्कोप (भोजपुरी कहानी संग्रह), प्रकाशक – अतुल्य प्रकाशन, 7/25ए, महावीर गली, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली 110002 य मूल्य ––175/–

बाइस्कोप, सुप्रसिद्ध लेखिका आशारानी लाल के कहानियन के ताजा संकलन हौ । गँवई परिवेश, सोच बिचार आ नारी विमर्श के संस्मरण क चित्रात्मक रंग तरंग अउर अनुभवन से सजल कहानियन क संकलन। एम्मे हृदयस्पर्शी प्रसंग आ सन्दर्भ त जगहे– जगह बुनल मिली ।

लेखिका आशारानी लाल क सहजता अउर विनम्रता संकलित कहानियन में साफ साफ झलकत मिली ।अभिमान से दूर, सादगी जहाँ होय, उहाँ संवेदना काहें ना होई ? कहानियन के पढ़ले के बाद लगत हौ कि एह में जमीनी जथारथ अपना सन्दर्भ सहित संवेदन का धरातल पर उतरत हौ । पहिलिये कहानी ''बाइस्कोप'' अपने मार्मिकता से .भीतर तक छूवत, चरित्रन के जवन रूप चित्र उभरत हौ अउर जवन संवाद आवत हौ, ऊ अपना व्यंजक प्रभाव से पढ़े वाला के बान्ह लेत हौ ।..''जाने तारू दुलहिन, हम चवन्नी कहाँ पइतीं कि बाइस्कोप देखितीं ।'' तत्कालीन अभाव आ सन्तोष के अजब चित्र सामने रख देत बाय कि मन भीग जाता ।

कहानी लेखिका अपना पुराना समय के रेखांकित करत सुख दुख, बेबसी, पीड़ा कूल्हि उजागर कर देत हईं। कहीं कहीं त संकेतिक रूप में नोकीला टूसा अस बात गड़े लागत हौ । साफगोई से कहल सामान्य लगत बातो क, मार दूर तक जात लगत हौ ..,''हँ रे! बड़ घर उपरे ऊपर होला, भितरे भीतर खउलत रहेला ।'' गाँव जवारे से दूर रहले के बावजूद गाँव के अइसन मार्मिक आ ह्रदयस्पर्शी वर्णन, ऊहो गाँवे का ठेठ अन्दाज में उहे कर सकेला, जेकरे भितरी गाँव जीयत होखे ।

मुहावरा आ कहावतन क सुघर प्रयोग से भाषा में जीवंतता आइल हौ । तेतर बेटी ,राज रजावे ।तेतर बेटा भीखि मँगावे ! 'बिलारे भागे, सिकहर टूटल', 'सब बेटी आपन भाग लेके जनमेली', 'बरसाती ओरियानी नियर बे गवले बजवले बहल करे ता !' 'जइसे महाबीर जी आ माता माई क पताका लहराता' जइसन कतनै प्रयोग भाषा के चटक रंग देत बा । नारी स्थिति, वृद्ध अवस्था क हाल, समाजिक नेह छोह क टूटत ताना बाना का प्रसंगन से उनकर रचल कहानी अपना सहज मार्मिकता से बरबस दिल छू लेत बाड़िन। जरूरत का मोताबिक समाजिक बुराइयन आ कुरीतियन पर व्यंगो लउक जात हौ । कहानियन मे जगह जगह एगो आदर्शवादी रूपो प्रगट होत लउकत बाय।

कुल मिलाय के एह संग्रह के कहानी परिवारिक परिवेश खास कर ,ओकरे अन्तरंग क सहज चित्रण करत हइन, जवने वजह से एके साधारनो पढ़वइया, खास कर नारी वर्ग रुचि लेके पढ़त बा।

किताब, उहो आशारानी लाल क, अपने खास भाषा शैली अउर प्रस्तुति का कारन सबके अपने तरफ खींच ले आई ! हमके लगत बाय कि भोजपुरी साहित्य में रुचि राखे वाला लोगन के ई कहानी संग्रह जरूर पढ़ै के चाहीं। ••

■ नारायणी विहार, चितईपुर, वाराणसी

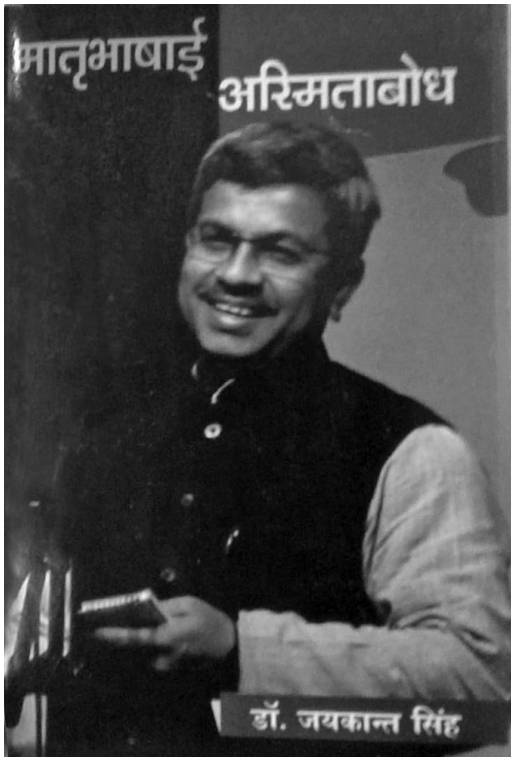

भोजपुरी का रचनात्मक आन्दोलन से जुड़ल, डा0 जयकान्त सिंह के ''मातृभाषाई अस्मिताबोध'' पर नया पुस्तिका

भोजपुरी का रचनात्मक आन्दोलन से जुड़ल, डा0 जयकान्त सिंह के ''मातृभाषाई अस्मिताबोध'' पर नया पुस्तिका आइल बा। 48 पृष्ठ का एह पुस्तिका में मातृभाषा के महत्व त बतावले गइल बा, विस्तार से ईहो विवेचन कइल गइल बा कि मातृभाषा शिक्षा के औचित्य का बा ?

डा० जयकान्त सिंह लंगट सिंह महाविद्यालय में एसोसियेट प्रोफेसर सह अध्यक्ष (भोजपुरी विभाग) बानी। उहाँ का भोजपुरी भाषा के स्वरूप आ ओकरा संवैधानिक मान्यता पर किताब लिखला का साथे, हिन्दी भोजपुरी का व्याकरणिक कोटियन के तुलनात्मक अध्ययन कइले बानी आ भोजपुरी गद्य साहित्य पर पुस्तक लिखले बानी। जयकान्त जी के ई नया पुस्तिका, भोजपुरी का रचनात्मक आन्दोलन में एह माने में महत्व के बिया कि आज एक बेर फेरु, भोजपुरी का संवैधानिक मान्यता का राह में कुछ कथित तर्कवादी लोग रोड़ा अटकावे के हर संभव उतजोग में लागल बा। जवन भोजपुरी, हिन्दी का निर्माण आ विकास में हर संभव सहायक रहल बिया ऊ, आज ओह लोग का दोषपूर्ण पूर्वग्रही नजर में, हिन्दी का अस्तित्व खातिर खतरनाक लागे लागल बिया।

ऊ लोग हिन्दी का नाँव पर, लोकभाषा सब पर वर्चस्व बनावे का चक्कर में आ वर्चस्व गइल का दुखे अन्धविरोध कर रहल बा एसे कि ओह लोगन क भाषाई ठीकेदारी आ दादागिरी बरकरार रहो। भोजपुरी क्षेत्र के भोजपुरी भाषी लोग, जेतना हिन्दी के प्रेम आ आदर करेला,ओकर पसँगो ऊ लोग ना करत होई काहे कि ऊ लोग हिन्दी के व्यवसाय करेला आ ओकरा नाँव पर कमइला खइला का अलावे, सम्मान, पुरस्कार आ ठीकेदारी पावेला।

भोजपुरी भाषी अपना निजता, अस्मिता, आ भाषाई पहिचान खातिर संघर्ष कर रहल बाड़न हिन्दी के विरोध खातिर ना ।कवनो क्षेत्रीय भाषा ,बोली के मान्यता मिलला से दुसरा भाषा के कवन नुकसान बा भला ऊहो राजभाषा हिन्दी के।

उमेद बा डा० जयकान्त जी के ई पुस्तिका भोजपुरी भाषियन का भाषाई अस्मिता के मान सम्मान बढ़ाई। ••

गाजियाबाद में 'भोजपुरी के रचनात्मक आन्दोलन' विषय पर संगोष्ठी

विश्व भोजपुरी सम्मेलन के राष्ट्रीय सचिव डा0 अशोक द्विवेदी का प्रस्ताव पर ,'पूर्वांचल भोजपुरी महासभा' के आयोजन में भोजपुरी रचनात्मक आन्दोलन के वर्तमान स्थिति पर बतकही संगोष्ठी में भोजपुरी के रचनात्मक मूक आन्दोलन पर चर्चा आ भाषन भइल ।एह कार्यक्रम में अजीत दुबे जी आ सन्तोष पटेल, भोजपुरी भाषा –मान्यता का पक्ष पर आपन विचार राखत ,एह दिसाईं भइल आन्दोलन आ प्रयास के विवरन दिहल लोग। रचनात्मक आन्दोलन पछिला पाँच दशकन से ,कई भोजपुरी संस्था आ पत्रिकन का जरिये चलल आ रहल बा ,जवना में भोजपुरी साहित्य ,कला आ संस्कृति का उन्नयन खातिर निरन्तर सघन प्रयास भइल बा ।

गोष्ठी में विश्व भोजपुरी सम्मेलन के दिल्ली प्रान्त के उपाध्यक्ष आ वरिष्ठ भोजपुरी साहित्यकार डा0 रमाशंकर श्रीवास्तव भोजपुरी साहित्य का संवर्द्धित होत विकास पर विचार राखत कहले कि ई आन्दोलन महत्वपूर्ण उपलब्धि वाला रहल ।इग्नू के डा0 सुशील कुमार तिवारी व्यापक भोजपुरिहा भाषा–समाज के ,अपना भाषाई–, साहित्य संपदा से जुड़े के अपील करत बतवले कि भोजपुरी में हरेक विधा में सिरजनशील काम भइल बा ,बस ओकर मूल्यांकन नइखे भइल ।मूल्यांकन खातिर प्रकाशित साहित्य के खोजि उपराइ के पढ़े समझे के पड़ी ।अपना अध्यक्षीय भाषन में हिन्दी के सुप्रसिद्ध विद्वान आलोचक प्रोफेसर मैनेजर पाण्डेय जी भोजपुरी गद्य के अउर समृद्ध करे पर जोर दिहनी ।

एह संगोष्ठी में जयशंकर प्रसाद द्विवेदी के पहिल भोजपुरी कविता संकलन ''पीपर के पतई'' के विमोचन उपस्थित विद्वान आ साहित्यकारन द्वारा कइल गइल । ••

प्रोफेसर मैनेजर पाण्डेय, रमाशंकर श्रीवास्तव आदि द्वारा
'पीपर के पतई' काव्य-संग्रह के विमाचन

विश्व भोजपुरी सम्मेलन, बलिया के नौवाँ अधिवेशन आ ''पाती'' 'अक्षर- सम्मान' समारोह के तीन सत्री

हीरालाल 'हीरा'

हरेक साल नियर, एहू साल 14 मई के टाउनहाल, बलिया (उ०प्र०) में भोजपुरी साहित्यकारन आ कवियन के सम्मिलन यादगार बनल।

राष्ट्रीय/अन्तराष्ट्रीय महासचिव डा0 अरूणेश नीरन एकर अध्यक्षता कइले आ राष्ट्रीय सचिव श्री जगदीश उपाध्याय पर्यवेक्षक रूप में मौजूद रहले ।विशिष्ट आमंत्रित अतिथियन में डा०नीरज सिंह(विभागाध्यक्ष ,भोजपुरी,कुँवर सिंह वि०वि०), डा०जयकान्त सिंह (विभागाध्यक्ष,भोजपुरी,लंगट सिंह कालेज ,मुजफ्फरपुर वि०वि०),डा० प्रकाश उदय (हिन्दीविभाग, बड़ागाँव, पी०जी०कालेज, वाराणसी), डा० ब्रजभूषण मिश्र (मुजफ्फरपुर), डा० रघुवंशमणि पाठक (पूर्व विभागाध्यक्ष, हिन्दी वि०, सतीशचंद्र पोस्टग्रेजुएट कालेज) आ अनिल ओझा 'नीरद'(पूर्व संपादक, 'भोजपुरी माटी', कोलकाता) आदि लोग से सजल मंच भोजपुरी का गरिमामय विचार –दर्शन क गवाह बनल ।

एह साल भोजपुरी दिशाबोध के वैचारिक पत्रिका ''पाती'' का तरफ से दिहल जाये वाला 'अक्षर सम्मान' सम्पादक डा० अशोक द्विवेदी द्वारा भोजपुरी के यशस्वी कथाकार श्री बरमेश्वर सिंह आ कथाकार श्री कृष्ण कुमार (आरा) के साथ बलिया के वरिष्ठ कवि श्री विजय मिश्र के दिहल गइल। बरमेश्वर सिंह का अस्वस्थता का कारन, उनका ओर से ई सम्मान हीरा लाल 'हीरा' ग्रहण कइले।

दीप जरवला आ सरस्वती प्रतिमा पर माल्यार्पन का बाद ,विश्व भोजपुरी सम्मेलन बलिया इकाई का ओर से सब अतिथियन के अंगवस्त्र आ माला पहिरवला का बाद बलिया इकाई के वार्षिक प्रतिवेदन ,कोषाध्यक्ष हीरा लाल जी प्रस्तुत कइले। एकरा बाद दुसरका सत्र 'भोजपुरी के रचनात्मक आन्दोलन क वर्तमान' विषय पर गंभीर बिचार–बतकही के रहे। विषय स्वरूप आ सीमा क निर्धारन करत डा० अशोक द्विवेदी कहले 'भोजपुरी क रचनात्मक आन्दोलन' पछिला पाँच दशकन से गतिमान रहल बा। एम्मे भोजपुरी के कई प्रादेशिक, जनपदीय आ राष्ट्रीय संस्था सभन का अलावा कुछ प्रतिनिधि पत्रिकन के महत्वपूर्ण आ सक्रिय जोगदान रहल बा। डा० प्रकाश उदय, भाषा का रूप में हिन्दी के, कई बोलियन आ भाषा सब के योगदान आ भूमिका क चर्चा करत कहले कि स्वतंत्रता आन्दोलन के गति देबे खातिर ,हर प्रदेश के भाषा भाषी मिल के हिन्दी के राष्ट्रीय रूप प्रदान कइले ।हिन्दी कवनो प्रदेश के भाषा ना रहे ।हिन्दी पट्टी के आपन भाषा बोली रहे। अवधी, मैथिली, भोजपुरी ,ब्रजी,बुन्देलखंडी,राजस्थानी आदि रहली स ,आ सभे मिल के राष्ट्रीय भाषा का रूप में एके सँवारल ।हिन्दी सब भाषा का योगदान से बनल ।एहसे हिन्दी के ,भोजपुरी भा अउर कवनो भाषा से खतरा के बात कइल बेमाने बा। सिरजन में मौलिकता अपना मातृभाषा का जरिये आवेला ।एही विचार के विस्तार देत डा० जयकान्त सिंह कहले कि कुछ हिन्दी विद्वान लोग कहेला कि भोजपुरी में गद्य के कमी बा ! ई बात ,बिना भोजपुरी साहित्य के पढ़ले जनले तीसन बरिस से कहल जात बा, जबकि हर विधा में भोजपुरी साहित्य दिन पर दिन समृद्ध भइल बा । भोजपुरी अपना भाषा क्षेत्र में संबाद आ लेन देन क भाषा त बटले बिया, दोसरो प्रदेशन में एकर बोले वालन क विशाल संख्या बा । डा० ब्रजभूषण मिश्र भोजपुरी पत्रिकन के एतिहासिक जोगदान क चर्चा करत कहले कि भाषाई क्षेत्र में, प्राइमरी शिक्षा मातृभाषा के साथ होखे के चाही । बिहार से ज्यादा यू० पी० में भोजपुरी भाषाई क्षेत्र बा ,बाकिर ई बिडम्बना बा इहाँ आज ले भोजपुरी भाषा खातिर एकेडमी ले ना बनल ।

डा0 नीरज सिंह ,भोजपुरी का रचनात्मक आन्दोलन के गति देबे वाल आरा के ,सम्मानित साहित्यकारन के चर्चा करत, ''पाती'' पत्रिका के जोगदान के सरहले। ऊ भोजपुरी भाषा साहित्य के पढ़ाई का सन्दर्भ में ,कुँवर सिंह विश्वविद्यालय के ताजा स्थिति पर प्रकाश डलले आ कहले कि प्रशासन के रवैया एह दिसाईं बहुत अच्छा नइखे ।आज स्थिति चिन्ताजनक बा आ भोजपुरिया हितचिन्तक लोगन के आगा बढ़ के कुछ करे के पड़ी । पत्रकार अशोक जी प्रोफेसर केदारनाथ सिंह के पुरान उक्ति के दोहरवले कि ''पाती'' भोजपुरी का मूक रचनात्मक आन्दोलन के पताका हवे।'' भोजपुरी में रचल जा रहल स्तरीय आ उत्कृष्ट साहित्य के प्रशंसा करत कहले कि कई मामिला में ई मौलिक आ श्रेष्ठ बा ।बलुक कुछ अइसनो बा, जवन अगर हिन्दी में लिखाइल रहित त ,ओकर बहुत ज्यादा चर्चा होइत । ''बनचरी'' उपन्यास एकर उदाहरन बा ।

डा० रघुवंश मणि जी के विचार रहे कि रचनात्मक आन्दोलन हर भाषा के रचनात्मक सुभाव हऽ । ई अनवरत चलत रहेला ।भोजपुरी का सँगे इहे स्थिति बा ।डा० अरुणेश नीरन जी अपना अध्यक्षी भाषन में कहले कि कवनो जनभाषा, राज के भाषा के मुँहताज ना होले। जनभाषा , जनशक्ति का भरोसा आगा बढ़त रहेले। भोजपुरी त कबीर आ गुरु गोरखनाथ क काव्य भाषा रहल बिया ,बाकि ऊ लोग एह भाषा के, दोसरा जनभाषा का सँगे बढ़ावल लोग। तब के भोजपुरी क रूप दोसर रहे, आज बहुत बदलाव आइल बा। भाषा रचनात्मक रूप में परिष्कृत आ समृद्ध तबे होले जब ऊ व्यापक जन– व्यवहार में रहेले। आज भोजपुरी का रचनात्मक साहित्य में ,व्यापकता आइल बा। ओकर साहित्य समृद्ध भइल बा । साहित्य अकादमी, भोजपुरी के प्रसिद्ध कवि– रचनाकारन पर किताब छापत बा। भिखारी ठाकुर, धरीछन मिश्र, मोती बी०ए० आ महेन्दर मिसिर पर मोनोग्राफ आइल ,भोजपुरी का रचनात्मकता के प्रमान बा।

तिसरका सत्र में भोजपुरी गायक ओम प्रकाश , अरविन्द उपाध्याय आ विजय शंकर उर्फ विक्की पाण्डेय केगीत सुने के मिलल ,जवना पर उपस्थित जन समुदाय विभोर भइल ।तीन सत्र के सफल आ गंभीर संचालन ,श्री कौशलेन्द्र कुमार सिन्हा कइलन ।

फेर शुरू भइल अन्तर्जनपदीय कविगोष्ठी। काव्य समागम के शुरूआत शिवजी पाण्डेय रसराज का सरस्वती वंदना आ गीत से भइल । कन्हैया पाण्डेय, हीरालाल हीरा, अशोक तिवारी का बाद कलकत्ता से आइल श्री अनिल ओझा नीरद के ओजस्वी कविता भइल। डा०प्रकाश उदय अपना चिर परिचित स्वर आ अन्दाज के कविता से भरपूर रसवर्षा कइलन। दिल्ली से आइल जे०पी० द्विवेदी ,गुरुविन्द्र सिंह के कविता अलगे प्रभाव छोड़लस। डा० कमलेश राय के मधुर आ अर्थवान गीतन के पुरान श्रोता उनका तीन गो गीतन के आनन्द उठवलन फेर संचालन करत शशि प्रेमदेव के गजलन का शेरन पर वाहवाही भइल। गाजीपुर के मिथिलेश गहमरी त खैर एगो नये समाँ बान्हि दिहलन । बी० एन०शर्मा मृदुल ,डा० शत्रुघ्न पाण्डेय ,ब्रजभूषण मिश्र ,विजय शंकर पाण्डेय(वाराणसी),डा० अशोक द्विवेदी ,श्री विजय मिश्र ,फतेहचन्द 'बेचैन', त्रिभुवन प्रसाद सिंह प्रीतम आदि कवियन के आपन मौलिक प्रस्तुतिकरन से हाल में बटुराइल श्रोत लोग बेर बेर भाव विभोर आ रस सिक्त भइल । कविगोष्ठी के अध्यक्षता वरिष्ठ जनपदीय कवि द्वय श्री त्रिभुवन सिंह 'प्रीतम' आ श्री विजय मिश्र कइल लोग। अन्त में बलिया इकाई के अध्यक्ष श्री विजय मिश्र धन्यवाद से सभा समापन कइले। ••

बरखा – राग

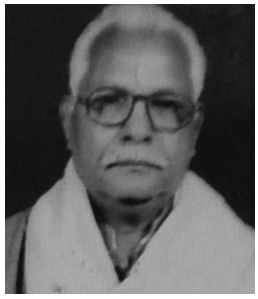

त्रिभुवन प्रसाद प्रीतम

रिमझिम बरसे श्याम बदरिया मोर नगरिया भीजे ना !

भीजे खेत, खरिहान, बाग-बन, भींजे सब सीवान
गली कूच सब रस में डूबल,डूबल सकल जहान
अरे रामा, उमड़ल ताल पोखरिया, महल अटरिया भींजे ना !

आँगन भीजे, छाजन भींजे, भींजे साँझ बिहान
लाल पलँगिया निरमल चादर, भीजे धइल समान
अरे रामा कंचुकि एक कगरिया, सबुज चुनरिया भींजे ना !

बेसर, नथिया, कँगना भीजे, भीजे कान क बाली
कर के मेहदी, पाँव महावर, भीजे ओठ क लाली
अरे रामा, भींजे चटक कजरिया, लोल नजरिया भींजे ना !

तन भीजे मन पँवरन लागे, उभचुभ भइल परान
भीजे नेह क डोर निराली, नयना करे नहान
अरे रामा भीजे माँग क लाली, बारि उमरिया भीजे ना !

पाती के सब भीजे अछरिया, भीजे नवल सनेस
सावन में, मोर सपना भीजे, 'प्रीतम' बसे विदेस
अरे रामा भीजे दिन-दुपहरिया, रात अँजोरिया भींजे ना!!

••

शारदा भवन, कृष्णा नगर, बलिया (उ०प्र०)

भोजपुरी पसरत त बिया...

भोजपुरी साहित्य के सिरजन आ ओकरा प्रचार प्रसार में बरिसन से जीवे–जँगरे लागल लोगन के खुशी होई कि अब लोगन के एकरा से सटे में, 'मान' आ 'जस' लउकत बा। इनवरसिटी से लेके आकाशवाणी, दूरदर्शन आ अकादमी तक भोजपुरी साहित्य के पइसार हो गइल बा। ई बात दीगर बा कि तिकड़मी आ पहुँच वाला लोग एहू जगहा हावी होके आपन 'कृपा' बरिसा रहल बा। भोजपुरी पर 'सरकारी' आ 'दरबारी' लोगन के एह उफनत 'दया' से हम निहाल बानी, भलहीं एह 'कृपा' आ 'दया' में ओ लोगन के कवनो मसरफ पूरा होत होखो– भोजपुरी पसरत त बिया।

भइया जी लोग का 'नट–करतब' आ 'लीला' से मजमा त अच्छा लाग जाता, बाकि ओ लोग का पक्षपाती रवैया से भोजपुरी साहित्य सृजन आ ओकरा बिकास में तन–मन–धन से लागल रहे वाला लोग महानगर आ राजधानियन में शौकिया पैदा भइल 'भोजपुरी प्रेमियन' का सोझा उपेक्षित आ अपमानित महसूस करऽता। भोजपुरी का 'स्कोप' के 'बाइस्कोप' का सोझा खड़ा कराके आपन–आपन फोटो लउकावे का होड़ में लागल, ए लोगन से भोजपुरियो कृतारथ बिया। ए घरी कुछ समरथ आ साधन संपन्न भोजपुरी पत्रिकन में मौलिक भोजपुरी लेखन का बजाय अपना 'खास मंडली' भा दोसरा भाषा के 'अनुवाद' के अतना तरजीह दियाता कि भोजपुरी में बरिसन बरिस से लिखे–पढ़े आ साँस लेबे वाला लोग उजबुजाहट महसूस करे लागल बा। समय आ गइल बा कि भोजपुरी खातिर, भोजपुरी में लिखे–पढ़े वाला लोग अब असल–नकल के पहिचान करो आ भारतीय–साहित्य का संदर्भ में आपन आकलन करो। आठवीं अनुसूची में मान्यता के सवाल पर राजनीति अलगे बा, तबो भोजपुरी रूकत नइखे।

बलिया के भोजपुरी कवि आ ई अंक

बलिया जइसन छोट जिला से, अपना सीमित साधन आ अर्थ–संकट का बावजूद 'पाती' हमेशा से भोजपुरी के 'दिशा' आ 'बोध' के समझे आ ओकरा स्तरीय लेखन के संरक्षण आ प्रोत्साहन देबे के कोशिश, पहुँच आ सामरथ भर करत रहल बिया। लोक–संस्कृति आ साहित्य, 'मीडिया', कविता, कहानी, लघुकथा, निबन्ध, आलोचना आ युवा रचनाकरन पर केन्द्रित पछिला कई गो अंक एकर साखी बाड़न सऽ।

एह अंक में खास तौर से बलिया के ओह कवियन का रचना–संसार के उजागर करे के उतजोग भइल बा, जेवन लोग अपना माटी आ हवा–पानी का पहिचान का साथ, तमाम तरह के 'ग्लैमर' आ 'गोलबंदी' से अलग, चुपचाप रचनारत बा। स्व0 रामविचार पाण्डेय, स्व0 जगदीश ओझा 'सुन्दर' आ प्रभुनाथ मिश्र का एह जनपद में, कवि–कर्म आ रचना–कौशल का प्रति भोजपुरी कवि जागरूक बाड़न। श्री शम्भुनाथ उपाध्याय, श्रीराम सिंह 'उदय', नगेन्द्र भट्ट, भगवती प्रसाद द्विवेदी, शुभचिंतक पाण्डेय कलंकी, तारकेश्वर मिश्र 'राही', हीरालाल 'हीरा', कन्हैया पाण्डेय, जयप्रकाश 'सागर', भोला प्रसाद 'आग्नेय', शिवजी पाण्डेय, अनंत प्रसाद 'रामभरोसे' आ राजेन्द्र भारती जइसन कतने भोजपुरी कवि एह जनपद के काव्य–परंपरा के जियवले–जोगवले बाड़न।

एह अंक में आइल कवियन के रचना अपना अर्थवत्ता सहजता आ गुण–धर्म का साथ रउवा सोझा बा। ई लोग प्रेम आ सौंदर्य के नया रूप–छवियन का अंकन का साथ साथ, आज के समाजिक, राजनीतिक आ आर्थिक माहौल पर आपन निगाह राखे के कोशिश कइले बा आ आम आदमी के उलझन, सोच–सरोकार, नियति, पीड़ा आ क्षोभ के अपना भोजपुरिहा संस्कार का साथ अभिव्यक्त कइले बा। तेजी से गिरत मानव–मूल्यन का दिसाई भोजपुरी कवियन के चिन्ता साफ तौर पर देखल जा सकत बा। सबसे बड़हन बात ई बा कि ई कवि अपना कूल्हि क्षोभ आ अवसाद का बादो आस्था आ विश्वास के डोरी पकड़ले बा। प्रकृति के संग–साथ आ ओकरा रूप–रस–गंध के अनुभूति आ ओकर अभिव्यक्ति करे में ए लोग के विशेष मन लागल बा। बलिया का अधिकांश कवियन में लोकराग भा लोकरागिनी के लय पकड़े आ जोगावे के कोशिश त लउकते बा कविता में वर्तमान के हाल–चाल, सुख–दुख, खुशी आ पीड़ा के समझे आ बखान करे के ललक साफ झलकत बा। अपना सिरजन के विशिष्ट अंदाज देबे में कहीं एकदम सोझ–साफ, कहीं संकेत, चित्र–योजना, आ प्रतीकन का जरिये ई, लोग भोजपुरी–कविता के नया आयाम देबे का प्रक्रिया में सचहूँ बड़ा मन से लागल बा।

कुछ अति प्रयोगवादी, चमत्कार–प्रिय आ आधुनिकता के प्रेमी लोगन के कहनाम बा कि गाँव आ गँवई प्रकृति के मोह आजु ले भोजपुरी कवियन से नइखे छूटत। एकर का मतलब? का ई लोग अपना परिवेश आ हवा–पानी के भुला के अफ्रीका आ लातिन अमरीका का जिनिगी का बारे में लिखो? भोजपुरी के हिन्दी आ अंगरेजी बना लेव? नया आ मौलिक लिखला क मतलब ई ना होला कि लोगन के कुछ बुझइबे ना करो।

भोजपुरी भाषा खुदे अतना पनिगर आ समरथ बिया कि ओम्मे कहल–सुनल आ लिखल बात आपन एगो 'तेवर' आ 'वजन' राखेला। भाषा का प्रयोग में मौलिकता रही त 'विषय–वस्तु' अपना आपे वजनदार आ असरदार हो जाई। भोजपुरी में नया आ मौलिक लिखे के कोशिश जारी बा आ बहुत कुछ लिखइलो बा। जरूरत बा ओकरा के रेघरियावे आ ओकरा पर चर्चा करे के। चर्चा अइसन जेसे रचनाकार के 'दिशा', आ 'दीठि' मिलो, अउर अच्छा आ मिसाल लायक लिखला के प्रेरणा मिलो। ••

अशोक द्विवेदी

कहनी - अनकहनी

अशोक द्विवेदी

(एक)

दउर - दउर थाकल जिनगानी
केतना आगि बुतावे पानी।

बरिसन से सपना, सपने बा
छछनत बचपन, बूढ़ जवानी ।

कबहूँ कबहूँ क्षुधा जुड़ाले
जहिया सबहर जरे चुहानी ।

पुरल न सपना, साध बुताइल
मन बउराह करे नादानी ।

खन अझुराईं खन सझुराईं
जस के तस बा अकथ कहानी ।

'देसिल बयना' पिछड़ल जुग से
अँगरेजी बिहँसे रजधानी !

पूत-धिया सब अपना नगरी
उचटल बखरी छूँछ पलानी ।

• ''देसिल बयना''-देसी बोली/मातृभाषा ।

(दू)

सुघर पाँव बिहँसे चिकनाई ।
बिछिले गोड़ त कहवाँ जाई ।

जेतना भितरी ओतने बहरी
बिछिली बा, दुनियाँ बिछिलाई।

परया पीर कहाँ ऊ जानी -
जेकरे पाँव न फटल बिवाई ।

काँच घाव, हरकल मन अइसे
जस पलकन से दूर उँघाई ।

हमहन के बिधि उलुटे रचलन
खटत-खटत हो जाय खराई ।

जतिगँव के हदरा हुदुरी बा
मुखिया काटसु रोज मलाई ।

कुछ मकान कुछ खोनल गड़ही
रहल कहाँ गोंयड़ा बिरवाई ।

दुनियाँ सिकुरल बस अपने में
सभे सेर बा, सभे सवाई ।

ना जाने कब ऊ दिन आई
जहिया सबका न्याय भेंटाई !

(तीन)

नेह छोह रस-पागल बोली ।
उड़ल गाँव कऽ हँसी ठिठोली ।

घर- घर मंगल बाँटे वाली
कहाँ गइल चिरइन कऽ टोली ।

दइब क लीला - दीठि निराली
दुख - सुख खेलें आँखमिचोली ।

सुधियन में अजिया उभरेली
जतने मयगर ओतने भोली ।

आपन - आपन महता बाटे
का माटी, का चन्नन - रोली ।

नेह क दरिया, ऊहे पँवरी -
जे हियरा के बान्हन खोली ।

हिलल पात, पीपर मन डोलल
पुरुआ रुकल त पछुआ डोली ।

आपन - आन न चीन्ही रस्ता
जे जाई, ओकरे सँग हो ली ।

(चार)

अँगना बोवे नेह/उचरि के सगुन कढ़ावे !
पूछे सबकर क्षेम चिरइया
फिरि - फिरि आवे !!

चैन कहाँ घर भितरी/सब भोरहरिये जागे
लइका बूढ़ सेयान सभे/अफनाइल भागे
घरनी के सौ काम
कहाँ, केके निपटावे !

सोचल समझल काम/फजिरहीं निपटावे के
खेत - बधार बगइचा/सगरी घोरियावे के
करम करे इनसान त
फेंड़वो चँवर डोलावे !

दुपहरिया खर होय त/कमवों नाहीं सँपरे
लूह झँउसि दे देह/जेठ के गरमी पसरे
गइया जोहे छाँह
जहाँ बइठे, पगुरावे !

पूछे सबकर क्षेम/चिरइया फिरि फिरि आवे !!

(पाँच)

कुहू - कुहू बोलेले/फेड़ पर कोइलिया!

मन में कुछ, बाहर कुछ
अन्तर में खोट बा
बड़ उड़ान खातिर ई
पाँखि बहुत छोट बा
उड़े न दी तोहके ई/गरे कऽ हँसुलिया !

दहकि दहकि सुरुख बनल
फूल के ललाई
अकुताइल मन- पंछी
कहाँ जा छँहाई
तीत - मीठ लागेले/नीम के निबुलिया !

हँसी - ठिठोली सगरे
खा गइल जरतपन
रूप -रंग रौनक सब
ले उड़ल चुहेड़पन
खटतूरस लागेले/नेह के अमुलिया !

कुहू - कुहू बोलेले/फेंड़ पर कोइलिया !!

••